# अर्देवः हें ग्रांशः सुवः श्रीः श्रांत्य उतः श्रूटः श्रीतः श्रींवः श्रीः

नेरास्त्रेनाभ्रम्यश्यमुत्रारीः स्ट्रित्र

न्त्यः अर्केशन्त्रीत्शनक्ष्र्नायते द्वायन्त्र



यक्तिः क्रिंगशः क्षेत्रः वित्यः क्रिंशः वित्यः क्रिंतः यो वित्रः वित्यः वित्यः

बुर्श्वेग वग्न व्यवस्य हे सेट। इये श्वेग इट। अर्व र्सेग अहंस रेस या David ग्रास्टेंस व्येवा।

ह्रेंश वार्ती रवाज मेज रवर अर्थ व बंदेश व रट विट हें है।

मूच ग्रान् र स्थ्य अक्टा यहस्य न्युन्स न्यु केसा

१००६ व्यंते ह्या १ यर यर माले १ यं पहुंचाय है। के ती तायर बेटल १ यं पहुंचा

Copyright © 2004 VVI All rights reserved. No portion of this re-edited book may be reproduced without permission

First edition 2004

073408

Publication data

Accession No.

Shan rakshita Library

ISBN 81-89017-05-5 Tibetan Institute, Sarnath

Title mngon rtogs rgyan gyi sa bcad snang byed sgi on me dang skabs brgyad kyi stong thun dang dbu ma chos dbyings bstod pa rnam bshad (The Illuminating Lamp Topics from the Ornament of Realization and other works)

Author Rangjung Dorje

## भुष्व'म<u>ई</u>'मैठु'द्ये'अईँद्र'षटा

#### Vajra Vidya Institute Library

Khajuhee PO Sarnath, Varanasi, UP, India 221007

Phone: 00-91-542-2595744, 2595747, 2595748

Fax: 00-91-542-2595746

Email vajravidya@yahoo com

Printed and bound in India by Gopsons Papers Ltd., Noida

#### THE : (ANIMAPA

रि जमान्यना स्वा सम्बा के जूरल वहूव. रेवी यद यनुश्च बोधुव शावर. **J** क्रेब्राखः दशुः देवः क्रेंतेः ह्याब्यायञ्जेद नृतः अर्ह्नः यञ्चरः वीः येवाब्यः श्रुन् यव्यः केः यनः वेरः चरिः र्वार्डाचितुःगासुरःस्यान्चेःपासुद् । मरः रे लेखागास्यः तु नसःचहेखाय वर्दे केनः चर्केर बोरक्ष.कव. मुं) कूँरक्ष.पर्ट्र र.बोबर.जूतु रिक्ष.वक्ष भ थेभक्ष.तपु. शर्र. चैंर.बोईबो. लबा बी खूला सबर में राजे राजे वा रहें वा रहा । विरायर राजा वर्षी अर्थे वा नाव सक्ती यदः अनिशः ग्रीयः मूरः अन्तर्गानी विश्वरः रच मुः कुषः अवः भूतः रचवः मूर्व ग्रीशः श्रीवा व वीय. वीट. क्रंस. हं था. सेवा. वहुंब. रेट । हो हं था. रेट. होवा हो. ह्यूं. वंशा तव चरेतु. वहीर निवसामित यदायमेव.त सुर म्.कुत दस हूव.लिट.हूनेबर.मी.कूस म्ला तकर थेव.सूत्रा पश्चिमान्ती वोष्ट्रं वोद्ध्यं वोद्ध्यं विद्ध्यायदेवोबाक्षाः वर्ष्णे व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं विद्ध्यायदेवोबाक्षाः वर्षे व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं विद्ध्यायदेवोबाक्षाः वर्षे विद्ध्यायदेवोबाक्षाः वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे

वरावा वर्षा वर्षा रामकुरामहामित्रामित्रामित्राम् वर्षाते ह्वा ११ द्वा

हि.स्. ४००४ हि.श्र. १४ छ्रह्म ४४ जी

अ। देव ग्वन न्या या या या ये द : मु गु वे : हे ग नर.रेश.ज्यायानरश्या है हैं र है दे दे दे न। तम्वान्यतः तस्वम्यः देनः वेगम्यः मन्दः देन मुतः सर्देन। पश्चात्रक्षात्रेरस्र देरार्ष्य स्टायक्षेवायावाया । देर'वदैर'न्नव'व्ह्र वर्षे वर्षे दे दे दे दे । यहर.श्रेट.र्टे.श्रर.वग्री.वद्य.तर.वर्त्रेवा.ग्रेश । लूटमासी. श्री वा. वह माही . श्री दे . वी दे सा हूं वी सा व के से । षाळे व क्विं वदि र प्युव दिस वाद वारण दर। । नर्षेष.८हृष.स्वाया.श्रद्येष.चनस.न्द्रेष.स्वाया.न्द्रेष.प्रयाचे पर्वथ ततु प्रट. दूष पश्चित वीस्या भेशक पष्टी स तत्र जा । पक्षेत्र.ज.८८.गीय.क्ष्रस.श्रमीय.तट्र.८चेत्र.तक्ष्री यम्रवावि से पर् की प्रमण्याय सम्मा चेश. ख. त्युं देव के दिन्। दर्भे दर्शी : ख. युं : इस श. शें : ख वा श चर्षर चर्षेत्र चर्द्वर्ये हे बे बातव निर्देश में देश हर के बार है का की निर्देश ब्रु:८८:। व्रे:चन:पगद:पक्रुर:ग्रु:धन:क:८गॅक:२वस:पर:श्लुक:८८:लु:५८:८: ૄ તું.ત<u>ર્નુ.પક્</u>રે. તુવાર્સુષ્ટ જુવાના તરુટે. લાજુવા નાંત્રીજા મેંદળ ક્રેય.તટું. ત્વું પ્રસ્તું તે તું.

हूट.चर्रंथ.टह्य.के.अक्टूब.च्यात.ट्यी



#### VENERABLE THRANGU RINPOCHE

## 藝可四美了

धीसन्तरु सिवानी सीकारी नक्षेत्रा। जिस्सूचीया नर्ग्नेर न्तरु ज्यान स्थानि इस्मर्ग्नेज नर्ग्नेर न्तरु ज्यान सिवा इस्मर्ग्नेज नर्ग्नेर न्तरि ज्यान सिवा इस्मर्गेज नर्गेर न्तरि ज्यान सिवानिस्थानिस्था

पर्विनाबादार्वा त्यात्राज्ञीरः। वित्वार्व क्रिय् पृत्वा विद्या स्वार्व प्रविनाबाद्य विवाद्य प्रविनावाद्य विवाद्य स्वार्व प्रविनावाद्य प्रविनावाद्य स्वार्व स्वार्व स्वार्व प्रविनावाद्य स्वार्व स्व

सु वेवस वा हे व इसस से त्रस वर दवे क्रुत होवा वर्व केंद्र दर। यद सुन दये भैव मु आर्वे नाय के यामन । विंदा यहार दर हराहा योद नावर अविवा न्याय वर्षे म की क्विय हेव ने उंस सेन यर ह्यें ब सेन नु यल्या व क्रू श्वीब भड़ेश व मंत्रश ग्रीश मेंचश चर्द में स्व स्वा देव देव विव संव स्वा स्व केन। स्व वह वेडू नये अर्देन मदायीय सुराय सुव लुख नद लु तकर यलेवा न त्यान्यत्य मुल न्यर ग्रा च ग्राय व र वृद्धे हे रासहन यदे न्यु स क्रिय रिवीट्य पर्केर पर देश पन्र रत। अर्दे हेंग्य क्रिय की या पन्र सूर बुेन क्क्रेंब के गलुद नदायक य नदा। नेर धुव श्रम्य यक्किन शे क्रेंद बुव नद यक्षायदे म्बुरादि केर्। भुक्षायहं वेर् द्वे अर्देर्पय क्ष धुम द्वे देव न्यास्य १००० वसाय सुरावेदबान्द र्येर सुर पश्चित वात्राय न्या ने श्रम्यश्नियः हत्यश्चेत वर्षात्राष्ट्रराय के रेट न्द। अनुत र्वेष अहं शरेश य ग्राम् केंबारखेल लाक्ष्मेब च वसब कर् ग्री खुर बु तर्गिव गवराय ल क्षेर वर्गायावस्य विषय हे के लेस ले के रहा। सार्यरसाय दिया रहा माञ्चितास अपन्य द्वायन ग्रीम न्ये करदेन देश में न वस्त वस्त वस्त वस्त स्वाप नद्रन्वन् नुष्य प्रदर्भेद्र द्वार् विश्वायस्य क्षेत्रानास्य। नाववर्भेद त्वक् र्सेद क्रिंग ग्राम्य। विदेश र्ने व र् भावमायर्व यात्रम व में प्रम में रम यदे रम स्वाप न्शु धेश र्ने द निकेश सूत ही स श्रुव परिवा स दिन सिंद परिवाद र दिन परिवाद परिवा लु-न्यायवनः श्रीव अव्याद या स्वाया श्री स्वाक्त-न्दा वें र त्वाय हुटाय वससन्द्राम्बर्यरेत्वर में इस वर्षेत्र चनावःचञ्चचःग्रुटःस्वाःचं रःक्वेयःगवदःचनावःनेव वा

वि.क्वी.श्रीकाश्रीट.तद्या

## तर.श्रेष.धर्यायता.यर्थे।

मीन्नी क्रियाल्य प्रमान की मीन्य मी

मुहाराई ते दुन अहँ नियम् दुन कि १००० हु र केंब १९ त्य

## र्गरक्र

अर्देवर्हेग्बाकुवरग्रीकामठन्षूटग्रीन्र्बेवर्यमानुदर्द		
श्रूपश्रद्धां इस सम्बेदा	·	1
শ্বনধ্য বাধ্য প্রমান্ত্রী		25
भ्रम्यसम्बद्धाः या गर्वः मेबा	•	35
भ्रम्यश्रम् विस् हेर्गश्रह्येरःय।		41
भ्रम् य य हे बेंदि ह्यू र य		59
भ्रम्य दुग्य अवर ग्रीश क्वें र म्	•	72
श्रम्य मत्त्राम। श्रम् केषा स्रदे ह्ये मा		73
भूवस वकुर या विश्वसः स्केषः भू।		.75
ঀ৾৴য়ৢঀয়য়য়য়য়ৢঢ়য়ৣ৽য়ৄ৾ঢ়য়ঀ		89
म्बिन्स्	•	.90
यसःनेबा .		94
इसम्बह्धेव। .		96
सुत्पः अद्वितः ग्राह्मु श्रु श्रुः ह्युः द्वा		.101
· · · ·		.102
अद्वित्राम्बुअःद्वेःच्याःकृर्देशःवर्देतःय।		
वनशर्बे रामानि		.107

क्रेंब श्रु देंब चजुर व		114
र्देश यें चकुर् ग्रे श अळंशश		115
इय:यद्विव:ग्री:कॅब पद्व		119
এম ন্ব শু ক্রম অন্ত শৃতিশ		122
ग्वि:नेच ग्री केंच न्श्		127
इस हैं महा हुँ र पर केंब पहु महिबा		130
हे संदे केंग यत्व।		134
মধ্য: শ্ৰীৰা নাই ক্ৰিৰা নাই নাৰিমা		138
न्नुन् चैग् सदे केंब पदी		142
क्रिंशः सुदिः सर्वत केंद्रा		144
क्रॅबन्द्रीदबन्दर्भृद्ग्यये:रुन्य	•	.147
<u> न्तुःसर्केशन्विदश्यकें</u> न्यदेःह्रस्ययरयम्		157
ग्वस्नभूपसम्बद्धाः हु क्रेंसागुः न्वुनस है सूरम्बस पार्स्स प	া.দাখা	
बेसब उव मी गवब ब्रुवबाव है क्षर गवब कुंव व गविबाही		
१ दें चें अर्देर पश्च या		160
१ न्वे न्दःश्वर हे शुक्षायर वक्नावर्षा	•	176
ग्रेशयःकुश्यम् ५ द्ये द्रम् श्रुरः हे यक्ष्र्यः यः यः यत्र्वः हे।		

ŋ	अर मु द्वेश केंश मु द्वित्य के श्रूर व द्र श्रूर वर्द कुंवा	176
3	सुसः वर मी सर होते द्येश बोसश उद दर। यस दर।	
	श्रम् मुश्रायायो मेश श्रम् चितः देश च चश्रुव च।	177
3	श्चे. प्रचीची रेट चिता. खुट श प्रचीर यह रूपी	180
a	রমম কর ব্র মহেমান্ত্রুম গ্রী বারমা শ্লবমান্ত্র গ্রিব ঘর	
	बेद्यम ब्रिंम सुरिःद्येश यन्द्र या	182
4	विस्तर देवें देवें वासे र ग्री द्येश कर्द या	184
b	तन्त्रासुत्राची द्वेषाळेंबाची श्रु श्रूटःचरि द्वा	184
ป	हु निद्रमी द्येश हु अध्य पर्य हु बय परिकेंश	186
	त.जश तपु चिष्यं श्रेचका.चर्षेषे त.ज.चिश्वेश है।	
1	ट्रै'स ह्युट्टच'त्रवर्'पदि हुंता देसाय द्रारा पडवाय	
	हे भूर ने ब पर पुष्प	189
3	नर्बे्स् अप्तदे स्तुवा	217
3	र्वेच परि रेश परि॥	245
<b>55'</b> Ž	ત્ય'ગ્ ક્ષુઢા'સ્ટ્રે	
	क्रॅबाश्चरी विस्रवादे हिंद देवाबा खुः तबद परेते हुंवा	189
	दे केदाया श्रीयाया यस्याय विष्टुराद्ये देव श्रीय प्रमुदाया .	193
শাস্থ্য	च-ब्रुद-ग्रेव-ग्री-र्स्य-अर्द्र-च-ब्रुव-च-व यु-ब्रे	
		195

### xii ५७४ हम

3	क्रेंद्र य तुन् गुनं व य य व व व व	197
3	ले ने बागु बारी रहें द यदे रहता	198
C	श्चर गहेव ग्रीस हें र परि र्ख्या	199
4	दे कियान यमिर वर्षी।	202
<u> মূ</u> ন ব্	व दे ले र कुष यर यथर य य य व कु र दे।	
1)	रह वा ग्रम गुह स सर्वेद या	203
3	ब्रुवाचुन्यमूत्य। .	203
	षे:वेशर्हेग्शयते:र्स्या	.204
C	गुद्र यहग्रा गुःर्देव।	206
	ग्वन र्यर्गेर्देन।	207
b	हेब डेट वर्षेण पर वश्चर पा	.209
മ	लूर्श श्रे.चीय.तपु.र्थ्या	212
<b>⊀</b>	देव्यमानी देव वसु वर्षे॥	.215
गुकेशः	य पर्सेस पर्दः सुवा प्रमुदः य वा गुरुष है।	
9	नुसम्भः सुन्तुरः चतिः सुन्।	217
4	मुक्ते न्त्रीं व सर्वे मा सूद्र प्रति स्वता प्रति ।	232
٦ <u>٢</u> ٠٤٠	वेशकाक्षःम्बद्धान्यदःक्ष्यायायतुवःहे।	
1	क्वॅंस्यायान्द्रेदाद्वाद्वाद्वस्याच्व्रंसया	217
	धैर्प्रकेषायामहेत्वयाम्ब्रीं अर्तुयामहेत्या	

		रुगर क्रम	xiii
3	रद ग्राम्य मूर्ट दुः मूर्याच दादे सुत्य दी		226
	व्यक्त वर्षानी दें वे बेशक हेंग्बास हेंग्बास ह्रा	ধ্ব-গ্ৰ	227
	ग्रम्भ ग्रे भुदे र्देव यन्दरय		229
Ŀ	वुदःस्त्य ग्रीःर्देन यम् द्या		230
ป	अर्देवै:र्देव:चड्डव:च। .	•	231
5×××××	['स्'त'पद्देव'वबाद्दे स्ट्र-'पर्क्कें अर्द्ध्य यास्'हे		
	श्रीमान्दरमाञ्चमाश्रास्य यहेत्र त्रशहेंमाश्रास्य राष्ट्रायाः	বন্ধুর ঘা	217
4	श्चु'यद'यक्षृद'यदे'द्वेर	•••	.219
3	र्दे त्यायहेव यायदा		.220
e	र्रेष्यद्वस्त्रवि	. ,	.220
ų	देग्-वु-ष्पद्-प्रकृत-पर्व-धु-र	•	221
শ্রীশ্বাহা	৽ <del>ঀ</del> ৢৗৢ৾৾৾য়৽ৢৢ৾ঀৗ৾৾ঀৼ৶ঌৣ৾য়৽ঢ়ঀৢঢ়৽ঢ়	य वृःह्रे।	
9	अर्देरावस्वाया		.232
3	শ্বদ্ধান্ত্র্বার মার্স্রাইন ঘরি স্কৃত্য		.233
3	<b>अर्हे</b> दःचदिःह्यं।		.234
e.	ପଶ୍ୟ ଶ୍ରିଷ ଅନ୍ତିପ ପର୍ଷ ଦେଖିବ ଏହା		.240
ų	चुरःकुवःकेःसेरः सेत्र्यतेः र्वेत्रः चत्रत्याः । । । ।		.243
गश्चित्राःस	ાત્મસ <sup>્</sup> ક્ર્વન <sup>ક્રું</sup> વાતા સંક્રો		
•	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		.245

#### xiv ५७१२ कण

3	व्यवस्य विवेष स्वी	246
3	बि'यदि'ग्नेव यें।	248
6	पिश्रमासुन्न यम पु यदे केंबा	251
ų	हुव है क्षेत्र मुख चंदे रेश चंदि।।	261
चबे य	विश्वश्च चित्र चित्र चक्षेत्र त ज बब्धिशःक्षे।	
9	पिस्रम मुस मुेर्'गु केंब र्ब पन्दर प	251
3	ने त्या मुद्र सुप वर्गुय य	255
3	मैज पश्राचर्षेट यर उर्चैर वर्ष्।	261
র্জ.ঘ.র	हैंग.ई केंत्र.मेंब तपु दुश त.ज.चखे हैं।	
9	র্মিরাঘর স্থ্রীন্ ঘরামার্স্রন স্কৃত্য	261
3	शत्यालुमाश यार्विदः तु मुशायदे द्यो।	262
3	अधर ध्रुण धर द्ये अर्देर प्रश्नुव। .	263
Œ	कुष यम् ५ र्ने॥	264
ସର୍ଜ୍ୱ'ସ	मुबायमायम् यायायह ग्रेगा हो।	
9	र्वेबायबार्बेट्स पर्दाबा	264
3	नवारु निवास्या	.264
3	्रीयमेन्य	266
a	र्वेर्चिर्य	267
	र्वेर् वर्षे च	.268

<b>५ ग. ४ क</b> ण्	xv
८ बुद्दग्वा	270
य अर्देव र शुर ध	271
र देद र् बॅद व	272
<ul><li>हिं श्री व्या</li></ul>	273
<b>१० ঐগ্</b> ৰ ঘৰ্ত্ত 'ৰ্মু ৰ্মুৰা	275
११ केंब শ্ৰী-ষ্ট্ৰৰ অপ্ৰ-অৰ্থা	276
चित्य दें साधस्रास्त्र न्म च्याचित्र हें सांसु याचर्हेन् य याचित्र हें।	
१ म्वस् शुर परे केंस् भुरदानी दें तें।	280
୧ ସକ୍ଷୟଂଶ୍ <del>ରି</del> କଂଶ୍ୟିତ୍ରପ ଦା୍	284
१ हेंग्य परी:धेंव फ्रा	286
<ul><li>दब्दीवः त्यकाचन्द्रन्त्रां</li></ul>	297
ग्रुमःयः हैं ग्रायः सद्य द्वागः यदे व्यं हतः यत् व यः यदे है।	
१ बेसबान्य पदि ह्या	286
१ धे:वेशग्री:सुशर्हेणवया	287
१ न्यायियाँ व म्वा	288
< र्वेच यदे : वित्र क्वें क्वें वित्र क्वें क्व	291
चबुन्यःयद्वेद्यःयश्चन्त्रन्यःयःयःकृषु	
१ दब्विन तमानी नहें ते मुला मुमान्यर यमुराय हुंदाय।	.297
१ वर्षिरः चात्रः वर्षेत्रः व्यक्षः सर्द्रः र्सुवा	299

#### xvi ५ग्र क्व

द विपञ्चमन्त्रीयच	30
७ सुन्द त्यन्य यदे द्व।	309
५ तपर प अर पति वसेत वस्त में रेंत पसूत पर्वे।	303

# ঞ। । মার্হর : धरः हें बाबा पारी : क्रुवः श्रीः । বাহৰ : খ্রামান ক্রির : মান্ত্র : ব্রামান ক্রির : শ্রী । বাহৰ : যান ক্রিয়া মান্ত্র : শ্রী ।

## श्रम्य प्रत्याचे व

्रक्री चिक्ट्रश्रःर्जंबं (पर्देश:प्रेश:रच:ग्री:स:ट्र्या:धिक्षेत्र:पा:पाक्षेया:पक्ष्या:पूरी

য়ৢঀ৻ড়য়ড়ৣ৾ঽ৻৸য়ৢঀ৻ঽড়৸৻ঀৄ॥ য়ৢৢঀ৻য়ৼ৻ৼৢঽ৻ৡৼ৻ঽয়ৢঀ৻ঽয়ৢৼ৻য়॥ ৻য়ঀয়৻ঀয়য়য়ৢঽ৻য়ৢঀ৻য়ৢঀ৻য়৻য়ৢঢ়৻য় য়

सद्यायम्भूषायदेः मुद्यायि । व्याप्याये विकासी । व्याप्याये । व्याप्याये । व्याप्याये । व्याप्याये । व्याप्याये ।

न्द्रः वें र्वं प्रकार्श्वेश्वयि अस्त्र दी।

मुन्नम् भूत्ति (मुन्नम्भूत्ति। आक्नेश्वयाधालायान्यम् स्वर्धः

1 भर श्वा बर में मिलर पर लुक्केम रामा में र लुका पर्दे।

स्वितातक्तात्त्रा) ब्रेशायद्री। स्वित्र यद्भावत्त्रा अदशक्षिश्च पर्द्ध शह्य त्यः स्वेशस्त्र पतः स्वास्त्र स्वित् वित्र य प्रेय यद्भावत्त्र स्वास्त्र स्वास्

यवनस्य प्रवेश मुख्य स्था मुक्य प्रवेश प्रवेश

वनः वें बाबि पार्से या इसवागुन विवादि राग्ने वादि रामें विद्या स्ट्रिंग्या स्थान स्ट्रिंग

दर्ने त्यायन प्रमाने स्थायमाने साने ना ने साने ना हेना देन सुयाय हराया ना ।

ब्राट्ट्रियाय्येष्ट्रयाया। व्याद्याय्येष्ट्रयायाः स्थायः स्थायः सुन्यः स्थायः सुन्यः स्थायः स्थायः सुन्यः स्थायः सुन्यः स्थायः सुन्यः स्थ

য়ৢ৾৽ঀ৾৽ড়ৢয়৽ঀৢয়য়য়ৼয়৻ঀৢ৽য়৾ঢ়৽য়ড়য়য়য়য় য়ৣ৽ঀ৾৽ড়ৢয়৽ঀ৾৽য়৽য়ৢয়৽৻ য়ৣ৽ঀ৾৽ড়ৢয়৽ঀ৾৽য়৽য়য়য়য়৽৻য়য়ৢয়৽

विश्वयर्गी

इस्रायाचस्रकारुन्याद्विवार्वेन्यस्या वेदार्स्या

गिर्ध य वर्षेय व दी

क्रॅब्र'यबायदी'इसबायम्द्रायाण्या । मन्द्राची बार्चेद्राया या भीव हो। क्रेंब्रा क्रेंद्राया या प्रत्या हो । १ सर्दे क्रेंद्राया या प्रत्या विका क्रें।।

विश्वयायान्वींश्रय दी।

मूँ ५८ . जंब . तथा शहर . प्रधीय हिया। वेश मूर्री

चले च हेर द्वेंशही

चने म्ब्रमा मुद्दे में बाया क्ष्या। च मा इस पदे प्रोक्षा प्र क्ष्य पदे ।

यक्षेत्र तर्त्। निर्म् अर्द्र प्रकृत श्री यक्ष्य प्रमुद्र प्रकृत श्री यक्ष्य प्रमुद्र प्रकृत श्री यक्ष्य स्था यक्ष्य श्री यक्ष्य श्री यक्ष्य प्रमुद्र प्रकृत श्री यक्ष्य प्रमुद्र प्रमुद्र

नेश्चर्यायार्देयाष्ट्रीत्रायादी॥ इदेशस्यायात्रुत्राग्रीश्चर्यरात्र्यायम्हा॥ 4 अद्व ह्रीब क्रुव की ब वरु इंद के विंद भी

इसःशुद्रःसिवः केतः त्यसः वेदः केत्।। ६

इसःगुद्धतःस्वाङ्ग्वाद्याःस्वाद्याः इस्याद्याःस्वाद्याःस्वाद्याः इस्याद्याःस्वाद्याःस्वाद्याः इस्यानुःस्वाद्याःस्वाद्याः

क्ष्यं श्री क्ष्यं श्री स्थान्ति । विद्यान्ति । विद्यानि ।

स्वासान्त्रीत्यात्रात्व्यात्रस्यात्वात्ताः।
स्वारान्त्रीत्यात्रम्यात्वात्तः।।
स्वारान्त्रीत्यात्रम्यात्वेत्तः।।
स्वारान्त्रीत्रस्यात्रीः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रीत्रस्यात्रीः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रीत्रस्यात्रीः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रीत्रस्यात्रीः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रीत्रस्यात्रस्यात्वेतः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रस्यात्रस्यात्रस्यात्वेतः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रस्यात्रस्यात्वेतः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रस्यात्रस्यात्वेतः त्रान्तः।।
स्वारान्त्रस्यात्वेतः त्रान्तः।।

श्चिमायदे द्वारा गुन्या अधिवाय के देश श्वी

मानेश्वयात्मसानेशकी।

र्वेन विन्यं निर्मा से निर्म से निर्मा से निर्म से निर्मा से निर्म से निर्मा से निर्मा से निर्मा से निर्म से निर्म

चैत्रयन्द्रवेश्वेशयन्द्र॥ चर्केत्रद्रयम्बद्धयःद्रयम्बद्धयःद्राः॥ चर्केत्रद्रक्षक्षक्षःद्रद्रयम्बद्धयःद्राः॥ चर्केत्रद्रक्षक्षक्षःद्रद्या॥ चित्रयःचेत्रयःद्वाःचेत्रत्य॥ ८

बुट-८-भैद-रु-१वायः वेया। चुट-रुट-बेयक्ष्यः द्वायः यथा। चुट-रुट-बेयक्ष्यः द्वायः यथा। चुट-रुट-बेयक्ष्यः द्वायः यथा।

### विश्वभाषायां विश्वभाषी

विश्वायश्चित्रायश्चित्राव्यश्चित्।। श्चेत्राहेश्चात्वेत्वश्चेत्।। व्यश्चायश्चेत्रायश्चेत्रायश्चेत्रात्तः।। व्यश्चायश्चेत्रायश्चेत्रात्तः।। ११ 6 अर्देन हॅन्नस कुन के सपन्द सूट के न र्सेन से ।

श्री स्थान के न प्रति से स्थान स्

यवे यद्भय गुव दी

कृता है श्रें दी।

ने स्था स्वाकान्य स्वया विवास

হুগ ঘমগ্রহনগ্রীশ্বাম বী

इस्राम्बुस्राइस्राम्बुस्या वेदार्द्वा।

पर्वायः <del>श्र</del>्वार्थित्।

माडेग्नेश्वर्यद्वार्ट्यम् माडेग्नेश्वर्यद्वार्या। यस्त्रित्रियाचीश्वर्यद्वार्याः यस्त्रित्रियाचीश्वर्यद्वार्याः

यक्कित्रचळ्ळाञ्चाह्मस्यान्ते प्रत्यक्षयाची

8 अर्देव हॅन्ब क्रुव की ब पठन बूद केन बेंव थे।

र्हे के दे स्वास्त्र के स्वास्त्र का स्वास्त्र का स्वास्त्र के स्वास्त्र का स्वास्

म्लास्तर्यास्त्रस्यात्र्यं वित्तेस्य वित्तेस्य वित्तात्त्र्यं।
विस्त्रस्य स्त्रिस्य स्तिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्तिस्य स्त्रिस्य स्तिस्य स्तिस

पूर्वि। त.र्टा वर्ष्चियः तपुः रश्चिषायः तय्ञुः गुड्ये । क्रेर्-रिः च वा वर्ष्चियः पतुः ह्रः रटा ह्या द्वेरः स्थान्ति । वर्ष्चियः पतुः ह्रेवः द्रेषायः यषायः रटा वर्ष्चियः पतुः ह्रः स्थायः प्राप्तः । वर्ष्चियः पतुः ह्रेवः प्रेषायः यषायः रटा वर्ष्वे । क्षेत्रः पत्रः । वर्षेत्रः पत्रः । वर्षेतः पत्रः । वर्षेत्रः । वर्षेत्रः पत्रः । वर्षेत्रः पत्रः । वर्षेत्रः । वर्तेतः । वर्षेत्रः । वर्षेत्रः । वर्षेत्रः । वर्षेत्रः । वर्षेत्रः । व

बुराय। बायक्ष्यबार्चुःयर्व। [त्रायां बेयबायक्चेत् कुरिन्दां व्यर्दे त्रायां व्यक्ष्यवार्चे व्यर्दे वि

स्रेसस्य मुद्देश्य स्थानित स्

गढ़ेशय अर्दे दर्श्वर यदी।

ने न्दरने वे अर्दे मबेब द्या पर्वसन्दर्म् सम्बद्धः स्वस्याद्धः । १० द्वसः स्वा

म्बर्य त.स.प्रक्षत्रग्र-रेग्ने य.दी

दे'यदः श्वाम्बेरः त्रुः यः श्रे॥ गहिर-१८-५व-छेव-५वुद-गवश्यळे॥ र्हे हे रे श्रुव पने शन के व र पा धेर्प्तविवर्वे सम्मुक्तियाम्॥ १०

मुलर्ये अद्देर दर वयर्ये के। वर्षेत्र'य'वर्गेद्र'सदेखु'द्रद्वे॥ मुनह्रव सुर्च हुव द्वयम ग्रीया। इयायाने सु स माने वार्षे । ११ विषासी।

म्बेशन्याम्यस्य प्रमानम् । वश्चन्यत्रे द्वा प्रमान्यतः लिया हेवा श्रु भधिव स्वितासम्बर्धाय प्रमाशिका हिराशी पर्ह्या या श्रुव स्व विर्पयर ठव र्रायदेव पायते कुर्योद्व भेषा इस्रायर र्वाया सर्वेर नर्ज्जेयात्मन्यसम्म छिन् चरातुन्ने तर्नुन चह्नन पर्दे। ।

**न्द्रस्य प्रश्नुय प्रदेश देशे** 

श्रुपान्दा वेश्रार्थे। महिकायान्त्रीमकायदिःख्यादी।

10 अर्देव हैं गहा कुव की वायर बूद के र बेंद केंद्र

.....यदेव यस्मान्यकी। वेश्वर्से।

गशुस्य य हेव दी

बरबाक्तुबातार्सेवाबादमेंवासकेवानासुस्रा। वेबार्स्सा

यबिय से सहर हैंग्य श्रूर यदे हु ग्रुस दी

यानेवार्षेत्रासुर्यादेवायान्या॥ ११ नेवार्सि॥

कं.त.द्वेट.शु वहूबं.त श्रुव.कं थे।

श्चुवः १५ दरवे ..... वेशः र्वे॥

तुग्याष्ठ्रन्यम् उव न्दर्यम्यायते क्रुयर्देव नेश्वती

यहँव ने समी

र्षेव हव दुव दूर विश्व हैं।

यतुत्र यात्र्य यम प्राप्त या अर्थे दाय ह्ये या या या न्याय विष

"अर्बेदःलयः ५६॥

मुंबालेबान्नाकृत्-सेबायमान्॥ सेबार्स्स। सुंबालेबानुःयान्यम्बायमान्॥

यकुर्याष्ट्रर्यसर्गुर्वे यहुर्ययहेर्यस्त्री

**न्यरायीक्षणन्याक्षेत्रायीन्या।** 55'55'अर्थेट'र्थेय'र्रग्राज्यस्य रेग्रा यर:कर्षविषा:यरःश्चेशःवशःर्टा। वेद:दर:वेद:बेब:देंग बेब:दर्शे। १७ यसरमाश्रुयाश्चीर् हेते यम राधुवा वर्गे। ग्रन्थायी:कग्रायर्डेस:सर्वेद:य:बी। ૹ૾ૼૹઌૡ૽ૺૡૹૻૻૹ૽ૼ૱ૹૢ૱૽૽ૢૺૺઽૢૢૢૢૢૢ यशेरुप्रयो के कुर्ये। १५ वेश थे।

बाबायाय देश पदीर ह्वीं र त्यायायायात्र हो। देश पदीर यहूं र यहां व यन्ता र्देन् कुन्द्रभेषाबाह्मभ। हे स्रिदी वर्षेद्रन्यदी ह्रिकासह्याची र्श्वयाक्ष इस्राक्षेत्रचेद्रास्ट्राम्बुस्यम्बुस्य व्यक्तिम् सर्दे मुक्यमे व्यक्त ह्रेंग'न्द्र। यहेंबहेंग्नचक्रुंबच्दरान्द्र। व्यद्ययहेंबख्य ग्निययचेंद्र। निर वें देश वरी दार्थे राय है व या दे।

> न्रीम्बयान्द्रते द्वयायन्द्रा। शुः दरार्षेदश्रश्रादहेव पाणेशा विरःक्वाः श्रेशवान्यवः श्रुवायः वि॥ र्देन संग्रायन्य नेन है यनेन है। १५

अर्देव हैं ग्रथ क्रुव ही य यस्त सूद ही द क्रेंव थे।

12

द्यार्ह्रण्यविद्याः स्वायहेवः या। व्रदः द्रायदे द्रायहेवः या द्रम्यम्। व्रदः द्रायदे द्रायहेवः या। व्रद्यायादे व्यवस्थाः स्वायहेवः या।

म्बेश म र्रेन् ग्री नुसम्बाह्य के वही महुम्मा खुरा है।

द्रश्चेष्यायाः श्चेष्ठ्यायः श्चेष्यायाः विष्यायः श्वेष्ठ्यायः श्वेष्ठ्यः यद्येष्ठः विष्यः विषयः विषयः

म्बियासःस्यासः तर्रे त्याँ द्वात्यसः च्याः द्वाः। म्बियासः स्यासः तर्रे त्याँ द्वात्यसः च्याः द्वाः।

ग्रुकाया है सेंदि न्रीग्याह्म सह्या सुरादिन से ग्रुका है।

मञ्जमशर्भेगश्चरीःम्वश्चरित्नादी॥ देखेर्द्धर्भःस्टाचित्रस्यद्याः

दे:द्रमायिक्यामी:स्ट्रायविद्यायिक्या। दे:श्री:ह्रमार्सेम्ब्रायस्थी:माद्रस्था। दे'क्स्य दे'धे'र्दे दें श्र क्र्रेंट्या दे'द्रवा'विवा'वी'रूट चबिव'विवे विवा १०

र्केश्वस्थ्यस्थि। यहेव्याद्यं विद्याद्यं वि

चित्रयाचर्केन् परि न्स्रीम्बाइसासुरायदीराके मासुसादी।

मञ्जमश्रक्षमश्रद्धाः केत्र स्त्रेत्। दे स्त्रेत् प्यः केत्र द्वः द्वः द्वः द्वः स्त्रेत्।। दे त्वाः क्रेडः स्त्राः स्त्रेत्।। द्वाः त्राः दे त्वाः स्त्रेत्। द्वः

दे.ला. अक्ष्य अन्य अन्य से व्यवस्था । स्था अक्ष्य अन्य अन्य स्था ।

**कृ**त्यःक्रॅश्रासक्रिंग् वी न्हीवाश्वाह्मसासुद्रात्वेदःके वाश्वसादी।

हैरःवहेवःदेःभैःचेदःयःहैद्।। स्यरःक्रेंबःयःद्रःक्रेंबःयःबद्।। ११

ग्रह्मअर्थे यत्र स्त्र र्दे में प्रदेश।

14 अर्देव हैंगब कुव के बचकर बूद के र बेंद बेंद भी

हेटः यहेव 'क्रमः यस्त्री हेंग् 'या। दे 'सूर 'देख' यसे दे दक्क सम्बद्धा हो।

हुद:न्दः द्वीद:न्दः होत्रः चीत्रा १५ वेशः स्या

तुन य अर्ने मुका गुक्ष ना बुदा हैं ना यह व रया है।

र्हें दशद्दास्त्र स्थान्य है। ह्या विश्व स्था दे दे से संस्थान स्थान स्थान

यत्वायायर्ने मुख ग्रीशयदेव हेंगायस्व यात्री

स्यान्दायहण्यायते हेत् उत् श्रीया। यहेत् ययदाह्मायाण्येत्रायहेत्।। स्टान्यदायन्याः स्वायाद्यात्रायहेत्।।

सिट.सूर्यायान्त्रेय.जयान्यायुवानुगा ४० खेळा.सूरी

यमुन् यः विद्याय देवाय स्वायः विद्याय स्वायः विद्यायः विद्य

देशी से सह्य हिंग्या के स्थाप के स्थाप

र्हेग्रबायाधीते केंब्रानुग्नान्दा। गुरुवार्ये प्रत्वे केंब्रानुग्नाबाय प्रता। प्रेप्त्वाक्षेत्राक्ष्यक्ष्य प्रता। भेषायमञ्जीदान्त्रे साम्बद्धाय प्रता। १५

ब्रॅ्चाय्यते ब्रॅंच्यं के व्याप्त विकासी वि

र्केशनी: प्रीप्यायाप्ती स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थापता स्था

**क्रयायञ्चुयायदे न् अग्राययायञ्जाने गा**दी।

न्द्रीम्बादार्केबाक्त्यबाक्यबाक्तन्ते।। ने:प्यटःन्यो:त्यःबेयाबाद्यःप्येक्।। तह्यमःहेव:प्यःप्ये:हेयाबाद्यःप्येक्।। मटःन्याःतह्याःहेव:तन्बादर्नेन:न्टः॥ ७१

बन्दान्यक्षःबन्दान्यक्षेत्रःक्ष्यःद्वः॥ नदःदन्द्वःक्षःक्षःक्षःक्षःक्षःक्षःक्षः क्षेत्रःक्षःक्ष्यःक्षःक्षःक्षःक्षः क्षेत्रःकष्ट्रकःक्षेत्रःक्षेत्रःकष्ट्वः॥ नदःदन्द्वःक्षितःक्षेत्रःक्षेत्रःक्षेत्रः॥

नुग याम्बुनायते केन्नुग्यादी

क्षेत्रश्चर्त्वः त्युवः सर्केषः वृत्तः व्या स्रम्यः नम्प्रसः स्वाधः स्व

पर्वेद्रायश्चित्रात्तायश्चित्र्यं। निर्द्धाय्यात्र्यं क्ष्यायः विद्यायः वि

देन्याः इत्रिं राष्ट्रीयः वाया

इयायाद्वारुपक्षयायाधिया। में करे ह्यूय या गर धेव दे॥ दुगः र्वतः दुगः गैरा है प्यवितः प्यत्।। ७० डेशः र्वे॥ ग्रेश्यायायह्गायाद्वयायाद्यादी

> यस्रअःगान्वःगाञ्चगार्यासेनःश्चेतःसँगार्यः नः।। यम्भात्राच्यायाः स्वाधाः स्टा न्रीम्बादासेन्द्रस्थादान्द्रभ वर्षेत्रःग्रह्मअञ्चयःयत्रःद्गायःद्रः॥ ७५

केन्द्रगुन्द्रयादेवः विष्युवा वह्रमायते श्रुपाय श्रेमा केवा यो यह्रवाश्वरात्रात्र्वरायम् विश्वरायम् विश्वराद्या

विश्वभाराक्ष्यकाराक्ष्यकाराक्ष्यकारा

यहे दर्भेव य स्वास्य द्वा विगवसाञ्चना अर्वेदायस्यायाद्दा। ब्रद्भुत्यवेषायदेष्यम्याग्द्रप्रा वयश्यायावशयाग्रद्येव द्रा ८०

धे:वेशन्दर्वे पर्शेन्वस्य न्दा। यम्प्रान्द्रम् अत्रान्द्रम् गहेव दं र्सेग्य ग्री श्रुव पर थी। द्रभायात्रवेदायराचेदायराच्या ८५ वेदाङ्गा

चवि'च'र्रा हे हैंग्रा हे हाग्रु चन्द्र चारा चहु हो। राद्र चेंदि र्षेट्र चक्रुन्दा स्यो चक्रुन्दा चुनायथे चक्रुन्दा चतुन्यये के.स श्चर्यात्र । श्चर्य प्रा वकुर्यंत्र वकुर्। प्राप्ते वकुराप्ता पशुःय पश्चन पर्दे॥

न्दर्य अन्दर्य देश विद्या श्रुद्ध वा विद्य

लूटशक्षिहिट प्राप्तिशाचक्रिली शक्षेत्रप्रस्थित्वर्ष्यात्युरित्रि वस्रअः दरम्बदः पर्वः दर्देशः वेदः दरा। बेयबाउदाइयबाताबेयबायवयावेटा। ८०

गर्नेटर्ट्यमेशमानेवरम्भेवर्यर्ट् न्यकेंशन्येग्शयकेंव्ययन्ता हगानुःदेशावबुदाशेशशानुंदादा। बरबाक्कुबाञ्चरायर्देन्'न्वायःच'न्दः।। ५० र्केशक्ष्र्वित्यः प्रस्पादेव्यः स्थि। स्रिना वित्यस्य स्थिवः ययः स्ट्रिन्।। स्दिन्द्र ना स्टर्भावेवः स्थितः स्थिन स्था। स्यास्य क्षुं क्ष्यां स्थानित्यः स्था। स्यास्य क्ष्यां क्ष्यां स्थानित्यः स्था।

गुरुष यदे यक्कुन्दी।

द्ध्यःविस्रसःवस्यःगर्वे द्राव्ये द्याः म्यःहःद्रगतःद्रम्भ्रद्भयः व्ये ह्याः म्यःक्षेत्रः स्राधः त्यः स्रुक्षः व्याः म्युक्षः स्रुक्षः स्याः स्रुक्षः व्याः स्रुक्षः स्याः स्रुक्षः स्याः स्रुक्षः स्याः स्रुक्षः स्याः स्रुक्षः स्

बिश्वयःतपुःक्ःद्री

र्देश्चियार्षेद्रिक्षम् । र्ह्मेश्चेद्रायद्याक्षेद्रद्वसम्। वेद्यर्से। विद्यार्थित्वस्त्री वग्रयाव्यावद्यादर्देन्सुदःर्क्षेग्-वेयन्द्रा। ब्रुट्बायायदान्याः व्याप्तेवानकेवान्दा। ५० वश्चवायार्वेदशःश्चार्श्वेगिर्देदः दृदः॥ वर्नेन्यास्यस्यार्श्वेन्यान्ना। शुःदवः वद्बः दृदः यद्वाः गुवः गर्हेदः॥ श्चे त्यायान्याकृष्या सेन्। ५५ डेबार्से।

कं.तपु.पश्चे

वर्देशन्दाष्ट्रियायाव्यवेदायान्दा। वर् वहरम् शुरायवेषाव्यार्मित्री। यन्गायक्रेन्याववायायक्रमयान्दा। श्रेन्वेदेख्याचीत्वयाच्युन्ता। ५५

र्देअ:घश्रावेदश:५८:ध्रेव:रे:येंग्। यञ्चर्ये वदि वे द्वयाश्वरकाव॥ श्रभ्यादीयार्द्या प्रश्रेषा प्रश्रेषा

त्वायदे यह ग्रेशकी

यञ्चरस्य से लुस यदें वाय गुन्। यहराषदा से द्वाय से द्वाय प्राप्त । द्वाय पर र्श्वेदाय से र्श्वेदाय स्था संदे द्वाय पर द्वाय स्था

वतुब्रविश्वदानुः वृःसुः वृ।

प्तर्वाः प्रश्लेश्वर्यः स्वाः प्रदाशि दिवः स्वाः प्रदाशि स्वर्यः स्वरं स्वरं

वगशगवशयर्देन सुद्र र्केंग नेशन्ता। श्चरबायायरान्याः वृंधायक्षेत्रान्तर्भेतान्य पश्चप्यार्थिदश्रश्चरश्चे महिंद द्दा। वर्रेर्प्य इस्रम्य वार्चेर्प्य प्रमा शुःदवः वद्बः ददः यदेषः गुवः गहितः॥ श्चेत्रयम्पद्भम्यस्या ५५ देशस्य

र्क.तपु.पश्ची

वर्देशन्दाष्ट्रियायावित्रायान्दा। दर्वस्य शुरायदे मन्द्रभाद्र देव यन्यायर्ह्हेन्याववायायहुरुयायान्या। श्रेन्वेदेखश्चीख्यायञ्चन्ता ५५

र्देशयमानिस्मान्यः ध्रीवः हैः वेषा त्त्रॅं प्रवाद्य के केंद्र नद्वःचॅ तदी वे क्या श्रद्धा वा। बस्यविष्यत्र्वात्र्विम्। ५० डेब्राब्री।

र्मायदे पश्चानिकानी

श्चीत्र-प्र-र्द्धलः विस्त्राचार्च्च प्रवाहर्ष्ट्व त्र व्याहर्ष्ट्य व्याहर्म्य व्याहरम्य व्याह

यञ्चरस्य से लुस्य य दें वा यः गुद्धा यहर प्यर से द्वाय से द्याय स्था द्वाय प्यर हें द्वाय से हें द्वाय स्था संदे दुवाय प्यर द्वाय से हें से से सिंग्स्य स्था

### यत्व यदे श्वर ग्रु ती

त्यश्चनश्चर्याः व्यान्यस्य स्टास्त्रम्था। स्रेथस्य त्रे गुन्तः तृत्वयायः द्रा। द्रोवः अर्केषाः यश्चर्यः द्र्याः त्रेथसः व्या। देरः सुः यः व्ये अर्देवः वेवः द्रा। ५७

ब्रेंद्रयातेद्राया हैंद्रयाद्दा। दे-दरः दग्वयायते के साय दे॥ कुं.सं.बाट.ज.इश.कर.ता। देखेबाबादी पत्तु पार्विम्। ५१ डेबार्बे।

### न्न=: १९३।

इस्राधराङ्गीयासुस्राभित्रायाद्रा व्येत्रःगशुक्षः इक्षःयमः द्याः वेदः द्रः॥ क्षेट्र हे प्रत्वे केंग्र अंतर प्रता र्केशयवयावेन:५५:४५:४४:४५:४५ ४५

श्रेश्चेुप्यप्दरपर्वेद्धप्रभादर॥ क्रेंबर्म्यवाद्यायायाचेत्राः हुर्देव॥ हेंग'य'गुव'हु'वहेंसब'य'द्र्या। वर् नेशक्ष र देवें व व्यवस्थित।

वैगावसदेशयम् सेसस्य प्रमा क्ष्मा अर्वेदाया वे अवश्रया द्वा। बेसबर्यान्यान्यावस्य वैग्राया सेन्यते खेले सन्दा ५५

कवाशयते श्राधेव वार वर्दे द यर। वैद्रम्बन्दर्त्ते अनुअरदर्गे द्रा। गुन:हः यदगमी दें वें वे॥ क्रॅ्वं य के ५ ५ ६ के इस् वकुर्यवे वकुर्दे।

> बेयबन्डव्गुवन्धेन् सेबन्धन्दान्दा। अर्देव यम भेगपग्य प्रस्ति च श्रदशःमुशःदीरःचबरःश्चैयःयःदरः॥ लूरस्यं से.चरेची. ही र.सरस्य मैस.चरेषी। एन

**न्नर्धिः नेशन्र कुलावाधी।** विटार्श्वेटाश्चर्यास्त्रमान्यान्दारा। यस्रस्यविदः श्रीन्यायेद्यान्त्या त्यक्षत्रे द्वयायायदी यमुद्दायम्द्रा। ५५ डेकार्क्स्।

न्शु पर्यः पर्यः मार्वेश्वः वै।

र्बेव प्यमन्त्राचि सवद प्यमन्दा। सःताञ्चणवायते श्रीतः वेषात्रा॥ **ब्रैं**चबया सुर्चे कृतु द्दा सरवार् वहनायस्मिन्द्रसे। ५० 24 अर्देव हेंग्य सुव से य यठ दूर से र हेंद हैंव ये।

देग्रथः दृदः सुरुः रहें त्या हित्तः ।। द्रवः त्युहः युहः सुरुः स्टिः द्रयशः दृहः ।। व्यवः त्युहः युहः सुरुः स्टिः द्रयशः दृहः ।। व्यवः तृतः सुरुः सुरुः स्टिः द्रयशः दृहः ।।

श्राचरुष्याचस्त्रवाच वी

यद्वाराधिवःयम् स्थायम् स्था वेश वेशः स्था विद्याची स्थायम् स्थान्य स्था स्थायम् स्यायम् स्थायम् स्थायम् स्यायम् स्थायम् स्यायम् स्थायम् स्थायम् स्थायम्यम् स्थायम् स्थायम् स्

क्यमानेव चंदे स्वाबनी

केन्दुःगुःन्दस्यक्यःकेन्द्रः॥ क्षेत्रकारुकार्नेवान्दरस्यन्त्रीन्द्रा॥ अवयःजबायन्बायमःदेबायवुदःन्दः॥ ब्रियायद्रायस्य क्षेत्रदेशात्वीरार्टा। न्य

इयायावयबाउन्याव्वेवावेनान्तरा त्रमाश्चीःलेकाक्षे प्रमार्वीरःहै॥ इस्रयाम्बुर्गीःयन्गानिर्वासी। द्यातविरःश्चितःतालयःष्ट्रयावी। वर प्रेयःश्वी

नेशन्याग्री वर्षेत्राष्ट्राष्ट्रीत्रायदे अत्रव्याणी यह्नत्य वर्षेत्र अदेत्यमः र्हेग्नशपते:कुर्वाची:क्रेंग्'येद्धराचुकाय:यकाञ्गयकान्दरावेति ॥

# श्रम्यान्त्रेशया वस्त्रम्

मिथेश्वारात्वराश्ची मिथित्वरासेश्वारामिथ्या व्यासेश्वर्शे पदात्वर व्यमान्द्रा न्द्रसार्थे । न्द्राचे व्यस्ते साम्री प्रदेश्यम् व्यम्

के. मेशका श्रीराय राये. यह ख़िर्गी दिन् ग्रीकार्सेन सेन सेन सम्बद्धन प्रमा खुवादेश्राचार्द्राचिचाचार्द्रा| रम्यविव प्रमुद्धि प्रमा १ वेश ह्या विवेशासायमानेशान्द्रशायावासम्। ववार्त्रशानाः। नराक्वियान्ता 26 अर्देव हेंग्य कुव की य पठन यूट केन क्षेत्र थे।

चलेव है। चलेव है। हैं स्री चर्चेर या ह्म सह्य में प्राप्त में प्रमानी रट चलेव है।

यभःमेशःहेर्-ग्रीःस्यायःवि॥ तयम्भःपदेःपर्वे प्याप्यविः रमाणी इभःपःभेः रभेग्वशः भ्रांचश्वा। वृत्रः र्वे शःयभःवर्दे स्वेशःपरः प्राः १ वेशः स्याः महेशःपः र्वे रायभःवर्दे स्वेशःपरः प्राः १ वेशः स्याः

ट्रंच त्याक्ष या क्षेत्र क्षेत्र त्या कष्ट त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या कष्ट त्या कष्ट

बिश्वातः के सूची

""""रे'न्यां श्रे'न्श्रीयश्रायश्रा १ हे'र्से र शुरायान्याः हु'व्देन्। वेश्वार्से।

चब्रियःचर्केर्यस्री

देःयःहगायः सँग्रवाह्यसंग्रीया।

नवस्यायन्त्रम् यस्य वर्षेत्रस्य स्था विद्यार्थ। के.त.क्र्यात्रक्र्या.च्री

> बायकुन्यायबायस्थवावशावी। ब श्रीःगव्यामुयायरायसृदायाधिया। क्रॅब्र'ग्री'अर्क्रेग'हु'त्शुर'द्म95'दे॥ **३**:ब्रें:रलेव बरब सुब ग्रेबा। अष्टिव व बार्के बाह्म अकारा महिना बाह्म हो। ५ वेबार्से।

बादुकारा प्रदासुता त्यायेवी अव र्स्स प्राप्त सिराये सुरोत्य रस्स क्रॅबर्स्या यमाग्रीरेची क्रॅबरायमारेकायग्रेन्यक्रवरायरी निरासन्तर व्यार्टावरायरायक्षेत्रायाची

> रट्युट्य्व्य केट्रहेंग्य प्रदेखेंग्य ग्वत्रामुद्राध्यस्य यद्धिः द्वीद्याय।। चश्र-राष्ट्र-स्तिये खे.सेश्व द्या

ग्रेशय बुंबेर्यम् केंश्वेत क्यावी गटगटर्देव वे गटगटणा इ.के.इ.केर.थेच.वर्ट्ट.त्री

शर्य हूं गंबा भिय ही बातकर बेट होर हूं ये हो। 28

> श्चाये द्यार दे दे दे स्था विश्वासी

चिश्वयाय त्ययाची हें हो दी।

ग्रहर्देव हेंग य बेंद खेर दरा। वहेव य शे शें र ही म न र वे ॥ हेव बीब पर्ये र से स्वरं ज्या वादःन्यान्वसूकायमःविकायमःग्रा ५ वेकार्वे।

वर्षियः क्र्रें र त्यस्य देश द्वे द वक्ष्व या दी।

यहवाशयदे केंश है दशे दवाय य र ।। क्रॅ्व प्रदे<del>व</del>्याय र्दे म् श्रूम पा क्रे.श्रूर.वीर.त.वीचीश्व.ज.सूवीश्वा द्यीय य से द त्य से मुख्य य स से हो।

वरक्रिंदिनेद्रायक्ष्मिश्चराधिशा गञ्जाशसँगश्री दहेव सुरावर्षेत्र या गञ्जाबार्स्यम् अञ्चादा येता स्थान क्यायाचवावीकेंबाग्रीयकेंगा १० डेबाबी।

बिश्चरात्र चिरःश्चितः श्रेयश्चर्यात्र विद्याया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या

यर उद रूट। यर्झें अ.जाश श्री रिट र्ये अर्थेट जाश विट यर उद जा मिन्ना अर्देराचक्षेत्र याद्रा मुकायराचन्द्रा न्द्रस्था अर्दे र पहुन ने।

> यर्व-दर्यदेव-यःवर्वेद-यःदर॥ नेशयते स्निन्देग द्वा स्थापति वी स्था त्रमानेशकेरात्मा विकास यवः येव प्रवस्य पर्दे प्रमृतः देश ११ वेशश्री।

### महिश्रयाः क्रुश्रयम् ५ देश

ने'प्रविद्गानित्र'न्द्रास्यास्यास्यास्या षव र्ख्व हेव य हेव से र खेरा। इयान्द्रस्य विश्वारी सेवाय द्राप्त केव में कंप या येप प्रकार मा ११

**र्क्ष**न्'येन्'य'न्न्'यवद'येन्'न्न्'। देर विवशकाञ्चन साथ सेवास या था। बदबाक्कबाकेरातुःदेबादद्देवात्रा तुरः बेर् दें रायः बेर् सेंग्सर्रा॥ ११

वुस्रकायः सँग्रासायः सूरिते दिन्। बदबाक्कबाक्षेत्रवे पर्वेचायात्रा

इस्रायर मुद्दार्ग्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त वयारामार्ट्यवर्गावासेवा। १० शुःदवःवन्श्रवदेवःवेःवेन्तिन्ना श्रदशःमुशः इश्रशःगुशः तशुरः तः श्रेग्वाश श्रिम् श्रेम् र्रेन्य या स्मित्राय। इसायागुन्यविवार्द्धवावादी॥ १५ यन्गाकिन्यान् अस्ति स्थान वर्गेर्र्र्र् र्क्रवाद्यतिरक्षेत्रः विद्युर्

मृत्रेशयायर्क्क्ष्रयायस्यामृत्रेश्च यर्क्क्ष्रयायस्य श्रीतिर्यान्य वित्या क्व ची पर्देश तमार्थे। । प्रत्यं पर्देश तमा ची चे प्रत्ये।

व्ययः वेदार्वेद् ग्रीः स्नूद्रियाया। १८ वेदार्द्या।

गुन्दन्नं ले'दरः बस्त्रन्यः उदःय। वर्त्रद्रात्र्व्यं क्रियायम् मुयाद्रा गर्वेर्प्यसम्बद्धाः यथेर केर्प्र वुरस्याप्रदेशेहेवासर्केप्रित्। १० डेबार्से।

मानेश्वारा होत्या उत्रामी प्रमुख्या त्याया या मानेश्वा व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त

वन्त्रेत्रं प्रत्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्षयं व्यक्ष्यं व्यक्षयं व्यवक्षयं व्यवक्ययं व्यवक्ययं व्यवक्ययं व्यवक्षयं व्यवक्षयं व्यवक्ययं व्यवक्

र्बेशयः स्टामी देव दिन्दि । स्टामालवा देव दिन्दामालवा देव दिन्दा। इस्रामास्या भेषा छः दे । प्यत्ति। सुटाद्वा १८० विकास स्ट्री।

इस्त्रान्त्रभाष्ट्रभाष

विश्वायाने याचर्षेत् प्रत्यु र प्रस्वायाय दे।

न्त्रास्त्रास्त्र्याष्ट्रीत्रास्य विश्वास्त्रात्य विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त व

ववश्यन्तर्वेयाचन्त्रं वाय्यनुव विकास्य विकास विक

32 अर्देव हैंग्स कुव की स यठ द खूद के द खेंद की

नम्यक्षयम् । नम्यम् मंत्री

वेंदशः सु: पर्कें प्राप्तुन् प्यमः उत्।। ने: धी: प्रोत्ताः प्रकें पाः धीन विकासी।

गहिस या इसाय है।

देवे द्रीम्बास्य स्वाप्त स्वाप्त विस्किष्

माशुक्ष यासक्त्राकृत्वी

ब्रेवर्डिः अर्थेषाः अस्वरहेर्दि॥ डेश्वर्शे॥

चब्रेन्यक्षयम्दरवर्षेयायात्री

स्याधीयश्चित्रसम्याची

निस्रश्चम्बुसःहॅमश्चयःसःबितःदरः॥ बेशःब्रा॥ तुमायःदग्जेःचःबदःबितःदरःचडश्चयःवी।

कुरन्द्रविदन्द्रकेवर्धि॥

पर्देग्याम्बदादी द्वामा सुराये। पर्वे दवस्य के त्युर पर्वा के दिया ११ के संस्था

यथु त. ईश्व.श्व. लु. ४८ य. थे।

वयश्रद्रिः द्रीग्रायः द्रग्नां वा न्बो नदे स्वाधी स्ट्या पर्क्षेत्रयाधेवायमायदेमायहॅदार्दे॥ १५ वेदार्देश

बिदेशत् वर्षे अत्यास्य वर्षे अत्यास्य वर्षे अत्यास द्रिक्ष वर्षे अत्यास द्रिक्ष वर्षे वर्षे अत्यास द्रिक्ष वर्षे या दे.ज.श्रूबाश्चीश्ची क्ष्य.र्वा.व् ।र्ट.त्र.यक्ष्याज्य.र्ट्ब पश्चियःयःदे।

> देखेंदिक्षेत्रअर्क्केषाकेद्या गुवायासर्वायमायतुः से हो । क्रिंश्वस्थान्त्रीग्रास्युःसेन्यमञ्जी। गहिंद्रायमान्त्रीद्रायमित्रकेवान्त्री। १५ डेबान्सी।

ग्वेशयन्य वर्षेश्वरी संश्री क्रुवी

बर्वानुबायक्षेव द्राक्षेव केंग्रिय केंग्रिय द्रा वयश्यायाम्बर्धयान्यद्येवया।

34 अर्देव हैंगब कुद की ब नठर बूद केर बेंद बेंद

दर्न त्यार्थे का यदि क्चु न्वा धिव।। केंका ग्रीका धिनका यदि क्चु न्वा दी।। १५

पर्द्र-ग्री:विप्रवागी वार्षेष्ठ पार्द्र ।। वपः व्यास्त्रे के का या स्वास्त्र के का प्रवास स्वर प्रवास का स्वास स्वास के का प्रवास के का की । स्वास प्रवास के का स्वास के का स्वास के का की । स्वास प्रवास के का स्वास के का स्वास के का स्वास के का स्वास का स्वास के का स्वास के का स्वास के का स्वास के का

म्बर्भात्मक्ष्यात्मक्षयात्मक्यवात्मक्षयात्मक्षयात्मक्षयात्मक्षयात्मक्षयात्मक्षयात्मक्षयात्मक्यवात्मक्षयात्मक्षयात्मकष्यवा

दन्नशस्त्रत्वायाम्बन्धायार्थेन्।
त्वायाकेत्त्रेत्राचायाम्बन्धायार्थेन्।
त्वाद्यक्ष्यायात्र्वाय्यक्षयाः
विक्रायाः विक्रायाः विक्राय्यक्षयाः
विक्रायाः विक्रायाः विक्रायाः
विक्रायाः विक्रायाः विक्रायाः
विक्रायाः विक्रायः विक्र

बट्यास्यास्यात्रायः स्वेतः हिन्। १८ वेदास्।। स्वायः स्वाय विव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्याः स्वायः ग्रम्भ्यायाचेग्'न्यव ग्री'मेव हुन्ग्'यावी

सः नृत्युः त्यान्ने क्रेन् स्यान्धी । क्रेन् स्यान्से त्यान्से त्यान्धी । स्यान्यान्ये त्यान्य क्रेन्ट्रिया । स्यान्यान्ये त्यान्य क्रिम्स्या १० विस्य स्यान्य

चले च से मा के व मी से व रहा द्या या दी।

ने'त्य'त्राव'गाश्चरक्ष'य'धेक्षा। यक्षवे'त्रहत्य'न्द्रम्वित्य'चु'न्द्र'। यक्षव्य'य'क्षेन्'ग्रीक्षाव्यक्ष'ग्रीक्ष्य'ची। यक्षव'य'क्षेन्'ग्रीक्षाव्यक्ष'ग्रीक्ष्य'ची। यक्षव'य'क्षेन्'न्द्र'न्द्र'य'धेव।। ११ वेक्ष'क्षं।।

म्बार्यतः मुक्तार्या क्षित्रः येश्वरः यथा श्रीयश्चा विश्वरः यहँ श्वर्यात् । ।। विश्वरूप मुक्तार्या मुक्तार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या ।।

# श्रेयशमाश्रुयाय। गावीनेश

स्थानी प्रस्ता विकासी स्टान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

36 अर्देव हेंग्य कुन की य यस्त यून केन बेंन बेंन यो।

यम वहें व मेर या वयक आवकाय है। यो ये प्राप्त के विष्य के विषय के विषय

कुंर्रवायार्थवायाय्यवा। दे:द्वायम्बद्धायाद्वयायाः दुश्वस्थ्याय्यव्ययाः वेदःवेश्वयद्वमः। दुश्वस्थ्ययाय्यद्वययाः वेदःवेदः।। वेश्वरम्यायार्थवाद्वेद्वयमः वर्देद्।। १ डेश्वर्से।।

मृद्धेश्वायास्त्रस्त्रस्य स्त्रम्याची

देवे अर्क्ष्व अर दश्चिष्य क्षें वश्व। वयक्ष अर्ध्व यक्ष देट य हे। वेश कें।

ग्रिमायाः चयसाम्यायाः ते वादी

देन्द्रेन्द्रवाक्ष्यास्य स्था १ देशः द्या

यक्षीयपूर्व विस्तास्त्र विश्व त्यास्त्र स्त्र स

ग्रुवाशक्षणशस्द्रद्धः स्ट्रेट्र हेट्र द्रा।

चबि'य'गानेव'र्यंदी।

क्रेंशः इस्रश्रम्यः प्रतिवास्त्रीयः विद्यार्थे।। नेशः प्रश्रम्यः स्वाधः प्रतिवास्त्रीयः विद्यार्थे।।

**के.त.बच.तपु.क्ष्यायी** 

अर्वेदःयः यः र्वेग्श्ययम् । देवे द्वेग्श्ययः दम्भवः यस्य । देशः र्वे॥ 38 अर्देव हैं ग्रंब कुव कुं सामक द सूट के दें में बंब ओ

र्वेग.त.पश्याग्रीश्राश्च वियात थे।

न्त्रन्थयः स्वाधियः यत्रः स्वीधः स्वीद्राः देन्द्रीः यस्त्रः स्वीद्याः यत्रः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्याः स्वीद्य

पर्व.त.सहग्नापर्व.प.वी

दे:श्रूर:गुद्र:मेशकेंद्र:खगश्रःखा। श्रे:श्रद्धदःगकेद:चॅदि:खुंगश्रःदगःगी इस:पर:द्वे:प्राय:खश्रःखा। हे:श्रूद:प्यद्दिर:मेशःखा।

मृत्रेश्वयःश्चिरायदेः त्यस्यायाम् त्रेश्वर्ते। स्टायदीव्यत्यः विवाधिकार्यः विवाधिक

न्त्रम्थः र्वेन्थः देशे ह्मा र्थेन्थः द्रः॥ देशः ह्येन्थः द्रः स्या ह्येन्थः द्रः॥ देश्यः क्ष्मश्रः यात्रेदः क्षेत्रः या। र्श्वेदः यात्रम्यायते ह्येत्रः याद्रः॥ ४

ेश्वे त्यु र चुे द र्वे श्वे द र है द द द है। इ द ग्वे र व्ये श्वे र व्यव्यक्ष व्यव्यक्ष हिंद्य है।

गल्दायारमायश्चात्रेरमाराद्रा। ब्रूट्य इस यतुव के बार्चे दर्देश वेब बेंश

ग्रिश यास्त्रस्य यात्री प्राची

ग्रम्भायार्श्वम्भायार्त्त्र्याये द्राया इस्रायविद्वेष्येस्रक्रययक्तिया १० डेस्स्स्

विश्वास शर्हर त्यम् व विश्वाही वा सेना श्री र हवा मामर्र र पश्चे र्मा ह्रॅग्रथायाक्त्रयाम्याचन्याचे । प्रम्यास्याचे ।

> र्भवा प्रमृताया स्वासाय देवायाया। क्रॅंब:वेब:हेब:बु:वेब:घ:५८:॥ वर्जेन:वेशक्षक्षन:डेग:यनगःवेन:वन्॥ वियाने वास्याया विष्या होता विष्या हो।

विवेशयः हेविशयः मुशयरायम् प्याती।

गञ्जग्राह्मायायवायाः स्वाधिवा अःश्रुक्षः अः दग्गग्रह्मः यः क्रिंग्रह्मः ५८ः॥ अपियः यर् । क्यां वा श्री द्वारा न्दा।

लूरश्रक्षियंत्रस्थे जश्चीयायार्यः।

40

द्रं तं के न् ग्री अप्तार्हे न् से न प्ता प्ता अप्ता स्ता प्ता के स्ता के प्रा के प्र के प्रा के प्र के प्रा के प्र के प्र

म्बर्धियः । ११११ । १९ ४ ।। द्रवःश्चरः करः द्रदः द्रव्यश्चः वृश्वः। अर्देवः तुः वुः त्यः श्चेः ह्र्याः वृश्वः।

गुक्तः केत्रः केत्रः भ्रीः क्ष्यः केत्रः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्षयः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्षयः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्ष्यः क्षयः क्षयः

ग्रेशयास्त्रित्याग्रह्मस्याग्रीयस्यात्री

ने भिरायने प्रमास्य के प्रमास

नेश्चरवाग्री सार्देवाहाभ्रेतायते अत्राद्यां मी वस्त्र वर्षेश्चर्यद्वायरः

र्ह्रेग्रस्यतेत्रिः क्रित्योक्तेत्रिः विश्वायः यात्रा श्रीयश्वायाञ्चा ॥

# अयश्चित्र। इस्विश्रं र्या

प्टा विरायरस्य हुं।।

रा विरायरस्य हुं।।

न्दः संक्रीं र प्रश्नेव प्राप्त प्रश्नेव स्थाप स्थाप प्रश्नेव स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य

म्रुक्षःयःकुत्तुःकुःकुःक्षःयःयविद्वा । प्रद्यां मृत्येक्षःम्रिक्षःमर्द्रः यत्वेदःयदेवः यद्वे। प्रद्यां मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः यदेवः यदेवः

42 अर्देव हेंग्य कुव श्रीय पठन सूर श्रेन स्रेन से।

येन्। प्रतिः इयापान्यान्य प्रतिः हो।। येन्य प्रतिः विश्व प्रतिः प्रति। यदेन प्रतिः विश्व प्रति। ययापाने विषये प्रति।। १ देवा वि।।

विश्वायात्मस मेशानी द्वस य र्श्वानुवादी

कु: ५८: यथः ५८: श्रूषा यश्यः ५८: ॥ दर्षोषा यः यः देः वें : २ अश्यः यदिद्या। २: ५षा यशुः ५५: ५८: य५ द्वः ५८: देशः कु: ५८: यहुः ५ वेशः देशः विश

गश्यायाद्वयायाद्वेताचीःद्वयायादी।

श्रेभःश्वःपर्वः द्वः स्थाःश्वः प्रवे॥ श्रमःश्वः प्रदेशः स्थाः स्य श्रुयाद्धः इ.र्.सु.र्.चार्-चार्क्रःचार्वे ।। ५ डेबार्ख्या

ग्रेश य प्रह्मिंस सम्बित ग्राम नग्री

सरसः मुस्यस्यसः त्यः व्यवाद्यस्य । देः त्यः द्वो प्यते स्वः यः प्यञ्ज्ञ्व ।। द्वो प्यते प्यते सः ग्रीः सर्वे वः प्यत्यस्य ।। वदेः सद्वाद्यस्य स्वे दः स्विवः व्यव्यस्य ।।

ब्रेन्-तु-त्यायः इसवायवेन्द्री। ये डेब्राब्री। ब्रेन्-त्-त्व्याविस्रवार्य्यवाद्यायी। ब्रेन्-तु-त्यायः इसवायवेन्द्री। ये डेब्राब्री।

ग्रुअप्यः ह्युँ रायदैः रयः द्वे दी।

ग्रम्थान्यः स्वाधान्यः स्वीधः । दे त्यः स्वीधः न्यः न्यः न्यः स्वीधः । दे त्यः दे त्यः त्यः त्यः न्यः स्वीधः । दे त्यः स्वाधः त्यः त्यः स्वीधः । दे त्यः स्वाधः त्यः स्वीधः । दे त्यः स्वाधः त्यः स्वीधः त्यः स्वीधः । स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वीधः । 44 अर्देव हेंग्ब कुन की ब कर इस कि हैंन की

त्युद्रः तम्भूवः स्त्रीः स्वाः त्रीतः त्राः । देशः तमुद्रः त्वसः स्त्रतः स्त्रोतः त्यस्य स्त्राः ।

चित्र म्हूर्व त्यूर्वि हें अया चित्र व्यूर्व मुंद्र चित्र मुंद्र मुंद्र

ल्य. ५४. इ.स.च.चश्च्याच्यूची जुबाड्या। चर्च. ५४. इ.स.च.चश्च्याच्यूची

गहेशयञ्जूनदी।

र्वेग १८ दुसः सम्बंधानम् स्त्री। १४ देसः स्त्री। इंग १८ देसः सम्बंधानम् स्त्री। ग्रुअः प बुरू प अर्द्धवः केर पः ग्रेश अर्देनः प्रमुद्ध कुरू प्यत्

म्हान्यक्ष्यः के अस्त्रः के दिन्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्यानः विद्या

यक्ष्यःक्षेट्रायक्ष्यःयवि । विश्वः यय्यः विश्वः यद्यः वि

46

केवःविराशुराप्ताक्ष्यप्ताक्षेत्राच्याप्ता १५ इयानेबायकृवातुःचेप्यप्ता १५

बेसकायक्षरासेन्द्रन्तिकायादे॥ वार्षेन्यायार्वेषाकानेकानुद्रान्द्रा। देन्यकावाबनायदादेन्द्रवादी॥ देन्यबेन्द्रवेद्ग्यीक्षयायस्मेका। १५

व्याप्यस्य ने प्रविद्य के निर्मेष्य के ।। मान्य प्राप्य के या प्राप्य मान्य प्राप्य के या प्राप्य

ग्रेशयास्याम्याम्युत्वागियाययास्याम्याम्यास्याम्या

ૡઽૢૹ૽ૺ૽૽ૢૢૺઽૢ૽ઽૣઽૣૠૹ૽૽ૹ૽ૢૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૹૣ ઽઌઌ૽૽ૢૺૹૹૼૹૹ૾૽ૢ૽ૺઽૹૺઽૹ૽૽ૺૢ૾ઌ૽ૺૢ यसःमेशकेन्यीः श्रम्यश्यीश्वती। मेशयदिः सस्त्रः केन्येन्य सम्यानेन्।। १० डेशः स्या

ग्रुमः मेश इस पर्दुः चुगागीश इस साधित छी सक्त है न प्रमुव परि

ने ने ने ने ने के क्षा के क्षा के क्षा के क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा के क्षा के

गुवःहुःदह्ष्णःअञ्चिवःष्यः धिवःद्रः॥ अःअर्थेदः क्ष्रेंवःययः अर्द्रःयः द्रः॥ द्रिणः हेवः क्षेंदः नेदः द्रुयः यः द्रः॥ पर्हेदः द्रुदः सेवः अर्द्दः अर्थेवः खुयः यहंद॥ ११

यस्राधीष्ट्रयाद्दानिक्षेत्री। वहेषाहेत्रव्दुःनेद्रावर्षेषायाया। इस्रायागुत्रस्रित्रद्धयायात्री। नेद्रायदेशस्त्रत्तेत्र्रस्त्रायन्द्री। ११ वेद्राद्धी।

पत्ने प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्

यस्थाश्चीत्वयःस्वित्यस्य स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्वित्यः स्व स्वित्यः स्वत्यः स्वत्य

गर्भश्यः मुश्रायम् चन्द्रायः देश

द्रवा च : श्वतः श्वतः द्रवा : श्वतः श व्यव्यव्यान्यः श्वतः श्वतः

स्वाधुरः चै 'द्रान्यारः येद्र'द्राः । भूतः द्रान्यायः द्रान्यायः द्राः । भूतः द्रान्यः प्रदेशः द्रान्यः । । भूतः द्रान्यः प्रदेशः द्रान्यः । । १५

र्दे:शुरःसेन्द्रन्त्विन्य्यस्वै॥ यञ्जन्त्वायन्वाकिन्छेशःशुःश्ले॥ यद्वनुवायन्वाकिन्यस्वायस्य यद्वनुवायन्वाकिन्यस्वि॥ यद्वनुवायन्वाकिन्यस्वस्य

#### सूय वेदायदे सक्त नेद ने।

सवाद्यादीत्याक्ष्मीयायाद्या। भ्रीम्मस्यात्रीत्वे स्मुत्यस्य न्वाद्या। व्यवस्य द्वाद्य स्वत्य क्षेत्र स्वीत्य द्वाद्य स्वत्य स्य

यद्भव मुक्ता मुद्रा प्रदेश स्त्र स्

### तुष य देवे देवें केंद्र ग्री अळव केंद्र की

वृज्यस्याम् वृष्यः प्रस्यक्ष्यः स्टाः । श्रे अञ्चतः क्षे वृष्यः प्रस्याने वृष्यः प्रमाः प्रमेवः प्रस्याने वृष्यः प्रमानाः प्रस्यः । श्रे प्रमुद्धः प्रस्यः प्रमानाः प्रस्यः । प्रमेवः प्रस्ते वृष्यः प्रमानाः प्रस्यः । प्रभावायः विषयः वृष्यः प्रमानाः प्रस्यः । प्रभावायः विषयः वृष्यः च्यानाः प्रमेवः प्रस्यः ।

**রী'মপ্তর'র্ঘুশাশ্ব'ম'রী** নৃদ্দেরী।

50 अर्देव हॅग्या कुव की यानन यूट के र बेंच यो।

गिवि सेन् तर्गे सेन् क्षे सेन् न्द्रा। १०

दे प्रविव के द वे के प्रविव व व व

र्देन ने न च इन् न न न ने ने न

सर्क्षेत् प्रु सुरस्यर्क्षेत् यस्य न्।। सर्क्षत्र तेत् प्रवेत्यर्गम्बेत्। ११ डेस्स्स्।।

सक्त से र स्वा हु हु के त्या से विश्वा

इस्रायात्रस्य कर्ने हें वास्तर्भे त्या। वर्ष्य के स्ट्रायहान वर्ष्य के संस्था

गर्वेशयः कुरायरः यस्त्रपः वी

ब्रद्यानुबार्वेग्वा-५ व्रीग्वा-५५ दा-५८ ।।

ब्रुव-बॅग्नबःर्बुन्ख्यान्द्रवःदशुबान्दा। चब्रमानस्वन्द्रग्नबान्द्रवःदशुबान्दा।

इसायरासीहेंगानिरायहेंवान्या। ११

क्र्याम्ययाम्यायाम्ययास्त्रम्

मेश्रायदे:मेश्राप्त्यार्द्धयार्द्ध्यार्थ्याः ह्रियाश्रायदे:मुद्दार्द्ध्यार्द्ध्यार्द्ध्यार्थ्याः स्वाश्रासुत्पःर्व्यार्द्ध्यार्द्ध्यार्थ्याः

मानेश्वाद्यात्वर् स्वर्ष अर्क्ष मान्य । प्रक्षेत्राद्ये मान्य । प्रक्षेत्राद्ये प्रक्ष अर्क्ष मान्य । प्रक्षेत्राद्ये मान्य । प्रक्षेत्राद्ये प्रक्ष अर्क्ष मान्य । प्रक्षेत्राद्ये मान्य । प्रक्षेत्राद्ये प्रक्ष अर्क्ष मान्य । प्रक्षेत्राद्ये प्रक्ष मान्य । प्रक्षेत्राद्ये प्रक्षेत्र प्रक्षेत्र मान्य । प्रक्षेत्र प्रक्षेत्र मान्य । प्रक्षेत्र प्रक्षेत्र प्रक्षेत्र मान्य । प्रक्षेत्र प्रक्षेत्य

र्दे त्यः इस्रश्चः ग्रीः द्रश्चेषाश्चायः त्यद्देन। स्रोत्रश्चेत्रः वस्रश्चेत्रः त्यद्भवाश्चा। दे द्वाः तेदः त्यः स्रोत्रश्चायः स्वायः त्यस्य वश्चा। इस्रायः द्वाः वे त्यस्त्यः त्यन् द्वाः स्य

यन्नाकृत्रकृत्यायायकाकृत्वाकृता। क्षुकायाक्षेत्रकाकायात्रकायकात्रका। नेप्त्रनायाकीयक्षित्यान्त्रा। यक्ष्मकायायक्ष्त्रप्ताकृत्याकृत्याकृत्।। १७

हैरःशुरुरेग्विद्याचेंद्याचे॥ रद्यावदाहेद्रक्षयदेद्याचेद्याची॥ केंद्रायकेंग्देग्विदावेद्याचेद्याच्या ब्रेद्याचेद्यांद्याच्याचीयाचेद्याचरः॥ १० देवाचा॥ मालव नमाने या तर्गे न या नमा। ८०

गलन ग्री हेन उन श्वीत सँगमान हा। इस संस्थान संगमान हा से स्थान स्था स्थान स्थ

चुःचुःभेदःस्थ्यसम्बुद्यस्यःद्वी। येदःददःस्यःस्थःभेदःस्वासःददः॥ र्क्षसःतेदःस्वःप्यःदर्गेःतेदःददः॥ स्थासःस्वःद्वःद्वःदुःदुःस्यःस्वाः

यत्व क्षेत्र प्रोत्तर क्षेत्र प्रमुख प्रमुख

54 अर्देव हैं गब कुव की बावकर बूद केर बेंद्र बेंद्र

मह्मायाः अर्वेदः त्यमः श्री दिनः वेत्वा प्रति हेन विश्व प्रति । विश्व विश्व प्रति विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व

सर्वरतिःयसःयाय्वर्ष्ण्याद्यः ।। ८५ वेशः स्।।
विद्यस्यतः स्रेशः वर्षः व्याप्तः स्थाः ।।
स्रेशः वर्षः स्थाः वर्षः स्थाः वर्षः ।।
स्रेशः वर्षः स्थाः वर्षः स्थाः वर्षः ।।
स्रेशः वर्षः स्थाः वर्षः स्थाः वर्षः ।।

गहेशयाक्तियाम्बर्

ह्रणः तुः र्द्धरश्ययः श्चेंदः केदः दरः॥ दर्के यः इस्राययः द्याः केदः दरः॥ ६५

सुदःश्वाशाचरःक्षद्गःचेदःस्रश्चाद्गःचाः वीद्यायःददःद्वदःश्वाशाचरुश्चायःवी। वीद्यायःदचेदःश्चेदःश्चायःवी। ५० सुदःश्वाशाचरःक्षदःचेदःस्रश्चायःवी।

मन्त्रयः स्थान्यः स्थान्यः प्रमान्यः प्रमान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः

र्केश गुः देव दुः श्वेष या विद्यानि। दे त्द्रिः श्वदः श्वेष प्रदुः दुषावि॥ श्वे त्येष स्वाधित्य स्वयः या विश्वा ५० विश्वः श्वी। श्वे त्र श्वेष प्रदेश स्वयः द्या स्वयः । ५० विश्वः श्वी।

56 अर्देव हेंग्य मुव ग्रीय यस्त सूट ग्रेट स्वेंद सें

यर पश्रुव य वी

श्रुरः परि सबर यस र्शेलाय हैन्।। ५१ डेस स्।

ग्रेश य छ्र-ग्रेष यस्त्र य दे।

देशतविद्यायन्यम् प्रमान्द्रस्य स्थान

यद्दर्भद्दर्भक्षेत्रस्यः दृद्धाः। ५१ वेसःसी। वहवाद्दर्भक्षेत्रस्याद्वेस्याद्याः

विश्वयाय:दन्नि:यादी

नेते क्वुत्रः स्वावायित्याये ख्वेत्र॥ स्टर्डिस्ट्रेस्वित्रः द्वेत्रः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावायः स्वावाय स्टर्डिस्ट्रेस्ट्रेस्वित्रः स्वावायः स्वायः स्वावायः स्वायः स्वावायः स्वावायः

यवै य गुरुषाये द्यायकृत य से त्यायाय है।

गुरुषक्षेत्रपर्वेष्वस्यक्षृत्रप्रस्था। नुस्रपर्वे देव,तुःचर्बेद्रसम्बेद्या यम्य प ही

र्नेश्वासं प्रमृत्यात् । १८ देशक्षा क्ष्रमाय प्रमुद्धात् । १८ देशक्षा

महिश्रायात्पव वी

चुरस्त्यःहैःश्वःदेःयवेदःह्याः वदःदेःवेदःदेदःयवेद्दंदःयवेदःहितः चुरस्त्यःदेःयवेदःवेदःयव्यदःहित्। देःवदःदेःवेद्यःवेदःवेदःयवेद्याः देशःद्वाः। चुरस्त्यःदेःवेदःवेदःयवेद्याः प्रथः देशःद्वाः।

तुषायायम्बासायाईन्यन्वेन्यन्वे।

देवाबादीवादी:अबागुरादी:सेवा। वेबार्स्या।

यतुव्रायात्मवाद्योद्यायक्षायावी

58 अर्देव हेंग्ब कुव शे ब चक्त बूद श्रेद बेंद बेंद बेंद

यर:येदे:र्वेची,क्ष्य:ग्रीश्वी। वय:य्र्वेदे:क्र्यंक्षेट्यंक्ष्य:यःव्यक्ति।। तर द्रेक्ष:यूग

वकुर्यः वयः व्याः वकुर्ये : हण्यः केर्यः वस्त्रायः वी

भ्रुःचः प्रदेशस्यायात्रः प्रदाशि देः चलेत्रः के प्रप्तः प्रदेशः स्वाप्तः प्रदेशः विश्वः प्रदः भ्रुष्टः प्रदेशः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

पर्दा । द्रान्त्रें अन्यक्ष्यः क्षेत्रः व्या व्यवस्थानका स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर् स्वर्तः । द्रान्त्रः स्वर्तः स्वरंतः स

> र्केश्च्रम्मद्भीःयम्भद्भःयत्रेष्ट्वेम्। श्चेनःन्द्रत्वेष्ट्रम्भद्भवश्चावश्चाव्ये॥ यम्भद्भेनःयम्भद्भवश्चम्ये॥ यम्भद्भेनःयम्भद्भवन्यम्यम्॥

म्कृष्ययः विदःद्वायदे हुँ या विष् स्रेस्रस्य उत्तर दिवा हेतः दे या वितः दु।। स्रेंद्र ग्रीयदिवा हेत्या द्वाया। दे.ज.रच.तरक्षेत्र.च.जुन्। ५० डेशक्री। सरसम्बद्धानुसःविराधेन्याः

विश्वभाग वयश्वभाष्यस्य स्थ्रीं माय है।

सुवाद्गर्स्क्रीं रायास्त्र त्यादि है।। द्याद्मस्रकात्मक्षत्वे त्यद्मायाद्गाः। स्री स्वाद्गे त्यत्वे त्याद्मायाद्गाः। स्री स्वाद्मे त्यत्वे त्याद्मे त्याद्म

यःक्ष्म्बर्धः प्रदेशे प्रश्नेष्ठः प्रदेशः विद्याल्यः व्यवस्थाः विस्थाः वि

र्म्बर्याये: क्रुव्याये क्रुव्या

## श्रेयश्चराया है सेंदेर हैं राया

मिट्टी. ज्या मिट्ट्यमेडेच. संस्था महिन्द्र में स्था महिन्द्र में संस्था महिन्द्र में संस्था महिन्द्र में संस्था महिन्द्र म

ताया यहीय ताया यर कर येर ताय है सेंद्र । रिट में हैं र ताय ता यही र्देन मु हे के हिन्द में मु अर्केंद या हे केंदि हे के इसायर वर्षेताया वर्षेत्र परि हे कें प्रमूत या केंबा अकेंग मी हे कें बेअब गुत फु मत्ब पर्दे। दि चॅ र्रेन् ग्री हे हें र्रेन्स् राहणका ग्रीका अर्केंद्र या दी।

> र्री प्ययाव प्यट केंबा द्वयवा गुव।। श्चीय्याः सुरासुरा सुरा स्वास्या क्रेंग्सॅर:ध्रेव:यर:ब्रेंग्रयंदे:हगशा इस्रायायञ्च महिनात्मानु यत्ने । १ देशसी।

मिथेशता है सिंदी है सिंह्म मानर तहे वाच है।

वह्यास्वेश्वीरावीः श्रुः वें हेर्।। बरबाक्तुबासर्केन्द्रपदि न्वोत्यार्केम्बा। इस्यायम्दुविद्येम्या इस्रायविवानहुर्जुणान्यन्याक्षेत्र्न्त्। १ वेश्वर्स्या

नश्चरायाच्च्रीयत्रः स्राच्यू

गुन्यविन ने न महामार्के सहस्र सामा ग्री। लूरश्राङ्ग्याबातायः या बेसबाउव देव चेंदबारी गर्नेटाय। यहवायालेकावी अर्देवायर पर्हेन्॥ १ डेका छा। यवीय केंब अकेंग मी हे बेयब गुन् हु मन्बर य दी

म्चीरः प्रति स्पार्यः क्षेत्रः प्रमाप्तः ।।
क्षेत्रः मानुकाः मानुकाः प्रस्तः स्वतः ।
प्रकारः मानुकाः स्वतः स्वतः ।।
प्रकारः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ।
प्रकारः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ।
प्रकारः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः ।
प्रकारः स्वतः स

म्बर्स्न्नायर्द्र-पश्चर्या हे स्थापित्र म्यान्त्र म्यान्त्य म्यान्त्र म्यान

यह्रम् याद्रान्द्रिक्ष्म्यायाया। म्बुद्रान्यदेश्वसम्हेन्द्रिन्यत्वेद्रास्या। द्रमुख्याद्रान्यप्तिद्रम्भिन्द्रान्तिक्ष्या। अवायदेश्यद्रम्भिन्द्रम्भिन्द्रम्भिन्द्रम्

ग्रेशयायदिवार्हेग्यर्भेरायस्वादी।

र्वे वित्रे क्षेत्रे ते त्यम् व्याप्ते त्यम् । विश्ववाद्यस्य प्रमान्त्र वित्र व्याप्ते व्यापते व्याप्ते व्यापते व दे:दगः बॅंग्बॅं र दगुः यदगः वेदा। ५ वेबार्बे।

विश्वयायाम्बदायान्दायदेवायते देवायाची

म्याक्तिम्ब्रहार्द्वादे प्रविद्यास्य स्थित्। दे प्रवास्य प्रविद्यास्य स्थित्। दे प्रवास्य प्रविद्यास्य स्थित्। दे प्रवास स्थित स्थित्।

क्री. हूं बारा ने श्रीष्ट्रा विरास्त तह बारा द्वा विरास्त विरास है बारा ने श्री क्षित कर कर के विरास के विरास

र्दे के ते प्रत्यास्त्र प्रत्ये । व्यास्त्र विष्टा प्रत्यास्त्र प्रत्य प्रत्यास्त्र प्रत्य प्रत्यास्त्र प्रत्य प्रत्य स्त्र प्रत्य स्त्र प्रत्य स्त्र प्रत्य स्त्र प्रत्य स्त्र प्रत्य स्त्र स्त्र

स्ट्रम् अर्हेग्रस्ट्रम् अर्द्रम् चीत्रः विद्यान्त्रः ।। देन्धः त्यस्य चुदेः द्यास्य च्याः दह्याः पदेः चित्रस्य चीत्रः विद्याः चित्रः गर्नेश्वरार्द्भेष पर्दाष्ट्री इस्ति द्या दे।

श्रेन्द्रात्वेत्वराष्ट्रात्वेत्वेर॥ हॅग्रसास्यत्ववायाकेन्द्रात्वे॥ व्यवसास्यत्वेत्वायाकेन्द्रात्वा॥ व्यवसास्यात्वेत्वायाकेन्द्रात्वा॥

म्बद्धः मुद्धः स्थित्रः स्थाः स्ट्यः स्ट्यः स्ट्यः स्ट्यः स्याः स्ट्यः स्यः स्ट्यः स्

७व.ह्र्य.ज.स्वीयाज्ञी.देव.व्य.प्रीति इस.ह्र्य.पंत्रीज्ञाची.देव.व्य.हे॥ इस.ज.पंत्रीज्ञाची.देव.व्य.हे॥

विश्वयायाञ्चेशास्त्रह्रशास्त्रत्वे श्रीहेवायान्त्रादी

यहेंब्र'य'न्द्रवें'यर्न्द्रयन्द्रः॥ विन्'य'वेन्'न्द्रावसम्बस्सम्बद्धी। वास्त्रस्यं'न्वान्द्रकें'यवेय'न्द्रः॥

ग्वसार्यास्याद्यायमान्यान्या ११

**केंबाग्री** नर्देबार्ये यहग्रवाय प्रदा क्रम्बन्धः प्रदानिक विकासी प्रदान है कुर वर्रें र चलेव वर्गे कुश्रामा यह्रवायान्यायाने वायाना १० वेवार्से॥

चित्र मं भी कारी चित्र विश्व की स्थान की विश्व क

केन्-प्रतिवादेशस्य संशिष्ट्यूरान्य। यम्यायायम्भेवादेशायहेवाद्रा ववावान्द्रायस्थायविःश्चेत्रान्द्रा। न्देंबार्चे स्वान्दारी भूवान्दा। १५

ग्रवश्दर रेग्रबादी यहेव यादर।। र्नेवर्गकेरर्नरक्व्येनर्ना <u> क्षेत्रः कें त्याचान्त्रे प्रश्चेष्य श्राम्याया।</u> वर्देव यदे द्वया हैंग मानव धेव दें।। १५ वेषा दें।।

गहेशयाश्चे पदः हुः ग्रेंगशहै।

गुरःसुयायाम्बदाः स्वायान्या। देखें कु वे व्यवस्था में हादहा।

देवित्रत्यमः क्षद्योद्यत्यते कु॥ অর্মির্ব ব্যব্যব্যব্যবিষ্ঠের বিশ্বর্ণী।

विश्वभारा पर्चश्र वी.वीट.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षे

दे: अ: बद्द्रद्द्रः अ: अ: प्रेश्वः विद्यः व

त्र्व्वायाः स्वेत्यते स्टायते व्याप्तः स्वायते स्वाप्तः स्वायः स्वेत्यः स्वायः स्वेत्यः स्वायः स्वेत्यः स्वायः स्वेत्यः स्वायः स्वेत्यः स्वायः स्वेत्यः स्वयः स्व

म्बद्धाः स्ट्रिंद्धाः स्ट्रिंद

मलेया है सेंदे हो दाय है।

66 अर्देव हेंगब कुव की ब चठन बूद केन ब्रेंव ओ

यदीःस्यश्चायस्यान्तुःकैःस्यम् स्त्री । स्याप्त्रान्त्रान्त्रस्य स्त्री । स्याप्त्रान्त्रान्त्रस्य स्त्रीत्।। स्याप्त्रम् स्त्रस्य स्त्रम् स्त्रीत्।। १० विश्वास्त्री

**ॷॱय़ॱ**য়र्वेदॱঝয়ॱहेॱॾॣॕॗॸॱदॅॱवे॔ॱवे।

ब्रुविद्यायार्थेग्वस्यः रेत्राविश्व देन्वायव्यक्तियम्बर्धायायाः ॥ स्रद्वित्यक्षित्रायदे यार्वेद्यायेश्व॥ स्रद्वित्यक्षित्रायदे यार्वेद्यायेश्व॥ स्रुवायादे यदित्रासर्वेद्ययदे यस्य। ११ वेद्यार्थे॥

तुषाय देवे प्रश्लेशय दे।

स्याक्षाक्षीः सम्बद्धाः स्वाधित्यः स्वी। हेदः स्टेदः त्यः क्ष्र्यं स्वाधः स्वाधः सम्बद्धाः हेदः स्टेदः त्यः क्ष्र्यं स्वाधः सम्बद्धाः स्वाधः सम्बद्धाः स्वाधः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्वाधः सम्बद्धाः सम

मृश्यायाय्र्वेशययायाम्श्याक्षे हेवःक्वेयायदेःयया श्वरःग्रुक्यः

वर्षेषा-५८-वरुषायते क्रेंग्रब्धावहृषा-५ सुम्। इस्रायायिक्राश्चार्यर द्रमावस्या र्वेर्क्षयार्विः द्वेश्वेयद्याया वर्देर्यम्यार्वेषाश्चर्यवेष्ठ्रस्यायम्भेशा १० यथ्याचिवाःश्रवःततुःत्रक्षत्रवःच इतः है।। गर्डमान्द्रमानुबामाबुद्धाः दावीन्द्रमञ्जू विषान्द्रयत्वान्द्रयमुन्त्वा वर्वेवायवेयम्द्रियेवहमंवर्वे। १५ देशस्त्री

म्बेशनाश्चरानुः दश्देशहेंगात्यम्बेशहे। म्बरहेंगान्या दहेदहेंगा म्। ८८.त्.मोबर.ध्रमातामध्याध्याधा प्रधी तहवीतामोबर.ध्रमा.८८। र्ज्ञमाता ग्रहिंग । १८ दें यह ग्रायम् इरहें ग्री

> अर्रे र प्रश्रूष कुष ५८ र षर ष कुष छै। वर्ष्ट्राचश्रास्थ्रास्थ्राच्याच्या त्याग्रह्मयार्वेव प्रवासेन प्रवासिक येग्बरपरि:यमन्त्रे:इसमासुमःया। १५ यञ्चरः प्रते द्वसः हेंगा वर्दे गाउँगा है।। ब्रॅं र प्रदेश्व यदि श्रुं र ख्या उन्। वेश श्री,

#### 68 अर्देव हेंग्य कुन की यान्डर यूट केर् बेंद बेंद

विश्वास क्षेव यावा अद हैं वा दी।

विश्वाद्याः स्रेससान्दाः स्रेससानुदान्त्रस्य स्था। यह्रवाद्यते स्थापन्त्रस्य स्थानितः स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन्ति स्थापन

चन्नी वहनायते.स्वान्त्रन्ते। न्स्या वहनायते.स्वान्त्रन्ते। क्ष्याय वहनाहेन्यात्मिक्षेत्रात्ते। क्ष्याप्तान्त्रन्ते। न्स्याप्तान्त्रम्

न्तृत्र्यायत् मृत्यायत् स्थ्या कत् क्षुं त्यदेत् हेन् न्तृ या नृत्या वित्रा सर्दे स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स

गवेशयः मुश्यम्य स्वत्यः वि

यन्याः केन्द्रेन्द्रेन्यत्वेवः गुवः अख्वेवः वै॥ याश्वअः ग्रीः श्चेयः यास्त्रअः याश्वअः नृतः॥ त्वेः याआन्तेः यात्वेवः केन्द्रेन्यं याश्वनः नृतः॥ अर्द्धन्यः यामः स्वान्तः श्चेतः स्वान्तः॥ ११

क्षेत्रभाक्ष्याः स्वात्म्यः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स्वात्मः स

70 अर्देव हैंगब कुव की ब चठन बूद केन ब्रेंव थे।

मृत्रेश्वास्त्रेत्रित्रायाः स्ट वेश्वास्त्री। इस्रायम्हित्यायाः सम्यायेत्।। १८ वेश्वास्त्री।

ग्रम्भुम्य सः हेत्र सः स्वाप्त्र प्रति ही।

यश्चात्रः विद्वास्त्रः स्वाद्याः स्वत्यः स्वाद्याः स्वत्यः स्वाद्याः स्वतः स्वत

कुः अर्के के त्यः कुं चें न्वित्।। व्यवस्यः अर्केषा चीवस्य न्यः विवा। वेशवाद्यः अर्केषा चीवस्य न्यः विवा। कुं अर्के न्यः विवाधिक्याः कुं अर्के के त्यः विवाधिक्याः विवाधिक्या

पत्नियायम्ब्यास्य स्थानिक्षया प्रत्यास्य प्रत्यास्य प्रत्याप्य स्थानिक्षया प्रत्याप्य स्थानिक्षया प्रत्याप्य स्थानिक स्थानिक

चर्नेत्र्यतेन्त्रेयः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्या द्र्य चर्नेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्या चर्नेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्या चर्नेत्रः विश्वः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्या चर्नेत्रः विश्वः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्ष्या বর্ষির্ব্ধশ্বরমধ্যমন্ট্রপ্টির্ন্ শ্রীধ্বরী। মনমান্ত্রশক্তির্শীনের মৌর্ন্ বী। উষার্মী।

विश्व यः स्टः व्यूवाः देशः चत्रुद् यः दी।

यम्ब्यायाः स्वाप्ताः स्वापताः स्वापत

वाश्वयायान्त्रीवाश्वायायन्वार्यात्रस्यायस्यस्त्रह्मत्रायान्त्री

यदेःषेःद्रश्चेमशयःदर्देशसेदःदे॥ यदमःर्वेद्द्रदःयःषेद्रःयस्यवेद्द्याः इस्रायःवेदिः

विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास विश्वास्त विश्वास्त विश्

......दर्भित्र

रवःहिश्चाद्रसम्बद्धारस्त्रीया। १० वेशस्त्री।

ग्रेशयः मुश्यस्य यस्त्रय

न्श्रेग्बर्यः दश्चन्द्रन्दन्ते चिन्त्री। इ.च.कृत्देबः यञ्चरः यन्द्रन्। इसःग्वासिवः विदः विदः यो से सः दरा। न्यायवे देव दरगुव हैं य दरगा ७० र्श्वेर-१८८७ में दायर्केम माश्रुयारी १८८५ वयश्यक्षाञ्चयः यदिः हेर्ग्यायः द्रा। बुदिः दे र्येषः दे त्ययः पठकः प्रः।। गहेव र्घे से सहव र्षे ग्राप्त मान्या ५१

यस्व ने ५ ५ ५ ५ वे क्षेत्र या या। श्चायात्रस्य अर्थेशार्थेवाः हेवाया इस्रायागुन सिवेद विदासेन स्वा इस्रायान्त्रज्ञुनान्नानुनातेन। ५१ डेस्रार्स्सा

नेशन्यानी यार्रेयानुष्टीवायरी अवादमानी प्रमृतायर्रेश अर्देवायर <u> हूं बीबातपुरम्थिय मुंख्या जुलेय तीबातालया सैतबाक तापूरी ।।</u>

## श्रूवशर्तुग्या अधरःग्रेशःश्रूरःया

में केश्वराया महत्त्र साम् । विश्वराया महिला महिला महत्त्र साम महत्त्र साम महत्त्र साम महत्त्र साम महत्त्र साम वस्यस्य अत्रिक्षायदे । दिन्दे क्याय स्त्री सामाना विकासी निरायायहेवावस्य निरावश्चीयायद्। निरास्यायस्य निरायायहेवावस्य

विशेश यावादायवीयात है।

अवरःग्रीश्रयः धे:वु:चरः चले द्या १ ३ अः स्या

## श्रूवशयत्वाय। श्रून्रेग्यिदेश्रुरय।

निक्षास्त्रव्यस्य अप्तर्भित्रक्षेत्र स्थान्य अप्तर्भित्र स्थान्य स्था

स्वित्रयायर्थित्रे से स्वय्य स्त्री। १ वेस स्त्री। स्वयायदे स्त्रीत् यस्य यादे स्त्रीया स्वयायदे स्त्रीत् यस्य यादे स्त्रीया। स्वयायदे स्त्रीत् याद्याया 74 अर्देव हॅंग्य कुत के ययक्त सूद केत क्षेत्र थे। ग्रिस या दे कित्त न्येस सुवाय ही।

> हे.क्षेत्रःश्चेशःत्रश्चें.क्ष्यःश्चित्।। ह्वा.चयशःवाद्यवात्वीशःयश्चेत्रःयःव।। वशश्चरःदेवा.क्ष्यःत्रश्चितःयःक्ष्यः। श्चरःद्वेवा.विश्वःदे.यत्वेवःवेत्। १ वेशःश्चे॥

ग्रेशयाद्वयायराञ्चीदायदेः त्रूर् छेगायादी।

मदःकेंकेंबर्ग्यः वस्त्रयः विद्याः स्टायत्वेदः विद्याः स्टायः स्त्रयः विद्याः इसः श्चेद्रः केंद्रयः विद्याः वि

ग्रह्म्यायाय्यस्य क्षेत्रायेतः स्राप्त स्थान

श्रु देवा या देवा देवा मी शहें वा सा। ७ वेस सा।

नवि'यः गर्वेश्वःशुः सेन् य्यतः श्रुन् ग्वेषा सः दे। क्रे य्यसः नृत्यते ने सर्वेदः वेन्॥ ग्वेशःशुःर्स्यःतुःश्चेश्वर्धदःसुर्द्धाः र्केशःह्वस्रश्चम्वेशःश्चर्धेत्ःयःश्वी। देःवेदःश्चरःचेम्युवेगःग्वेशःसर्धेदः॥ ५ वेशःश्वी।

मेश रवःग्रीःषःर्रवःहिषुव ववःसन् मानिःवह्नवःवर्षसःसर्वःवरः

#### श्रेवश्रवमुर्या यवश्रवः र्क्शश्री

ॐ। विश्वभ्रायायन्त्रस्य हें स्वास्त्र हें। द्वारेत्री ह्या स्वास्त्र हें। द्वारेत्र हें।

ध्यायते देश्वेत् भुवि॥ व्यायकेत् यते क्रेंब्यम्यत्या। वियः शुरुष्ठ्यः गुवः क्र्यात्या। तेत्यः प्रस्थः गुवः क्र्यात्या। तेत्यः प्रस्थः गुवः क्र्याः ग्रेंब्यः विश्वः विश्व

ব্রদ্ধেন র্ন্তু বাষা মধ্রব র্ন্ধেন র্ন্তুর র্ন্তুর র্ন্তুর র্ন্তুর র্ন্তুর র্ন্তুর র্ন্তুর রান্ত্র রান্ত্র রা র্ন্তুর রান্ত্র রান্ত্ ব্রদ্ধেন নান্ত্র রান্ত্র রান্ত

बेला ग्रीका मार्वे व प्यादे हुं। सके दावी। रूपा हुन प्रे प्यान स्थाप कुन प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व संस्व के वार्षे के प्याप्त के वार्षे व प्राप्त के व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के व प्राप्त के वार्षे व प्राप्त के व व प्राप्त के व प्राप्त के व व व व व

द्यायाः व्यवस्य स्त्रात्त्र्यः विद्यायः विद्याय

इयायार्विः द्विः सायद्वेश्वः स्वा। यर्के त्यमुन् त्यम् त्यात्यात्यः स्वेदः तृनः ॥ इसः त्याः वस्यश्वः स्वतः स्विदः तृनः निष्यः स्वा। स्वाः त्याः वस्याः स्वतः स्वा।

विश्वाय व्याचित्राची व्याचित्राय स्रोत्याय स्रोत्यायकान्त्रित्यम प्रमृत्यायहै।

विश्वभाराः श्रुवः वश्वभाषानुवः यदे । न्यः वी।

द्वान्याम् स्त्रीत्रः व्यवस्थान्त्रः विद्याः स्त्रान्तः स्त्

यत्रैन्य सेव तमायह्या यदे ह्या दी

कुनिः विस्थान्त्रः श्रीतः श्रुप्तत्र वा। महत्त्रः महत्यामहत्त्र ने।। सर्देव हैं गम कुव की म यठन सूद केन श्रेंव से।

न्द्रान्तः व्याप्तः व

क्रम अदेशमञ्चरमञ्

78

श्रैज्ञान्त्रोट्ट्यान्याच्याः क्षेत्री १० द्वेद्याः स्ट्याः स्ट्याः

तुगायाष्ट्रयायान्यान्यान्याते र्नेवावी

दे.केर.शह्रेर.ता.मे.कुरु.दिहीर॥ श्रदशःमेश्वियःत्रर.दश्चिर॥ इ.कुर्यंत्रप्तियःत्रर्थःत्रर्थःत्रर्थः इ.कुर्यंत्रप्तियःत्र्यह्रेर्यः इत्यान्तःवेश्वःश्वरःत्रह्र्यः

स्ट्रिंग्यक्षेत्रः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रिंग्यः स्त्रीयः स्त्रीय

सर्वत्वे शुस्र हुः हुः ग्वेश्य द्रः ॥ ५ वे चुन्य कुन् श्वेर यन् ग्वेन वन्।। विषाक्षेत्रक्षेत्रयम्ब्यस्थार्श्वेत्रध्यम्। द्यायदेश्वेत्रस्थार्श्वेत्रस्थित्रस्थात्र्यम्। विषय्यक्षेत्रस्थार्थेत्रस्थित्।

सुगावित्रस्य वित्रस्य वित्यस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्य वित्यस्

र्बर्म्यः सेटः प्रम्हेटः व्यवस्य सुक्तः हुन्। व्यवस्य व्यवस्य स्थाने सुक्ते सुक्ते सुक्ते स्थाने व्यवस्य व्यवस्य स्थाने स्थाने

यन्त्रःयान्त्रेरः अर्देन्ययान्यः यान्यः यान्तः । भुद्धे दे दे दे स्व यान्य यान्य योग्यः यानु द्वा । व्याः अर्दे दः श्वुषः यानु दः दे स्व दे दे स्व योग्यः यान्यः ।। यदः योग्यः यान्यः अर्वे स्व योग्यः योग्यः योग्यः ।।

यदे यार्चे क्षेत्रयार्चे अक्रॅग्झूटा। भुवे वु र्चे कुष्ट सुरु सुने विष्ण्या। 82

म्राक्षित्रकारात्रम्बिवः विश्वावी। न्यान्द्रयार्वेदः सञ्ज्यः वेदः न्द्रा। श्रु व्याये ५ ५ मुनाय ५ ८ ॥ वैवः हु चै अश्यदिः श्रुः वे ५ ५ ५ ५ ।। १६ यव यग नेव हु इस य ने स दिया ग्रेनिस्यः श्रुप्तः सेन्द्रन्त्रायः द्रम्। <u> न्गु:ब्रुअ:श्रूवशःध्रेव:अ:र्ह्रेट्श:न्टः।।</u> ध्रम्देयद्रक्षेयद्री। १५ बदान्द्रम्पषशास्त्रीम्बादिष्यादान्द्रा। गुव वश्यक्ष व स्वाय प्र गुवः श्वेंद्राम् ४८:५८:श्वायः वै॥ श्चे प्राचानम् विद्यान्यम् । धुगावै भैरायया भूरायह्या प्रा धुग'रेब'अ८्टब'र्षेट्'बद'रेट'८्ट'।। वयावी ५ उटा ही देटा दूरा। यकुर्वि मेश्वर द्यर द्रा १७

स्वायायकेवायान्दाय्यायान्दा।। न्यमान्दार्यक्ष्यायान्ता। वास्त्रायकेवायह्यान्वास्यकेष्याः स्वायायान्दाः।।

चुवःचुश्यःदान्द्रभ्दश्यक्षःन्दः॥ अर्क्षेणःहुःन्यायःन्यान्द्रःवे॥ श्रुवःष्यदश्यःन्द्रःहेःश्रःश्रुवा। पद्भवेःवन्द्रःशःवन्दःनन्दः॥ १९

मृत्यायायेग्रयायस्य विश्वयाप्ता। प्रविश्वयायायेग्रयाय्यम्याप्ता। प्रविश्वयाप्तायम्यायम्याप्ता। भूगाप्तायम्यायस्य विश्वयाप्ता। ४० 84 মর্নি র্লিশ ক্রুব গ্রী শ নতন স্থন গ্রীন মী

श्चित्रं दे त्रिंशः श्रेशः त्रः व्याः विश्वः विश्वः व्याः विश्वः विश्व

चत्रीयः श्रुयः श्रुयः वाश्वयः दुष्यः द्वा वादः वीः द्वः ददः। श्रुव श्रे कदः चत्रेः स्वयः श्रुयः वाश्वयः दुष्यः द्वा

म्दर्भ श्रेत्य देश्चेत्यम्। वेश श्री

ग्रेशयाग्यम्भी द्वासर्पाया

तर्ते.ज.त्वत्र.त.के.क्रू.म्.ट्रे.ची। जेब.जूरी अथ्य.टे.जहर्ट.तपु.के.चेरी जेब.जूरी

ग्रह्मायाः क्रुवायी कर्पायते स्र्वायी

द्यायदे ह्यूया ह्यु हुव शेषक्या। ११ डेब बाँ।

त्तिजः भ्रीवः शुः तक्तरं तः वृ। तो सुवः जन्न कुः सी. सः तर्थे वन्तरः ता रूवः तक्षः तर्था । र्रटः सः तह्यः । कं. तः क्ष्यः श्रीयः शहरः तत्वे वश्वशा रटः सः तह्या स्तिजः भ्रीवः शुः तक्षरः दे.चलुब.प्राव्यः चाहे.ब्रीद.प्रदेशी प्रश्नाचे.ब्रीच्यः क्षे.प्रकट् त्यमःप्रदेशी क्रेश्वः क्षी

विश्वाय द्वेष्ठ त्यका है स स यह स्वत्य प्रमान स्वी

पश्चम्यायत्वेत्यायर्गेत्यात्रा

गुत्रात्रवार्त्रवार्येत्यात्रवार्याः वि।। इस्रायमानुमानार्त्रवाद्यान्यान्।। इस्रायमानुमानार्त्रवाद्यान्यान्।। इस्रायमान्यान्यान्यान्।। इस्रायम्

सदसः मुक्षः त्यसः द्वादः द्वा

 द्वेन्द्वेन्येग्वेन्द्वरस्यः प्रा देग्वेन्द्रेन्य्येन्द्वेन्यः प्रत्वे॥ इस्रायः पुरः प्रत्वेन्यः प्रत्वे॥ द्वायुष्यः यतुष्यः स्वायः या।

मेश्यत्यः मुं के के प्रत्यः के के प्रत्यः मुं मुं के प्रत्यः मुं

मुद्रेश चैम्फिन्तरा मझ्यर्यस्य । निर्म्य चैम्फिन्तर्यः म

अळ्जॱऄॖॸॱॸॆॱॵॱॾॗॖॕॾॱय़ॱॸॸॱ॥ ॸॆॱॾय़ॱॸॆॱऄऀॱॺॊ॔ॱॾऀऄॺॱॸॾॱ॥

ने'सबद'ने'धे'क्स'क्केव'वै॥ र्नेव पश्चमाववरिद्ययप्रमा १ डेबर्स्या

मिन्नेश्रायाम्बर्मा मास्त्राप्तान्त्री।

स्याव द्वायाम् इस्यायाम् क्कें र म मले थे मन्या के र र र र ।। क्रूबार्श्वेच त्यन्न द्वाया स्वी र्नेव पश्चमावव हे इस या मास्या। १ डेका स्वा

दबग्राचःमेशन्यांग्रीःवःर्रेवाहुःब्रीदायदेःसदःस्यागीःमञ्जदायर्रेशः शरूषे.तर्राष्ट्रेप्रतपुरम्थियविश्वाचित्राह्यः पश्चित्रचिश्वश्चरात्रात्रात्र्यं विश्वास्तर् र्ह्रवाश्रह्या ॥

क्चित्रम् क्चीः अविदार्थः चीतुः गाः राधः इत्रात्। विक्वेदाक्चीः विंदि द्वान्य द्वान र्वतायक्षेषायाच्चीयावच्चीयाचेत्रात्वाच्यावर्षा

श्चर-ग्रीअ क्वान्य श्वी अविदार्थे न्याय में श्वी श्वर श्वेर स्वान्य या न्या য়৾ৼৢ৽ঢ়৽ৼঀ৾৽য়ৣ৾ৼ৽য়ৣ৾৽ড়য়৽ঀ৾য়৽ৼঢ়৽য়ৣয়৽ঢ়ৠৣৼ৽ড়ৼ৽৻ঀৢয়৽ঢ়৽ঀঢ়য়৽৻৸৽ড়ঢ়৽ वर्षे॥॥

> *क्तु*व्यस्थान्यः द्वेत्रः द्वेतः द्वेतः वित्रः द्वस्य स्थानु मुजाइक्यावयायाचेकाचमुक् पुरुपा मुल'यदे'अर्दे'यदेव'अवश्वायाद्वअश्वीशःह्या

चॅर्-१८२ र म्रास्यकायर्का स्थित्यात्रे आवका क्ष्यका क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्र स्वर स्वरे क्ष्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय्य स्वय

त्वं गुर्-त्युर-संग्र-त्वे निविद्यः विश्वः व्यश्वः श्वी । ह्ये नुश्वः श्वे स्ट द्वे त्वः विद्यः विश्वः व्यश्वः श्वे । । स्ट स्ट त्वे व्यायः विद्यः विद्यः विश्वः विश्वः विद्यः विश्वः विश्वः

बन्कें र्र्ते त्यास्य प्रतातुः व्यवत्य यस्य स्वरः ॥ ने ख्रीसः यदि त्या क्रें व्यवस्य स्वरः स्वरः त्या स्वरः त्या स्वरः त्या स्वरः त्या स्वरः स्वरः त्या स्वरः त्या स्वरं के क्रें व्यवस्था स्वरः स्वरः त्या स्वरं स्व स्वरं के क्रें क्रियं स्वरं स्व

लुश्री क्रिंग्र-रि.क्रेंग्र.क्षेत्र,यांच्यंत्र,यांच्यां श्रेपद्मात्त्रम्यात्त्र,यांच्यंत्र,यांच्यंत्रम्यांच्यः श्रेपद्मात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्यात्त्रम्या

# श्रेतश्चीत्रः भ्री श्रूटः श्वेत्रः चल्याशः श्री।

#### **ॐ। ।ॐ**ॱसृष्ठेॱसेङ्के'हैं।

पर्वसर्द्वःचेत्रः देशः स्ट्रान्च । विद्यस्य यः सुद्यायः देशः विद्यस्य देशः स्ट्रान्यः देशः देशः देशः देशः विद्यस्य देशः सुर्यः देशः देशः देशः देशः विद्यस्य देशः।

#### ने.लट.श्राट्ट्य.ह्र्याश्रामुत्र.तन्त्रा।

नेशन्याधःर्याधेत्यःवी। द्रिंशःयायः यक्कित्येशः व्याप्तः विश्वात्यः यक्ति।। इसः गुत्रः सक्षितः केतः यसः नेशः केत।। देवसः वस्रवस्त स्त्रेतः विश्वायः केत।।

इस्रागुन्धर्दनःह्रॅग्बर्ह्ग्वस्यान्द्या। इत्स्यान्द्रिन्द्रास्यान्द्रम्थान्द्रम्॥ इत्रानुद्रम्थान्द्रम्थान्द्रम्॥ इत्रानुद्रम्थान्द्रम्थान्द्रम्॥ डेश ग्रासुद्रश यहा

मुं प्रत्न । प्राचित्र प्रस्त के प्रत्न कि स्वा कि स्व कि

#### गले:नेश

म्बिन्न्यः मुश्रास्त्रः विद्या मुश्रास्त्रः मुश्रास्त्रः

१) मेश्रक्तिः मृति द्वी य्वे स्वायि स्वी स्वायि स्वी स्वायि स्वी स्वायि स्वी स्वायि स्वी स्वायि स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वा

मुन मुक्षक्र स्थायत् । तर्म् मायते यने न प्रति यक्षित् । यम् माय विद्या मुन्य स्थायते विद्या म्याप्ति स्थायते स्थायते स्थायते । स्थाय स्य

या श्रीयःया द्रश्रःतरः तदीवः यत्।।

त्रक्षरात्री संस्थात्रस्थात्र क्षेत्रस्था विकासी विकास विका

तर्तिश्वीर्ति कर्त्वीरादेव लेवर्ते र्योग्नाराण्येव विश्वा विकानी स्वार्थिय स्वर्थिय स्वार्थिय स

यःयन्त्रान्तःयन्त्रात्ते। यदेव्या स्वायस्यायः स्वायः क्रीक्ष्यः स्वायः स्वयः स

चर्षुस्यवस्य स्वाप्तस्याम् वित्यतेष्य प्रम्याप्त वित्यत्य प्रम्य प्रम्य

- १) दे:वेशचेदःग्री त्रेंदी यशद्दांपिते र्वेशपश्चयात्रस्य वहा है।
- ये में त्रिया में त्रिया में स्वार्थ में स्वार्थ में स्वार्थ में में स्वार्थ में स्वर्थ में स्वार्थ में स्वर्थ में स्वर्य में स्वर्थ में स्वर्थ में स्वर्थ में स्वर्थ मे

म्बान्यायदी द्वस्य हें स्याप्य चेत्य प्रेत्य स्याप्य क्षेत्र प्राप्य प्रेत्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्याप्य स्थाप्य स्थाप्य

देशव गृबि वर्षे मः वद्शामी केंशा समाय उद्देश द्या पदेव पाय वि

### त्रश्राभेश

मृत्रेश्वायायायम् स्त्राची अळव त्रे दिन्न या या व्यवस्य उद् श्रुप्त यो प्रम्य स्त्रिय स्त्रिय

दे.लट.जश्र-दे.चोश्रंश स्रचा.कुष्ट.बी.चोट.चचा.लंच.ची.ची.ची.ट.ज.लूच.

द्याचेना ता केन त्राप्त स्त्र त्राप्त हो। यदी भूमा वित्र स्त्र स्

क्रॅन्स्स्याने न्यास्य स्वाप्त्र विष्णा क्रिया मिस्स्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र

- १) नेशचेर में क्षेत्री चुर स्वा शेशश्राद्य स्वा मिले से शहेर भेता

वसःमेश्वरिः वदः स्टायः सेन्। विश्वरिः व्यापिः विष्यापिः व्यापिः विष्यापिः व्यापिः विषयः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः वि

विं रदः रदः चित्र के वें प्रमास के हिंग स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वापत के स्वाप्त के स्वा

### क्यायाष्ट्रेव।

पश्चायास्य अवित श्रीः अस्त्र हें पश्चितः स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्

१) हॅ्बाबाक्युदिः इसायावी वाले यने दाय यत्ने त्याच्येन्यति इसायाक्षे हवा यात्याक्षेवाबायञ्च दुवान्दा वेवा के दावी त्यस्य वेश्वास्था सर्वेदायस त्याचेन्यति इसायाची विवास के द्वारा यत्ने त्याची स्थानिक स्थान

ने त्यायदार् व द्यायदे नव्यायदे नव्याय्ये नव्याय्ये न्यायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स् नव्यायः स्वायः स्वायः

देः व्यटः द्रः देः विद्युः दुग् विः ख्रमः गृतेश्वः विः व्यटः द्रग् व्यटः द्रश्चेश्वः वः द्रः व्यवः व्यवः विश्वः व्यटः विश्वः विश्वः व्यटः विश्वः विश्वः

देःयः द्रार्थः सूत्रा प्रस्या ग्री प्रदेतः यदिः सूद्र केषा साप्तवे धी स्थयः क्रवः थेः

चन्त्राया केंद्राने श्रापदे प्रचेत्राय विश्वास्य विश्वा

यद्य यात्र क्र्य नेयायद्र त्यात्र क्षेत्र स्व व्यास्त्र विद्य व्यास्त्र स्व व्यास्त्र विद्या यद्य व्यास्त्र विद्या व्यास्त्र क्षेत्र विद्या विद्या

श्रुं तेश्वायदेग्वर्जे न्या देश के न्या में त्रित्य के न्या क

त्रुतः व्याप्तक्षानीः यदेवः यदेः स्थापः क्षायः भेषः श्रीदः क्षेत्रः यद्यादः स्थापः विश्वादः विश्वादः

र्वेव र्वेटर्शयर कुषीव विट पट द्वा धर व देवे कुर शुव य से द्वा के दर: व्रथः वर हें वृक्षः वर्षे हें दे त्य गुक् त्वुदः वी वदेवः वः त्यः केंक्षः वेका वर्षः वर्जेर्'य'स्थानेरा

यद ५ सूरे वन वरुका मुं सुद यें तर् हेन वा वहेन नका हु वा ही अरे जबार्ट्स्व्रेब्र्स्य्यायात्रीवारविदाला लदार्वात्यर वारविदाशारविदाना तुदर:ब्रुच:य:अेर क्रेंशय:५र:व्यःचरःहेंगशयते:र्त्वे:रे:य गुतःद्वुरःनी यदेव या वार्क्स के साय दे यो के सा बेहा हो या

षद-द-क्षेद्र-ज्ञवा-चरुकानी-सिद् चें-तदी-केद-त्य-चहेव-वकान्नी-च-सि-सदि-जबार्षेषः सूरकारा जार्स्याका र्वेषा पर्वेषा ग्रीयः रयः रि.स्री खेटः। चर-व्रञ्जेःश्चेःश्चेःत्रःविषाण्याम्। द्वरःश्चेतःचःश्चेतःश्चेत्रःसः द्वरः नरः र्हेग्रबायते र्ह्ने दे त्यः गुतः त्वृदः गै पदेवः यः तः हेशः श्रुः वेशः यदे पहेंदः यः वेश बेरा

*ષદ-દ-ભૃતિ: = ग' - च કરા શૈ! હ્રદ-દોં : તર્દ- : જે દ- : ક્ર્યું: ' વ્યક્રી: વ્યક્રે: ત્યક્ષ-દ- : જે ફ* য়ৄৼয়৻য়৻৴ৼ৻৾ঀ৾৾৽য়৾য়৸ড়ড়৻৻ড়৻ৠয়৻য়য়৾৻৸ঽ৵৻য়ৣ৾৻ঀৼৼৣ৻৻৸ৠৢ৾৴৻৸য়ৢ क्रेंब खेब बेद खट द्वा पर व क्रेंब खेब क्षेत्र वाद दुः खट शुद्ध व क्रेंब य'न्रम्ब्रयम्म्र्र्वाश्चर्यते'र्ब्वे'ने'य'त्तुव्यव्यूट्यनी'यनेव'य'त्य'हेशाशुःनेश यदेखे:मेशक्षाबेराहे। ने क्ष्राव त्युव त्युव वी यनेव यदे स्नून हेवास यवेद्॥

वर्षेषा'यदेव'ग्री'स्या'ठव'श्नद्'ठेषा'या'यबे'दे। श्रु'दव'त्यश्यद्श्यः चन् अर् इस्य प्रत्ये स्टर्ने लाक्षु लक्षर् र केंद्र तश्र दवश्वतुः भूषा तस्य कुः स्ट्रिंद्र द्विस विद्यापने द्वारा नामा स्ट्रे सुर स पनः स्व प्रमुद्धाः विश्व के मान्य प्रमुक्त प्रमुक्त

यम् क्षेत्राचित्रं में दे त्यात्य्येय यहे व त्यात्या क्षेत्र के स्वायत्ये यहे के स्वायत्य व क्षेत्र के स्वायत्य क्षेत्र व व्यायत्य व क्षेत्र व क्षेत्र व व व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व व व क्षेत्र व व व क्षेत्र क्षेत्र व व व क्षेत्र क्षेत्र व व व क्षेत्र क्षेत्र

इस दे.क्षेत्रः व.त्यूचा तद्वे ची क्षेत्रः व्यः कु क्षेत्रः वे व्यायः त्वे त्या विद्या विद्या

यंत्राचर्वं ग्री:संज्यः व्याम् स्वास्त्राच्चेत्रः व्याम् स्वास्त्रः स्वास्त्र

नेशनित्। बत्तर्म पर वर्ष्णुन्य पश्चेत्रः शुर्य पार्थेन ह्या पर्वेत्रः स्वाय स्वाय स्वयः स्वाय स्वयः स

त्तरायनेत्राया हेशाश्चानेशायर वेत्र वेत्रावेशावेशावेशावेशावेशावेशायर वित्राव्याय स्त्राव्या व्याव्याय वित्राव्याय वित्रावय वित्राव्याय वित्रावय वित्रावय

णः नेश्वाच्चरहे। त्याची चन्द्राचि त्याची चन्द्राचि त्याचि त्याचित् त्याचि त्याच त्याचि त्याचि त्याचि त्याचि त्याच त्याचि त्याच त्याचि त्याच त्याचि त्याच त्याचि त्याच त्

दश्चिमास्यामिक्स्या। द्वाप्तान्त्रा व्यक्षः व्यक्ष्यान्त्राचित्रः व्यक्ष्यान्त्रः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व द्वाप्तान्त्रः व्यक्षः व

ध्रिन्द्रो पार्वु खंशकाद्यातंद्र जीवाबालुच तकावावच दि चेकात्य द्विता । स्वास्त्रव चेकानी मुकानी स्वास्त्रव नी क्षेत्रव क्षा चेकाचेका पार्क्षव का नेकानी स्वास्त्रव द्विता । स्वास्त्रव चेकानी क्षानी प्राप्त क्षा नी क्षा प्राप्त क्षा चेका चेका पार्क्षव का प्राप्त क्षा चिकानी स्वास चिकानी स्वा दर्ने ने न्तु स यदे खुष्य अप्येव यशायशन्द यं यश में यदे यदे हुँ र दर्दे र यमें द्राय यदे खुष्य अप्येव यशायशन्द यो यश में यदे यदे हुँ र

देश व से श क्रुव्य में त्र स्वा य प्येव। यदीव ग्री श यश्वा य यि ह्या य प्येव। यदीव ग्री श यश्वा य ये श्वा य प्येव।

१) हॅम्ब वेद्राची र्त्ते वेष्ट्र प्यत्र प्यति वेषा केत् ची यस से बादे केद्र

धेवा

द्र) म्र्रिंद्वाह्मस्यायाद्देश्वरह्ममह्मास्याद्वी वेषाळेदाचीः त्यस्याव्यस्य हेन स्याप्तरह्माबायदेः त्यस्य क्षाप्त द्र्याप्त क्षाप्त क

# स्यायाष्ट्रिव म्ब्रुय ग्री सुर्देव।

म्लेश्याय अर्द्धेव प्राप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वापति

यमनेश्वी वन म्हानीवश्ची वन महानेश्वी विष्या के वा में विषय के व

इसासिव दी स्ताउव बीबासायसूबायते व्यवस्था के बाह्य

 यतः ब्रीम्य द्या यत्रम्य स्वाप्तम्य स्वापत्तम्य स्वापत्तम्यस्य स्वापत्तम्यस्य स्वापत्तम्यस्य स्वापत्तम्यस्यस्य स्वापत्तम्य

## 

त्य। १) रचे: प्रत्रे प्राप्त क्रायम। १) रचे: प्रति स्य अवितः प्रस्थ रसः स्वतः व

- मश्चराश्चे स्वर्धान्य स्वर्यान्य स्वय्यान्य स्वय्यान्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्व

षदःषश्चान्ते सन्देश्चित्रः स्वत् प्रति । स्वत् प्रति । स्वत् प्रति । स्वत् ।

देशक्षक्ष्याम् अस्य स्दिन्द्वे साम्रिक्षम् म्युक्षम् मुक्ति स्वास्य स्

वस्त्र मिन्न स्थान स्था

## अभिवागश्चराम् । स्वार्ष्ट्रसायहेवाय

- १) अविवागश्चार्यस्याची अस्व किन्। इसाय वस्य क्रिक्षे यासेन्।
- ४) हे.के.च.शहेब.तपु.संश्राधिय.बी.शक्य.कुरी चेब.वेपु.संश्रात. वश्रव.वे.कु.च.शहेब.तपु.संश्राधिय.बी.शक्य.कुरी चेब.वेपु.संश्रात.

#### 104 শ্বশবলুব গুর্হ ধ্রা

द्रभ यात्र त्युक्षाय अर्देव सुअर् दुर्मिक य धिव व्या। इस यात्र त्युक्षाय अर्देव सुअर् दुर्मिक य धिव व्या।

त्र-विश्व तका कु श्रुं - ता शिव्रेय तारु क्षिया शिव्रा श्री कु श्रा श्री - विराधित तका कु श्री - ता शिव्रेय तारु क्षिया तका कु श्री ता तका कु श्री वा तका कु र विश्वा तका कु र विश्व तका कु

पानिकारा त्राम्य स्थान स्थान

- १) तम्रान्त्रस्यान्त्रीयस्य हेन्द्री तम्रान्त्रस्य मेन्द्रम्य
- ४) हे.के.च.शविष्टातु.त्वश्चान्चेश्ची.शक्ष्ये.कुटी त्वश्चाबिशःब्रैटाच. विश्वभाषीट्रात्तु.कुब्राकुट्राह्मविश्वाचान्द्रा
- यः स्टायबैद्वासेन्यः सुद्धाः स्टायः स्वायः स्वयः स्

**ঀ৾৾৽য়৽য়ড়ঀ৾৽ঀ৾ঀ৽ঀৼ৽য়৾৻য়ৢঀ৽য়ৼ৽ড়ঀ৽ঢ়য়৽ঢ়য়৽ঢ়ঀঢ়ঀৼৼ৽ঢ়৾ৢঢ়ৢ৾ঀ৽৾৾ড়৾য়৽** 

त्रुन्त्रा प्रकाशकात्रकात्री क्षेत्र प्रमान्य स्त्रित्त्र क्षेत्र क्ष

विश्वायश्चर्रः क्षेत्रायाष्ट्रियः प्रत्याय्यात् स्त्राय्यात् विश्वायश्चरः स्त्रायः स्त

मृं श्वे मिलेश्वर्याण्य हें न्यव नेश्वर स्थान स्थान स्थान स्थित स्थान स्यान स्थान स

ग्राश्चरायान्विः नेशाययरास्रस्त्रं तेर्त्युः रेशान्यायस्य देशाय्यस्य

कृत्यार्थित्त्री।

कृत्यार्थित्त्री।

कृत्यार्थित्त्री।

कृत्यार्थित्त्री।

कृत्यार्थित्त्री

कृत्यार्थित्त्री

कृत्यार्थित्राच्चित्याच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्राच्चित्रच्चित्यच्याचित्रच्चित्यचित्रच्चित्रच्चित्रचित्रच्चित्रच्याचित्रचित्रच्चित्रच्याचि

विश्वास्त्रम् विश्वास्त्यम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्यम्यस्त्रम्यस्त्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्य

देशवाधीयव्यक्षिणश्चाधीयविष्यवी क्षत्रमार्थिवविष्यवी विष्यवी क्षत्रमार्थिवविष्यवी विष्यवी क्षत्रमार्थिवविष्यवी विष्यवी क्षत्रमार्थिवविष्यवी क्षत्रमार्थिव क्षत्रमार्य क्षत्रमार्थिव क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम्य क्षत्रमार्यम

## वयशर्श्वेर यायते।

मानेश्वायात्र श्रें प्राचायात्र श्रें प्राचायात्र । अध्य के प्राची स्थान स्थान

त्रस्यं क्रियात्राव्यं क्रियात्र क्रियां यहित महायात्र क्रियात्र व्याप्त क्रियात्र क्

त्यान्यः स्वान्यः स्

इ.फे.चतुःशविचाबिशातर्वं सावसावस्थात्रं शात्रं अविचाबिशातर्वं स्था

यक्षिं अत्वाह्म स्टर चलित यदे भित्र है से च डेश च है पित स्टर स्टर पित्र प्रम्य प्रमास्त्र प्रमास्

हेश पर्वित्यति स्थात्त्र स्वाद्ध स्वाद्ध श्री स्वाद्ध स्वाद्य

त्रित्वा व्याप्त विद्या विद्य

देशवःमादःवन्याकिमामीःक्कृतःताहेशःर्वेदाःग्रीःअन्निवःदाःमाश्च्यायदः

पर्वमान्त्री-प्रश्चिष्टं मार्श्वभावर्श्चेश्वमान्त्राच्या । इसासूच ग्री-प्रश्चिष्टं मार्श्वभावर्श्च्यां भ्री-श्राम् ह्रास्ट्रेन् प्रश्चिष्टं मार्श्वभावश्चः स्थान्त्राच्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्याः विश्वमान्याः विश्वमान्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्त्राच्याः विश्वमान्याः विश्वमायः विश्वमायः

 देशक्षेत्र प्रति विश्व विश्व

- र) अनुअन्यर्गविषाचित हे क्र्रीं स्त्रीं अर्बन के निर्मा स्तर्भ स्त्राचित स्त्राच स्त्राचित स्त्राच स्त्
- त्र। ज्या क्रिंस्ट्रिंग् क्रिंडिंग क्रिंग क्रिंग प्रमुं अप्या है। दे ज्या प्याप्त विद्या है स्ट्रिंग क्रिंग क्रिं

याः। युत्रहेंचःपाश्चरःचःपार्यःचित्रभेरःपाश्चुःभःदिरःवेशःपरःपुत्रः विश्वहेशः विवाद्यः विवादितः पात्रः विश्वविदः यो देः वेदः प्यभः प्यसः प्रदेशः विवाद्यः विवादः विवादः

क्ष्यःग्रीक् म्ह्र्य त्या विकास मान्य विक

कृतास्त्री।

दिक्षेत्रायः अधिव नाश्चित्रायः विश्वायः विश्व

म्बार्यायास्य में के निर्माति हों माना ताला स्थान स्था

र्केंच ह्रम चर्चर स्टा हेस ह्याम श्रु भवीष क्षेत्र विश्व त्री स्ट इ.च. त्र त्र वर्ष क्षेत्र त्या

ব্দ র্ল মধ্য শ্রীশ মর শ্রুমান র্বম শ্রী মর্কর কিন্ বী। মন্ত্রির শাধ্যম बुंबर रेस बुंब नर्झेस म है। दे ता रेस बुंब नर्झेस त्याब दे। वेग केंद्र बुं ग्र व्या नहिन नित्र परित य प्रतिश प्रश्रूष परि स्विर रद्ध मी क्रिय वसक उर यद रग यर व रद यविव सेर। राव हैंय हु हु स सर हैंक प्रमाश का क्ष्मिन की नामित का स्वास न्या देव क्षेत्र मान प्रमाश के मान यम हें ना साम हों है मादि ने स धेव या मादि ने हैन नम से मादिन सेन् यर गान्त वायवस वसायर्से स वसा ने ररायलेवासेन्यरहें ग्रास य दे ताया ने व विदालित। ताया ने वा विं रदः वी वा विं रदः रदः य विदायी यर मिन्द्र व स्वर्धात्र व पर्ह्मेश यहा दे रूट पर्वत से पर मिन्हें पर्ह हेंग्रास उंसाता वाले मेरा समायाम नेस ने किन की वाले पानेता पानेता क्रिं-दादिः से हवा दाः वार्सिवाका ग्रीः है ख्रेन क्रिं-दा नदा। वास सास वासः निष दे.कुर.ज.लूर.चषु.ईब्र.चेब्र.ईब्र चत्र्र्य.ज ब्र्याब्य ग्री ल.चेब्र ग्री.ईब्र.च.इ. हेर र्षेर य रे र्व वश्य उर यर र्वा यर तर य विव श्रेर हें श्रय व्या न्यायरावार्यवेवासेन। श्वार्ष्ट्याष्ट्रश्चुःस क्षास्यर्हेग्न यरानुसावस र्वेदन्द्रशर्वेदन्तुःर्वेअय्यदेःकेदन्तुःचर्क्केअय्यरः व्वेदन्यः धेदा

द्वाशुरद्देगाःहेवः पदिः पर्द्वेशः द्विरः ग्रीः वेशः रपः ग्रीश्रः अविवः ग्रह्मश्रः व्यायः ग्रीशः रप्देशः पद्वेशः यद्वेशः पद्वेशः पद्वे

मश्रम् नर्से महिन प्रतिस्थान्य प्रतिस्थान्य मश्रम् मश्रम् नर्स्य प्रतिस्थि प्रतिस्थान्य प्रतिस्य प्रतिस्थान्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्य प्रतिस्थान्य प्रतिस्थान्य प्रतिस्य प्रतिस्य

स्यान्त्रस्य ) ह्राय व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

#### 114 ଖ୍ୟୁ ଅଧ୍ୟ ଅଶ୍ରୁ ଅଧିକ ଶ୍ୟୁ

पति प ब्रुट् हेन अरे ब्लेंट प वाया अर्डन हेट की ब्लेंड पर वेंच र्सि पज्ज प्रदान के अर्ज के अर्ज के विकास की अर्ज के के कि विकास की

न्द्र मुन्डिंग अदि हुँ न वर्स की सहंद है न है। ये सिंड न वर्स की सहंद है है। ये सिंड न वर्स की सहंद है। ये सिंड न वर्स की सहंद है। ये सिंड न वर्स की सिंड न

(मृद्धेश्वायः) अव्ययम् मृद्धि साम्यायस्य स्त्रित्व स्ति स्त्रित्व स्त्रित्व स्ति स्त्रित्व स्त्रित्व स्तित्व स्त्रित्व स्ति स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्ति स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्ति स्तित्व स्तित्व स्ति स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्तित्व स्त

(गश्याया) हेश वेंच ग्री श्रून हेग यदे हुँ मानदी सक्त हैन है। है।

पानिकाम् की के प्राप्त की के प्राप्त की कि प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की की प्राप्त की की प्राप्त की की प्राप्त की प्राप्त की प्राप्त की की प्राप्त की की प्राप्त की की प्राप्त की

दे, देशका ग्रीका स्वयका क्षेत्र याया विद्रास्य पश्चराया त्री वि

## क्रॅश्रभु र्देश पञ्चर पा

म्बुं प्राप्त के अञ्चल के स्वाप्त के स्वाप्

मैंस पूर्व पुर्व मैंद्र जा लूट ता प्राष्ट्रिय बार्सिंग टी प्रमिंत ता लुप पूर्व । वास्त्र प्राप्ट्र या वास्त्र या वास्त्र

पक्ति-दिश शहूर हूं बंदा पक्षिय विश्व प्राप्त है है जब कर बहुव है है ज प ज भट्टें-मैश्र पहुंद्र-पर्देश ब्रिश बीश बीश बोश परिया विश्व कर बहुव है है ज प ज है में श्र प्राप्त हैं बंदा प्राप्त के प्राप्

### र्देशर्ये प्रमुर्गी स्यस्स्रम्

गु देश्यमानावयः में भारत्री वित्तक्ष्यं में मान्यस्य मुमानावयः में भारत्ये स्थानाव्यस्य में भारत्यः स्थानाव्यस्य स्थानावयस्य स्यान्य स्थानावयस्य स्थानावयस्य स्यानावयस्य स्थानावयस्य स्याना

मिथेशतः ह्यू रायायवे शासस्यसम्पर्णा स्ति यायतरायवे तस्य

त्रः मृत्ता स्वाप्तायाना स्वरः तुन्वा स्वयः स्वाप्तायः स्वरः स्वयः स्वय

मन्त्र में संस्था हु हुन य तर्ने हें स्व न स्ट्रें मान यर स्ट्र यदि यन यम्बान य ने केंग्र कें ने संस्था निर्माण यर स्ट्रिय यदि स्व मन्त्र में संस्था हु हुन य तर्ने हें स्व न स्ट्रें मान यर स्ट्र यदि यन

सिवान्त्रकृत्वान्त्रीयात्रकृत्वा विकान्यकृत्वान्त्रियात्रकृत्वा सिवान्त्रियात्रकृत्वा सिवान्त्रियात्रकृत्वा सिवान्त्रकृत्वा सिवान्त्रकृत्व सिवान्त्रकृत्वा सिवान्त्यकृत्व सिवान्त्यकृत्व सिवा

र्या अर्वेद्यान्द्यक्ष्म्यायते त्यस्य स्त्राच्या स्त्राच स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्

### 118 শ্লব্য বক্তু বু ফুঁন গুরা

म्ब्रुं र अर्घे पर्बे अ नश्चि व र्षे के की स्था व स्था की स्था की स्था व स्था की स्था व स्था की स्था व स्था व

भ्रदः केषा वाकेषाः अदिवः हिष्या श्राह्म स्वा

ब्रियाम्ब्रुट्यायस गुप्त विं।

दे दिश्व मा मिन हों राय यहित मा अस्त्र मार्स मा यहार या पिन हों।

म्बर्स्य प्रस्था त्या ही त्या प्रस्था ही हिता प्रति प्रस्था हो। विकाल स्वर्सी। त्या स्वर्स स्वर्म स्वर्भ स्वर्म स्वर्भ स्वर्म स्वर्भ स्वर्म स्वर्भ स्वर्थ स्वर्थ स

### इयायविव की केंबायहा

वश्या क्रम क्री क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र चित्र चित्र क्षेत्र चित्र चित्र क्षेत्र चित्र चित्र चित्र क्षेत्र चित्र चित्र चित्र क्षेत्र चित्र च

तुर्व व्री जिश्राक्तर्वे के क्षूचीश्राक्षर्वरा हैं स्वाया विष्ठ त्राव क्ष्ये व्रावित क्ष्ये व्राव्य क्ष्ये व्याव क्षये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्षये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव क्षये व्याव क्ष्ये व्याव व्याव क्ष्ये व्याव क्ष्ये व्याव व्याव क्षये व्याव व्याव

र्म् स्वायम्यान्त्री मुं वद्यान्यम्यम् स्वायम् न्त्री म्यायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वायम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्

तथानश्चरः वका निर्म्हन अभक्षान्यत्वे स्थान श्वरः क्षेत्रः व्यान्यत्वे स्थान स्थानश्चरः क्षेत्रः अभक्षः विद्यत्वे स्थान्यत्वे स्थान स्थान्यत्वे स्थान स्थान्यत्वे स्थान स्थान

र्यदे पश्चप व अवत र्वा पश्चरम य विश्व भी व है। कुरायर वावन रु

मुक्ता मिन्स्य द्वी में 'क्क्रिय क्ष्र के क्ष्र

मी दुशार में ते ताला मित्र क्षेत्र क्

देश्या (दर्सा) श्रुप यदि हेत श्री श्राह्म के दिया वर्षे माले स्वार्थ के दिया प्राप्त के दिया प्राप्त के दिया पर्य माले स्वार्थ के स

यान्यावित्र क्षेत्रायान्य स्त्र अस्त्र क्षेत्र ह्र्या स्वाय स्त्र स्त्र

पश्चिम्यः हो। पश्चिम्यः स्त्रिः विश्विष्यः स्त्रिः विश्विष्यः स्त्रिः विश्विष्यः स्त्रिः विश्विष्यः स्त्रिः स्तिः स्तिः स्तिः स्त्रिः स्तिः स्त

विष्यं सूर्यं यः स्टानी रें कें ता विले ता इटा वें कें किये सूर्यं वें

सक्त हिन्। यर द्वित हुना त्य में करि नाईं त त्यु स नहस्र य है। शेसस इत वसस उन में नेंत हुन्नु नाइस सम केंत्र में नाइस में केंत्र हुन दे यर द्वित हुन ने नेते तर हुन हुन हुन कर नर हमस हुन्न रस हुन कक्तेत्र में नामें नर में भीता

जुन ताल पर्ड्स रखीं वार्ड्स पर्ट्स पर्ट्स प्रमा है। ह्या स्था है वार्ट्स प्रमा है। ह्या स्था है वार्ट्स प्रमा है। ह्या स्था है वार्ट्स है वार्

र्म्या वित्र क्रामास् योत्या यायार्स्त्र त्या मायस्या यात्रे त्या मायस्य वित्र त्या मायस्य वित्र त्या यायस्य वित्र त्या यात्रे त्या स्था यास्य यात्रे व्या स्था यास्य य

द्रिया स्ट्रिया प्रत्या स्ट्रिया स्ट्र

## यमनेषाग्रीःकेंबायसुगिर्सेग

म्कृष यात्रास्त्रेकारीः क्ष्यायञ्चार्वम्यात्त्रेषाः यस्त्रास्त्रीः व्यस्तात्त्रीः व्यस्तात्त्राः

प्या निर्मा से प्राप्त में के ब्राह्म से प्राप्त निर्मा में के ब्राह्म में प्राप्त निर्मा में के ब्राह्म में क

द्रम्यानी क्रिया प्राप्त स्त्री स्ट्रिय प्राप्त स्त्री स्त्र प्राप्त स्त्र स्

त्तुः क्रियात्त्र भ्रम्यात्त्र क्ष्म्यात्त्र द्वा व्याप्त त्या क्ष्म्य त्या क्ष्म्य त्या क्ष्म्य त्या क्ष्म्य व्यक्ष्म व्यक्ष्म व्यक्ष्म व्यक्ष्म व्यक्ष्म व्यक्ष व्यक्ष्म व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष व्यवक्ष व्यवक

श्रिय दिस्त्र य स्त्री स्वास्त्र य स्त्री स्वास्त्र य स्वास्त्र स्व

न्या प्रस्तियात्र माने स्वर्धाः विद्यात् । यहा विद्यात्य स्वर्धाः स्वर्यात्य स्वर्धाः स्वर्यात्य स्वर्धाः स्वर्यात्य स्वर्यात्य

न्दः संस्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः

द्रमश्राम् त्रम् क्षेत्र त्राम् क्षेत्र त्रम् क्षेत्रम् त्रम् क्षेत्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् व्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् त्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् त्रम् व्यवस्य क्षेत्रम् व्यवस्य व्यवस्य क्षेत्रम् व्यवस्य व्यवस्य

मिलेश्व प्राचित् प उन मिलेश्व प्राच्या विश्व प्राच्या विश्व प्राचित्र प्राच्या विश्व प्राचित्र प्राच्या विश्व प्राच विश्व प्राच विश्व प्राच्या विश्व प्राच्या विश्व प्राच विश

महिनायार्थे सामर्थायन स्विन्ते। पक्षेत्रपात्ता प्रमायात्ता प्रमायात्ता महिनायार्थे सामर्थे स्विन्ते स

यस ने विव यर वशुर व धेव।

माने सार प्रस्ति स्वास्त्र के द्वी प्राप्त प्रमान स्वास्त्र स्वास

यम्यक्ष्मिं यम ब्रेन्या मुक्ता स्वा क्ष्मिं यम स्व व स्व क्ष्मिं यम स्

मानेश्वाय निक्षां यस्त्र प्राप्त स्वर्धां स्वर्यं स्वर्धां स्वर्यं स्वर्धां स्वर्धां स्वर्धां स्वर्धां स्वर्यं स्वर्धां स्वर्धां स्वर्धां

श्चीय य न्या यम चेन य है। अल्य यत्या हु केंब हेन केंद्र य हेन हें या बाब स्वा केंद्र केंद्र यह होने स्वा विवा

## ग्रिनेशमीःर्केशन्त्

पर्यात्वा विश्व मान्य प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्त

त्याचिषाः क्षेत्रः विश्वायत्याः स्त्रः विश्वायत्याः स्त्रः विश्वायत्याः स्त्रः विश्वायत्याः स्त्रः विश्वायत्य स्त्रः स्त्रः विश्वायत्य स्त्रः स

या श्री श्री श्री क्षा व्यक्त क्षा क्ष्री या श्री हैं है के में प्राप्त स्था श्री हैं स्था व्यक्ष स्था श्री हैं स्था व्यक्ष स्था श्री हैं स्था क्ष्री हैं से से स्था क्ष्री हैं से से स्था क्ष्री हैं से स्था क्ष्री हैं से स्था क्ष्री हैं से स्था क्ष्री हैं से से से स्था क्ष्री हैं से से से स्था क्ष्री हैं से से से से स्था क्ष्री हैं से से से स्था क्ष्री हैं से से से से से से से

क्री.क्री.श लुच.तापु.ख्रीम। वयमाश्रोधमात्मात्मात्मेट योज यमाजयमात्मे विष्ठा म्राज्ञेन सम्मानम् विष्ठा व्यमाश्रोधमात्मे प्रमान्ते क्षेट्र स्ट्रीट्र हे. क्षेत्र म्राज्ञेन सम्मानम् विष्ठा स्वतः त्रिम सम्मानम् विष्ठ जमान्त्र प्रमाने स्वतः स्वत

 यश्चरम् यते व्यस् अपस्य य न्य यस्य यस त्यस सु सु स्यस

म्बुस यामिन से यदे होत्य या या या से सब्द हिंग्या ही होत्य दि। देदे महेद सेंदि होत्य महिन या या या से सब्द हिंग्या ही होत्य

पट द्वा. पा खेना निष्ण की माले ने सादी विषण कर की माले ने साची की सादी की साद

मिनेश्व प्राप्त के स्व प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रिम प्रत्य प्रत्य

मुद्रेश्वा संयाय व्याय क्षेत्राचा के द्वी क्षेत्राच के द्वी व्याय के या विषय व्याय विषय व्याय के या विषय व्याय व्याय

विष्यात्मा विषयात्मा विषय

प्रामुक्त क्षेत्र।

स्य प्रवेद क्षेत्र प्र महें नाम वस प्रमुक्त स्य क्षेत्र स्य क्षेत्र प्रमुक्त प्रमुक्

म्बिश्चन्यः भ्रीत्वः भ्रीत्वः स्वीतः स्वीतः

मुर्बेर-प्रमास तम्ब हुन हो। मुं र प्रमास क्षेत्र क्षे

स्वात्त्र स्वात्त

विद्यावित्यव्यक्त्र्याचित्र क्ष्याक्षेत्रस्थान्त्र विद्याचित्रस्थाः विद्याचित्रस्यस्य विद्याचित्रस्य विद्याचित्रस्थाः विद्याचित्रस्याचित्रस्य विद्याचित्रस्य विद्याचित्रस्

न्सव तु नानव वस से सुद यर घेन केव य निष्ठेन यव कर नद नैस गुद

सक्ष प्राचित्त के स्था के स्था प्राचित्त प्राचित प्

 महिन धिन। स्व पर: शुर हैन हैस प या संग्रास परे हूँ न यस मु हेन में पहास प महिन धिन। स्व पर: शुर हैन हैस प या संग्रास परे हूँ न यस मु हेन में पहास प महिन धिन।

स्वित तर श्रीर हं कुच त्या भीय तर हो ने त महिमा लुवा मिया तर हो ने त महिमा लुवा न तर श्रीर हे हुच न त महिमा न तर श्रीर है हुच न त महिमा न त है न त न हुच मिया हो न त न हुच मिया हुच मि

# में सेंदि सेंबायतुवा

के सिंदे के बायतुन ने। दें निक्षे के सिंदा के सिंदे के सिंदा पर्वेन

पर्श्व में प्रति व्याप्त का कि के में प्रति के में प्रति

द्र में त्या प्राप्त के प्राप्त

चीरः वाश्वरास्त्र क्षेत्रः स्वरः स्

य र में भी पक्ष बय रेंदि रेंक्ष कि । हेका वेंच हु सावित मार्थ हु सावित स्वा कि वा कि

भू देन नावन ग्रीमानम् मार्केन्य प्रेमा पर्य सर्केन से स्रोत सर्केन्य प्रिमा प्रेम प्रिमा प्रिम प्रिमा प्रिम प्रिमा प्रिमा प्रिमा प्रिम प्रिम प्रिमा प्रिमा प्रिम प्रिम

यन्ना श्री ह्रम य त्य श्रीमश्र य पति। य श्रीमश्री स्व यह स्वीत् यदे यह स्वीत् यदे स्व यह स्व यह स्वीत् यदे स्व यह स्वीत् यदे स्व यह स्व यह स्व यह स्वीत् यदे स्व यह स्व य

(बार्बिश त.) पर्झेश जन्न के मू जा बार्ध जना रेट तू पर्झेश जना के र्भें ता नर्देश ही अर्द्ध हेन ही। क्रें अब तह्या ता न्वर हुन वर्षेन वर्षेक श्रू की इस हैंग पति थे गहेन चें म श्रूम पहें। स्म पहेंस यस मागहेंस य ता झूंबाना की क्षुंत्रमा पहीं व देवी ला. धूटा पहूंच बूट चना बूटा टी टाक्सूंत्र. पम क्रमाधममा उत्राप्त के से रायम हिंगम पार्मियाय के मानुका मिता हेशर्वेव हिर्देश वस्त्र कर हैं सामिति वार्मे स्थायर विकारी दे से सिर भन्मःहेशान्त्रेशन्दायायमः विश्वायते हें तरा मुना वर्षे यायस से ર્શ્વેર શુદ્ર : તુ: ફ્રુઅ ફ્રેંગ ફ્રુઅલ લે : શ્રુવ : બ ર્શેન્ડ લેન્ડ સે ફ્રેંગ : બે લ લે : વૃજ્ઞ લે ના લાળ : તુ ब्रॅट्यबा पर्झेअत्यसः से ब्रॅन्स्डिक्यिते स्त्रीयस वर्देनः श्वरः द्वाक्सार्देग ८८ः च्रय बिर्स्से हेंग् यो ने सहे ग्रम्य र् सेंदर्य महीं सम् हे सें सबर ही त तर्रः श्रूपकारदीर श्रूर पुः इसार्हेग् र्रा प्राप्ति । क्रीहेंग खेरवेका सुका वका ୢୖୡ୕ୄ୶୶୲ୡୄ୕ୡ୕ୣ୩'୵ଶୄୖୣଌୖୖ୳ଽୖଽ୵ୡୖୡୣ୶୴ୣ୵୕୕୷ୖୢଌ୕୷୕ଌ୕୷୷ୡ୵୕୷ୡୣ୵୳୷ क्षुत्र:ब्रा्य:ह वर्बुद:य:ब्राडेवा:ब्रेत्र।

त्रः चेकान्यम् कूर्णकान्य अवेश हं काश्चर्ना क्षेत्रः श्चीनः द्वितः न्यान्य क्षेत्रः स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्व यदः क्षेत्रं स्वान्य यश रुश मादिश यर श्रद्ध क्षुश्च य ता श्रुत मादिम मावित श्रीश्च यर अर्केत् य मादिम भेता

### প্রমন্ত্রীখনের.ছুখনেরি.এরিগা

त्यस्र मी मोनास सेत्य मोनेस स्री। त्यस मी मोनास सेत्य मोनेस स्री तर्नुस है। त्यस मी:रूट प्रवित रहा।

ययः मुंशायः चित्रायः स्वा वातः वार्ष्वे वार्षः वातः वार्ष्वे वार्षः वातः वार्षे वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्य

त्ति क्ष्म ग्रीक्ष क्षेत्रक क्षेत्र क

महिन्य प्र मी मोगन ने क्या पति त्या प्र में स्वर मी हेन या लेन यःश्वद्यायः वाष्युयः दी। दर्गेवः अर्क्वेवाः वाश्वयः वायदेवः वेवःश्वद्यायः व्येवः है। दे लट श्रुवशाववशादम्बितासर्केनामश्रमाहेश श्राद्वादिः सर्वदानेदाः वै। र्नेव-न्यायमः प्रवायायेन्याये स्थ्या श्रीका कारका सुका नुर्गावा यार्केषा प्रमा न्ने'च'न्द्र। श्रे'न्ने'च'न्द्र। खुद्र'नु'स'न्ड्रुव'य'क्क्रब'चन्न्द्रिकेंबा १८। विरक्षियाश्रेमश्रद्ययाययम्बादाः द्वीराधीः स्थ्री यदः देवी यद्वीत र्ग्व सक्ता हे ब शु: 5व दा क्षें स दा है। यद द्या दार व क्षें द्या यव व र्म्ययः अकूर्याः वश्वाः कुष्ठः स्त्र्यं सः त्याः स्त्राच्याः स्त्रे सः यसः स्त्राच्याः स्त्राच्याः स्त्राच्याः र्ह्ताः हिं तेव या सेन्या विश्वास्य मुकाया हैं वा कें काया यस से क्ष्मायते निषे वर्ष निर्मात अक्ष्माया वर्षेत् वर्ष में मान्य में निष्मा में न है। ट्रे.लट.क्युं.शटश.क्यं.ज कूर्य तर.पहुर्य.त.कूर्य.पर्वेट.चै.ग्रे.बेटा.त.ज. ल्ये-कुबान्तर्मव्याश्चानुबान्त्रे। यदीत्रम्यामुबान्त्रुः शे.ब्रेन्। ह्याव्या श्रे-वेत् तेशवःकेःक्षरःग्रह्मायदेशयदेःपग्रदःप्रश्चायःक्षयःभ्रयःपःत्रः। यव्य विदे सम्सामुकायाः श्रुप्याग्वयाम्बर्गास्व त्यमः मुद्दायाः वी ममः केदाः सेवायाः क्षेत्रक्ष क्षेत्र स्वा वित्त ने वित्त वित्त क्षेत्र क्षेत्र वित्त क्षेत्र क्

स्ट्रिंग्यं विकार्य विकार वितार विकार व

त.क्री लट्टचात्तराविश्वास्त्रिकाश्चित्रकाश्चित्रवाद्याचे यश्चिट्धीःक्ष्यः तर्रावे टिव.ताश्चट्टात्तर्पक्ष्यास्त्रिकायश्चित्रवाद्याः हिव.तास्त्रिक्षः स्वाद्यः स्वादः स्वत खेब श्रेट तट क्षेत की बा केशब बी. जुब तर होट. त लुब हूं।। श्रुव शावब तट्या ही बही। जुब त त्र. त श्रुवश त वशश. कट रट तखेब जुब शावब तट्या ही बही। जुब त त्र. त श्रुवश त वशश. कट रट तखेब जुब श्रेट तर जुब त ट्रा हे तखेब रे ही व त्रावश त्राव श्रुवश त त्या लटा।

चत्रीयाय्यस्य स्थायस्य प्रतिस्थित् स्थायस्य स्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य

प्रसिध प्राचित्र प्राचित्र प्राचित्र प्राचित्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त प्राचित्र स्वाप्त प्राचित्र स्वाप्त स्वाप्त

### अद्भुद्र स्वा अदि र्से अपविश्

यत्त्रः स्त्रान्द्रः वाक्षेत्रः स्त्रः स्त्रान्तः स्त्रान्तः स्त्रः स्त

ने पति यदायस् व र्योव मन के व सर्वे मन के व स्व मन

प्रस्वात्त्रस्य प्रमःश्चेव प्रस्व प्रस्व प्रस्व क्षेत्रस्य स्मिन्न समिन्न समिन समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न समिन्न

प्रमुं क्षाया मुक्षा मुक्षा प्रमुं क्षा या मुक्षा या मु

### 144 শ্লম্মন্ত্র গ্রন্থিন প্রন্

न्द्रिम् येन् केन्द्रिं न्यास्तुत्य श्री क्षेत्र व्या क्षेत्र प्रस्थ विष्य विष्य श्री स्थावः न्नाय यविष्वे याध्येव क्षेत्र

# क्रिंशः सुदिः सर्वतः हेर्।

पक्षत्र द्व रश्राचरु श्रुत्र अर्द्धव कि विश्व द्व कि विश्व कि वि

प्रहेत्यक्ष्मस्यदेदेशयाः स्ट्रिन्य्याः महिषाक्षेत्र।

प्रहेत्यक्षस्ययदेवाः स्ट्रिन्यं स

जन्ना क्रंस्त्रीयः ग्रीम म्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्राम्य क्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्षंस्त्रे म्राम्य क्षंस्त्रे म

> द्यायर मुंबायदे स्वयक्षकेत स्वा विकासक्षरका स्वा स्वयः स्वा क्ष्यः स्वा क्ष्यः स्वा विकासक्षयः स्वा स्वा प्रस्त स्वा स्वा क्ष्यः स्वा विकासक्षयः स्वा विकासक्षयः स्वा स्वा प्रस्त स्वा स्वा स्वा स्वा विकासक्षयः स्वा विकासक्षयः स्वा विकासक्षयः स्वा विकासक्षयः स्वा विकासक्षयः स्व

चीत्रैं याक्रें साम्रें मान्येत्। वीत्रें याक्रें साम्रें मान्येत्। वीत्रें याक्रें साम्रें मान्येत्। वीत्रें याक्रें साम्रें मान्येत्। वीत्रें याक्रें साम्रें मान्येत्।

याम्बिनाधिन। भूत्रायास्त्रेत्रायमान्त्रीत्राधित्यमान्त्रीत् व्याम्बिनायम् व्यामुन्त्रेत्रायमान्त्रीत् भूत्रायमान्त्रीत् व्याम्बिनायम् व्यामुन्त्रेत्रायमान्त्रीत् भूत्रायमान्त्रीत् व्याम्बिनायम् व्यामुन्त्रेत्रायमान्त्रीत् भूत्रायमान्त्रेत्रायमान्त्रेत्रायम्

> क्षत्रमञ्जूष्यक्षत्रक्षात्रक्ष्या स्था। कुष्यस्थाः सूर्वेष्यस्य स्थान

### 146 প্রব্যবস্তুর্ গুর্ব্র্

क्रेंद हुद पक्ष्य य मुक्य हुद वदी। वर्षे पवे देंद दु वशुप यर मेंगा क्रेंब क्रेंह केंद्र केंद्र स्वाय यह विंगा

# ७ | किंवाग्री प्रीत्या सुप्र में प्रा

पहेंद्र या तलग्रस य तहर द्वार गर्वेत तुम शुर य ता धुन सर्वे व्या । क्षेत्र वा । क्

यद विय गुत्र दु अ वेश व। शित्य पश्च दु इस विवेर य। शिस्र उन गुनु तारे व पान्य परी । किंया ग्री निवेदस य ध्रुप वर्सय वर्ना । पार बिनायर्वेर पति क्रुर शुराय। दिन्हेन ह्युर य वुरु य तस्य । दिन य देन्हेन शुःदवःयद्या विर्ध्य ग्रीःश्रुःषपः दे वेद दी वि सूरः वें सारा दि स्वारा सरा की श्रेर में से श्रूराया | दे चलेव केंबर में दब दर तरे बायका | किंब की रिवीदमायाद श्रास्त्र हिं भूर देश इस श्रुरमाया । सर ग्री श्रीराहा टु.श्रट.एक्टिमा ।टु.पार्षुय.धूय.शूटबाईश.ब्रीटबातबा ।क्र्य.टिवीटबात्त्रेय. रिंदी:श्रेन्त्वीरा हि.केर.श्रर.श्राविशावर वाववा विर वृवा बैदावराश्र त्रश्चराय। दि पतिव रेव से स्वर्धित स्वर्या स्वर्धित स्वर्य स्वर्या स्वर्धित स्वर्य स अर्वेटर्ट्र। ब्रिंग्यन्ने ग्नटर्न्टरम्टर्मान्या विस्य च समाप्तेर श्रुराया। दे'न्दर्दे'भे'र्खेन्थाकृत्वया विंद्'ग्री'रद्यवेव'र्स्यूद्राचर'रसूदा विद क्रें हैर दिंब हैं हे थेबा विश्वाय दे वे पठना शुराया दि के दे वे वसा मानदःषी | सवरःश्चनाः परः तुः सूदः परः चुद्। | क्रिंशः चुः द्वीदशः वीः स्रुः सः लुवी विभालर प्यापा तर प्याप्त राजा है। दिशासभा भीव दिशे मूर्य श्रेन्। विवासायमासवमादीसायाया वित्रुमामेन स्वास्त्रेन हिना दिया इसकार्ग्वात्रःहर्रेद्रन्गकायायदा। हिंग्ये वदाव गवका शुराव। दिग्ये र्दिन्दे

म्बयास धिव। दि चबैव केंब्र सेंद्र ग्रीस चर्ची चर्च चरी। किंस द्रीट्रस नेव:हुट्रे:सेट्:यदम् । यिकॅम:यम वेंद् वे:याश्रय स धेवा ।सु म्व:यदशः ब.पूर्य चाबाजा पर्कीय। विषय शालूर व व जान विश्व तथा विश्व प्रश्निम रेग अब्दार्यर त्यारा विश्व अर्थ देव है त्यश्च मुश्व में विश्व स्वित स्वत स्वत स्वत पश्चेर पर बर्। हि सर श्वर प्रवास नास्त्र स्थार प्रवास स्र श्री वर्देन त्यूरा दि पति वर्ति केंद्र केंद्र श्री का मार्थि महाराष्ट्र विकास मुकालेका की पद्म । दि सूर सूत या यका र्षेत वा । विद्यका है न सूर पर वश्चरायात्रमा दि प्रवित्र केंद्रा स्राध्यम श्रीतात्व। किंद्रा श्री मु केदारपात्र देखीं त्वकात क्षेट र्चे हैदा विदर्भ वादर में वादर हो देखा किया विदर्भ विदर्भ विदर्भ विदर्भ विदर्भ विदर्भ विदर्भ त्रतः त्र्रेर तायमा वित्र र्याटम मानेय नदः स्या शुर त्रा वि वि वि वि वि सदसः क्रुसः केन्। विसः ठवः त्युवः क्येः चतुनः हे रः दशुरा विने प्यत्वेवः सः चेवः वस्रश्रन्द्र-तन्त्र। वि.र्दर-पर्द.यपु.एचश्र-प्रीटः। वि.पूर्व-सुर-तर-पर्चश्रास्ट्राचन विश्वास्वानाम् विश्वास्वानाम् विश्वास्य विस्तर दे हिन् विस्तर सम्बर्ग श्वा हो हेन दु वर्देन विस्तर ही स्तर हो साम शुरुपायका । सदका मुकार्मी तयदार्वेच धरावशुरा । दिसे प्रदेश महार षदा श्चित्र-दर्शियादार्द्वान्दर्भ श्चित्रम्बर्गार्द्वर-दर्श्वरायार्थ्यम् । ଞ୍ଜ୍ରିପ'ସ'ଧୂ'ଭିଷ'ସଞ୍ଜ୍ରିପଷ'ସ×'ସ୍ଥୃ'ସ୍| |ଦ୍ୱ'ସର୍ଜିୟ'ହିଁଦ୍ର'ସ|ଷ୍ଟାୟଷା | वर्देन्'न्रम्बर्देन्'बेशबायो'र्से'न्र । वित्य न्रवे वे वे वे स्त्रा क्षे । क्षेत्रायाय लुश्चान्त्रुपश्चरम् श्रुर्म हि.फ्रेर.श्रु.लुश्चरवात्तर्ध्वाश्चित्रश्चित्रश्चर्यः अश्च ट्रै'अ'रुव्। |है'क्रूर-भे'भै'व्रद्यद्युष'व्। |ट्रे'अ'क्वैष'य्यूर-र्वेश्वयेव'क्रूरा ।

दे चलेत र्देर ग्रम्थय चः धः स्रोधम् । तिर्देरः कग्रम्थः यः स्याम्यः दे अः उत्र। । धः नेश शे.लुश कुंच.शूटश पड़ीय । हे कुंट कूंट योशकाश लुब खूं। । क्रूंट या विद्विः भ्रें व परिः अर्दे। । क्रुयः प्रश्ने हे क्रेदः महारक्षः य महा । दिः द्वारमुक् मुक्षाक्षेत्र क्रान्य क्ष्म । विसम्भ दे क्राम धर मुद्र स विता । स वि द मुल द लूर तपुःश्री दिःत्राश्रर्तात्रम्यवश्रम्। विविश्रम्भाविश युद्र। दि'यवेन दे अ'से द्रायर ग्वान में किंग द्वीद्र ग्वास लुषा । विर भूर. म. लुष. झुंबाचयर भूषा । वा बेर च. ग्रीष. जबाई म ब्र्जिया य। हि.क्षेत्र.यन्वा.कुब्र.यक्ष्वा.यत्र.व्री |क्ष्वाब्य.य श्रेन.यद क्रूब्य.यांव.या | द्यन् अन् श्रुक्ष यन् र्रिम्बारा स्थित। विदे न् क्वार ग्रीकार्के दक्षा मृत्रियः विदे हुर। विर भरे क्रेबात विवास्य प्रह्मा विश्व म्यून प्रह्मा क्ष्य प्रह्मा वि बेबा चि.च.चाश्रुयाच्याश्रयश्चींदाचेता विक्वारिःश्रयश्चींदाचेतः यदी क्रिंश वे स्ट यत्वेव से द या धेवा हि सुर ह्युस सदे से वहा थिंद ग्रदःसर्ह्वदःपःसः सेवःप। दिःपवेवः तेवः संदश ग्रीकः मार्स्यमायायी। क्रिकः ग्रे'न्द्रीटर्श्यम् अर्वेद्रः अःषीत्। विन्नान्दः वन्न नीः इअः हेनान्दः। ।श्रीदः मी'तर्,'नेब मुं'अर्द्धन'ग्रीबा । इसम्हेंग चले'चें'त्वुदाच'णदा ।त्वुदार्दा रवैंदायश्चींदावश्च्या विद्यामुन्नस्य स्थानी ह्नेंदाया श्रेन्डिन्सर्वन्द्रेन्स्येन्। विंश्वेन्स्निन्स्यार्श्वेन्स्य्वन्द्रेन्। विद्यास्या हगायदै केंश के न क्वा | हि सुर रे में र अर्थे क्वा | प्रह्माश्वर के निर् येदायाक्ष्म |देग्वविदार्केशक्षम्यावसम्बन्धनायान्। |यहग्रमायानेदादे र्षेर्यस्थित्। सि.स्टर्स्यामीर्देर्वे सेशा । मूर्याने स्यार द्वीन्यस्य सेता। है क्षेर क्रिंव प्रविव क्षेत्र है प्रविव। दि त्य है विवायह वायर है। यिहेव

वश्च तत्त्राचर श्रीर ध रह। विहेत्र वश्च त्याया धर तश्चीर वश्च वा मुडेग गुर लॅंद्र यस बेद दा विश्व यह स्थ्र हैंग यर वेदा दि वंद य म्नाट-ऋषे द्येश हि सुर परे मनेवाश केंशहराशनी । द्य अ ने द म्चय यर होता हि सूर हे न भ्रम्य पान्य । निरंपदे हें न ही हु वर री विश्ववाद्यान्त्रम् अर्हेट यम श्रुम य क्षेमा अर्क्न कि हें वाद्यायत्य हे न्दः वर्षा विषय वरः न्द्र अवर न्षे या विश्व य अन् केदः यहत् य धी । वादः विवादे सुर चन्वा सेन् धवर । । है सुर चन्वा न्दः चन्वा वीर यहमा हि: सुर कें मिदे हुं शुंखा दिंदें बेश हैं हें पर छेता हि हैत चरायदे तुषा खुवी | चर्दे लेबावे यहें पा धेव। विंव सेंदबा दाया मर्षिम्बरपदी। बिस्नबरुव बेशके पर्हेर्पर है। दि केर केंबर सेरबर चल.क्रीर.वी निरम्भमेश.खेश.वु.टार्डूर तर वी शिवा.रेट वार्श्ववाश.क. यहेव वर्षा दी । दि सासे प्यति स्वराय वर्षुरा । श्रि से प्रवामाय से प्रवेत जना क्रिंगमी रविरमानु रया हु नेवा क्षि र्रह्म य जायहेन नवा हिमा यर-द्यायदे नेबाय ग्रह्मा । अस्व केद सेदायदे स्वारी दिवा न्दान्डर्यापर्यार्वेद्यापरार्यश्चरी स्थिन्दार्देशपान्देवावद्यार्थेश निःवेः याञ्चयान श्रायेन प्रतिया । दे. प्रतिया हुन स्थापी स्यापी स्थापी स्यापी स्थापी स न्द्वीदशायार्हेगायमाद्वेत्। क्षिणीयमायवित्रह्मेंद्रयातेत्। र्मिणीयसश ग्रदःद्वेदःयःह्रे। क्रिंश ग्रीःद्वीदशःग्रीःद्वःत्यंत्व। व्रिसःयरःवेदायःवादशः बेन्य। निवायदेख्याधीर्देवंन्य। निवाद्यदेख्ये धीः सब्द्रानेन्या। मुद्रान्यायक्षाद्वे मुँवाश्चुराय। क्रिकाग्ची प्रचेदकालेकायहूरायराच्च। विदर चित्रम् श्रीयायते हिन्ता प्रताम मान्या विदेश

क्रमम रट.पर्वेय ग्रेट.त छेटी क्रिम की टिवेटम से पहेंस तर वी मिव्हें र्ट्यूश्ट्रपर्वेशश्चर्रः। शिर्श्वर्द्यात्र श्चेर तर्दा क्ष्रि इसब टे.फेर इय दर्हेर तथा विशव प्रक्ष्य हेर ह्र्यान तत्त्रीया शिया. न्द्र म ब्रु'न्य'न्द्र। भ्रि'न्द्र खुर्ब न्द्र में मलेव धेना श्रि अकेन इया में इस-नगःया । यदे केन दे केन सम्बद्ध केन दें। । बेसब केन इस यः गकेब इ अर्हरा | हि क्षेत्र यहेग हेव यहेग हेव यहशा | यदग ह यहेव त्यका ल्विं प है। विं कें रें रेंग व दे केंद्र दें। विर्दे कन्य वद धर्म सु दव उर्मा वि.रूट गाने स्मा वर यान्या । दे नम दमाम य सदस मुका वेता जिबास्य ग्रीय शुः श्चितवा केत्रेत् हो विवादत् श्री विवाद प्राप्त वा वा । खुरादर् हैर्याया वसराउर् दे। | ररावी इसायर हैंवा यसाय डेरसा | चर्वा हेर ने बाव में व्याप र त्या है। विस् ख्य रेस बेद हे पा से द्या विस् श्रेव दिरावासाधिव विदा। विवासित्स मिलेव शुरावदी किराया। विर्वेदाया दस्त्रे अ अर्बेद्र धेता विकारय अर अर वात्र वात्र वा वार्केवा पुरे के प्रमा क्रिया प्राचित्रा वित्वार्या यह वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्या वार्ष्या वार्या जबाबीस्य त.जबाबा क्लिंचबाचर्षेतुः क्लेंचब ग्रीबाचीब त.स्थाबा विवेद. पद्वित्रम्निवास पासी सर्वे प्राप्ति । वि स्मूर्य थे 'द्वास स्मार्शी सर्वे । वि सर्वे श्रमश्रायम् अर्थेद्यायः स्वा विष्यत्वेत्र स्वा विष्यः मुश्रास्थ्रस्य वे सेन् परायहण्या | न्यवान्य वर्षेन् वयसान्यवायाया | पर्ट्रियःस्व तर्या ग्रीया दे प्रमुद्र प्रस्ता । हि सूर प्रस्य प्रस्य प्रमाय । देव'क्रव'सक्र्या'वे'यवया'य'यद्। सिसम्बन्ध'यर्स्य, वसम् विमास्मा

व्या विंद ग्रीम नामाय बिद दयय स्व यदी । सुस दु इ निवेश सर्स्त वयरःय। । बद्धाः कुद्ध देः धे अतुव व ग्वद्ध। । अर्थेव ये दे धे ग्राचुग्रह्म शु श्रीमा विश्वाय सरास्त्र परियम् वस ग्रीटा विरिय विश्वसम् विविर्य यदः ब्रेम । निवेदम हिन व नि शुर य यमामा । मोसमः ग्री ख्या हे देश हॅमश्रावश्रा दिरावी क्षेत्र यह मान्या पर श्रीता । विकास स्वास्थानमा व। । शन्त्रस्थाने धीः यन् गार्नेन ग्वस्य। । नयनः धुन केव येथे ग्वस्य सर्केन। ५८। विंग क्षेत्र के ५ १६ इसा सहेका या विकाय मासुस वें मिर्डे मार्जे ५ १५॥। वर्देशस्य स्क्रुर त्याचन्य श्रुवि । विश्वस्य वित्र व वित्र अवित प्राप्त । तसवासायदे वर व स्रु र्सेवास केरा । नियर स्रुवा स्रेव से से राया स्रोता । चन्नेजःचदुःकुःलुःकुःबद्धव। विःर्ज्ञान्त्रमन्त्रम्भान्त्रम् विःषद। । न्यवाः हुः सेन् विश्व यद्भव यदः वी । विष्ठं व्यवः वी वा वा श्वा स्था सुद्र सा । ब्रॅम् क्रम्बाइस्स ग्रे ब्रॅम् मार्कायदी । क्रुमार से व दे केटी । मार मे रपःरुः यह्या । चुरः सुव रेर वरः से 'वस्रसः देरः । । दे 'वरः प्यरः दे 'वस्रसः से द्या सिय र्वा स्ट्रेंट या से दाय हो। विट द्या है प्यतित रेवा द्युर पर्दे। हि क्षेत्र दिः सन्दर्भास् । स्थिन यादे यादे यादे यादे साम । प्रदर्भास्य स यह्म मुन्देर हिरा । हि ही अप्येव दे प्यविक मानस्य । दे प्यविक कें व स्वीक बाल्लबाकावका । वा.स्वेकाखकायदीरावाडेबा.बावकाग्राटा। । इत्यायद्वीरायः धिकायोः मेकायोव। । श्रेः मेकायावीः वर्देराय राष्ट्रीत्। । यत्वाः त्रायत्वाः वीः बेबायदेव:पबा |दे:ब्रेन्:ब्रे:रॅल:इअ:यहग्रब प। |यन्य:अन्:इअ:यः बाकुश्रासर्वेदःव। श्रिन्यदेश्याचेत्राद्वायाच्यान्यः दशुमा । वादः स्त्रीमा स्वारा

मुखास स्व पर्वा । वाद्राय हवा य र्वो यदे वाली । वार सुराविश देः वुशायश्चाम्बा । दे शे महिश्र ये इता तर्वे मावसा । द्यार र्श्वे द्या क्र्यायाञ्चीय तार्रा । व्हिलाविश्वयाश्रेययाञ्च र्रेवासूरार्रा । व्रेययाञ्च लय. मुर्ने दास्री विश्वयात् पर्म स्री विश्वयास्य विश्वयास्य इस्रमात्रीय त पर्केष त्या मार्मि द्रा | विस्रमात्री व ता स्रम्भ वहिता या निर्मा स्वारि:चेश्रास्यायक्षेत्र य हो। विदी:वाराचिर क्या क्रिशाचीरा विवास न्दाचडकायतेः मेब रवान्द्र। ब्रिंकायमा इमायर ब्रुट्य वान्द्र। । क्रूंचबायाद्रबाधबातात्रेबाहे। विश्ववात्तुबाद्वेदायदेक्वायदेवेत्। विदः क्षियःश्रमन सिवाःश्रः तः वृत्रा । श्रियः यत्र यत्रःश्रायः हे। । विदः स्त्रयः श्रमनः न्यतः सञ्चरः प्रमा विकारीः भ्रावीः राष्ट्रासः विष्या विस्ति स्वार्येवः सः स्व बादा । वि:राश्चरायरायर्देरायारेखा । यस्तिरावीदाखार्यवाखेरायरावी । विरस रविरायर रखीर शालुवी विराविर शास्त्र वारात बर्श वंशा विरायर मवर्श्वन्यक्ष्यायायाया वि.रश्चायारात्र्या हि.पश्चा पविरायर प्रश्निराय क्षेत्र। विराह्मय हो अश्व हो राय विष्य हो । हो प्राय विषयः वृद्यविषयः यथा दियाः पर्वे अनुविद्वे विषयः वद्याः सुवाद्वयः । ट्रे.जबार्श्वे,खुटारविटाचरारवीर्य | इ.क्षेरार्श्वे.जि.च त्र्ये स्वाया | विटा पश्रिदायम् विदायास्त्रम् ।दिः पतिवादेगाः अर्हेगाः अर्थाः सम्मायादमः। । त्रेव,त्य,देशकाग्रीकाश्चरत्वर,शह्री हि.क्षेत्र,श्चर,ह्रुप्तकीत्वे,त्वी श्चि. पार्श्वराबद्गरार्थेदा ।देग्विदावेगास्र्र्मेगार्स्रवाह्मसार्यदरा । अटबामुबाश्चात्रे,वेरचराअर्घरा। हि.केर.क्रबातदः च.ताल। श्चिर.क्रबा श्नेर.दुर्या.धैश्वःतर.श्रव्हरः। ।टु.चबुधःश्वःताःवंत्राश्वः श्वशः ग्रीटः। ।दुशःश्रीशः

रुष ग्रीश पत्रजा पर अर्हेर। हि क्षेर लर ट्रंप्ट पर्ड के जा । श्री प हूँ बोबा तर वर्षेर व केरी दिवधुष श ल शवर धेये थी क्षिश की श्रे लट. ह्यांश निद्यासाया । सदस मुस केंस दूद देवे वतुत या । हिम हु केंस य यहत र्घे लेका विस्रकारे लट न्यां क्रेन व्यवका विस्र ही र्वेग पर लट लट त्युद्रा विया देंदि वाबि वे स्टब्स श्रद्य वस्ता विया देंदि वाबि वे स्वः वर्द्ध वर्षा दि हें दे देश हेंग्राया | द्राय व लेश दे अर्दे वर चर्हेरा विर्देर क्यांबय ब्रायाब ब्राह्मेयाब विद्या विद्या ह्या हुई य स्वा। द्वे अभेदः यमः विषय । द्विः अभेदः छेश यहूँ दः य धिव। विषय अस्यादः यः स्यः त्यावाबाबाबा । द्वैः सेदः दोबारस्य वाबाय यहा । स्वद् सेदः या थी स्दाय न्या विवाद स्ति प्राप्त के त्या हिन हिन प्राप्त के स्त्र यांचा । तर्ने तहें द्वरायर में दब व हो । हो से व दूर ही मार्सर वर्डें र नमा । माने रहेन दर्से उन रि. पर्देन । दिन नि हु स्य नर्से नि माने माने । चल्रामिव द्रमारा श्रुर्से वा करेंद्री विवेद में द्रमार प्रमान इस्रायम् क्वियायम् स्रुटान्गमायर्नेत्। विदास्यास्य यागस्यार्ये नदा। स्व-स्यार्क्षेयार्थ्यम् गुव-पर्यू-प-५८। भ्रि-५८ दहेवाया वर्षाया । सार्-अर्देव-तुःवश्चुर-पर-१२र्देन्। विवेद-१वेदिः पर्गेद्-पः द्वर्यः गुव-तु। विद-श्ची ५ः नमा है न न । विर्विम निर्विम न <u> जुनाची जिस्सामुनाजीसारेसारदी पत्रस्तिता । विस्तेसामुर्यस्य</u> त.रंदा वित्यर.श्रेर.क्षेत्र.ब्रीक्ष बीत.ब्रीद्राता विर्येर.ब्री.प्रवृत्र.ब्रीक्ष.श्रु. मर्षेश्वयदे । विविधायम् मार्थियाम् । विविधायम् । विविधायम् । निष्या विकारम्भिरायादे अवस्यास्त्र तथा विस्ते त्येन सायदे मुँग्स्य

वर्देन। विकेश रद वर्षेत्र वर्दे विक्षा दि केद त्रम समय दरस्यक्र या। शरम मिस देशन में पहुंच त जाया | क्रिय में हैंव दे भीय रे पर्वेट । । शरम मैंस प्रमा ग्री.कूरा ग्री.वोषना विह्नेर.तपु पत्रम वी लूरम पहुंच ता। वावकानी लिंदन श्रमुर परे। किंद्र मी श्रु लेव यहें दा धेव। या कवाव यश मुँ य यश्रम भ्र. विया विर्देर यद यम क्ष्मश्र यश्रम हुँ विद्रा विर्देर है. र्याय त्यन तर्मा | नियद वें र्याय की र्यों र स्था विष्ठ र की विष्ठ र्<u>ह</u>्मान चि.च। । यार.लट श्रेट ज सियां.पष्ट्जा.चर्डूरी । रूभ ग्रीन यहें या स्वी जियां कुर क्रिया विद्यासीय बियात्. यीयाया क्षेत्र स्थया विष्या क्री हीत की. ल.चेब ग्रेश क्रिंथ धेर हुर राय अव्ट ग्रुर वया विर हे अभय दे रच पर्योश तथा विष्ट्र पर्यः बोज्ञ प्राथः पर्वा विष्ट्र प्राधः प्राथः प्राथः विष्ट्र विष्ट्र प्राधः विष्ट्र विष्ट वर्षेत्र ही। क्षित्र त्य दे हे रव विद्य दश्चर। विद्य संदेश केत्र दिसंदे र्देन्। विर्नेन् यर मु नवि ने वि कु नि मु नि मु नि मि नि र्वे लूटबाझे. पश्चें न । क्रिंपबाय है ज्ञाल बालूटबाझ गाना। । श्री तह वी बाता लेबानादः दवा देंअबा | प्रबंधा से विचः पर्दः बदबा मुबा केंबा । ब्रेंबा से द इसब.जब.केशब.शु.शरप जिवाब.तर हैं रे.तपु.जश.वीय कुबा । पर्स्र-विश्वसायाः विश्वास्यायायायी । व्यापानाः विश्वसायायायी । र्योदर-तुः इस्याया गुर्व की साय भूरि । सिर्धा क्विषा ख्री गिरी है । से दि । से रा द्रव.क्ष्रव.प्यम.क्रीम.हो। विश्व क्षे.वि.स्यम.प्यम.प्यम। नियम.पश्चम. यात्रीत्रात्र दिक्ष्या विकारत्त्रीय क्षेत्र ह्या देश निकार विकार व तपुरदह्मा हेव इसमा विवादक्य क्रीका मोलेटब दहमाना दारा विहासी

# क्षा । प्राःसः क्ष्यः प्रतिन्यः प्रति। इसः समः प्रमुन् सः प्रतिन्यः प्रस्ति।

तक्ष्य जूर्गि त्रि.श.रेट.श्रटश मैश्र रेट वेट.क्षेच झुश्रश्च.रेतय वश्रश्च.कर्र ज विवी

> द्यत्य स्व:श्वरायते:द्वरःसंव:यःश्वव:यक्ता। इतःस्व स्व:प्रव:यक्षेत्रःयश्वरःसंव:या। इतःस्व स्व:प्रव:यक्षेत्रःयश्वरःयवेव:स्व॥ श्वरःस्व स्व:श्वरःयक्षेत्रःयश्वरःयवेव:स्व॥

र्बेु्द्रास्त्याक्षेद्रायाक्ष्यायाक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राच्यात्र केवाद्येदवायक्षेद्रायाक्ष्यात्राक्षयात्रात्र

ध्यायाङ्ग्री, देन्द्रीया याद्याया व्याप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थापता स्यापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्य

त्र अक्ष स्वी य अक्ष्य की क्ष्य क्षर यह ता क्षेत्र यह ता क्षेत्र स्वीय यह अर्थ प्राची यह व क्षेत्र यह कि व क्षेत्र यह क्षेत्र यह ता क्षेत्र यह क्षेत्र यह ता व क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय यह क्षेत्र विवाय विवाय क्षेत्र यह क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय विवाय क्षेत्र यह क्षेत्र विवाय विवाय क्षेत्र विवाय क्षेत्र विवाय वि

ने'स्तर्यहेन हेन यहेनहेन सम्यायत्मायते र्ने यमुद्यस्य हेन्या श्वर्म प्रदेश हेन यहेनहेन यश्वन पक्षेत्रस्य ही क्षेत्रस्य ही स्याहुः स्वर्म प्रदेश स्वर्म प्रस्ति प्रम्थन्ति स्वर्म ही क्षेत्रस्य ही स्याहुः स्वर्म प्रदेश स्वर्म प्रस्ति प्रम्थन्ति स्वर्म ही क्षेत्रस्य ही स्याहुः स्वर्म प्रदेश स्वर्म स्वर्म

यर्केट्रत्य तस्यास्य तह्याद्यत्य गर्ब्द्रस्य शुर्म् स्त्री तस्यास्य तह्याद्यत्य गर्ब्द्रस्य शुर्म् स्त्री द्वीट्यास्य स्त्राची विकास स्त्री द्वीट्यास्य स्त्राची विकास स्त्री द्वीट्यास्य स्त्राची विकास स्त्री द्वीट्यास्य स्त्री विकास स्त्री स्त्री विकास स्त्री स्त्री विकास स्त्री स्त्

मट्येग्ग्यान्द्रस्य यास्यम्यक्याय्द्रम्। श्रेन्द्रस्य मुश्रस्य स्थान्द्रस्य स्थान्य स्थान्द्रस्य स्थान्द्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्

बुट्ट प्रिट्ट दश्च प्रदेश मुश्या प्रमान स्त्री प्रदेश मुश्या प्रमान स्त्री प्रदेश मुश्या प्रमान स्त्री क्ष्य मुश्या प्रमान स्त्री क्ष्या स्त्री स्त्री क्ष्या स्त्री स्त्री

यदी त्रिया वर्षे स्वाय मुक्षा यदी र्से स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वय

मह्मी म्ह्रीय प्रभी मिन्न प्रमानित के स्वाप्त के स्वाप

न्त्र प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रमास्त्र प्रमास्त्र प्रश्नेत्र प्रव्य प्रश्नेत्र प्रव्य प्रश्नेत्र प्रव्य प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्नेत्र प्रश्

मदःवेगःय्वेद्रःयदेशुरःशुरःय। देखेदःकुदःयःशुद्रःयःयवा। द्र्यायःदेखेदःशुद्रःयःव्द्रव।। क्रिंग्युःकुष्यदःदेखेदःद्री।

तःजबा देशक्र ग्रीक्षट्याचार्य श्रीक्ष्य प्राप्त स्वाप्त स्वाप

यन् य लेश मु हो। अदशः मुश वसश उन् ग्रीः र्केशः ग्रीः ह्र्यु वद ने केन

है तें ब्रायदे स्वांत्राचित हु दे द्वाप्यश्रम् हो।

है तें ब्रायदे स्वांत्राचित हु दे द्वाप्यश्रम् हि स्वांत्राचित स्वांत्राच स्वांत्राचित स्वांत्राच स्वां

पदी-तिर्म्ह्य-ब्रेसक्ष-त्यदायक्ष-त्र्यं प्रम्मस्य सेव व्या विद्यान्य स्वर्मा क्ष्यान्य स्वर्मा क्ष्या स्वर्मा स्वर्मा क्ष्या स्वर्मा स्वर्मा क्ष्या स्वर्मा स्वरंभ स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वरंभ स्वरंभ

स्कृ म्यान्यात्वा विकास स्थापाय स्थाप

### 162 न्तु अर्केश न्त्रीत्य वर्क्षेन् यदे इस वन्त्र

क्रिंश व्यक्ति व्यक्ति स्ट्रिंग स्ट्रि

### बेश बाश्चरश्र याधित या

> न्याः सुः स्वा धरः स्वा धरा वि केन्।। स्वा

### डेबानुर्गा

तर्ने:इस्रक्षत्रे:क्रंत्रुंत्रःकुंत्रस्था क्रुंत्रःकुंत्रःवर्दे:क्रंत्रःकुंत्रःकुंत्रस्थांत्रःस्यःकुंत्रवर्देःस्यःकुंत्रःवर्देःस्यःकुंत्रःकुंत्रःकुंत्रः स्रोत्राचेत्रःवर्देःस्यात्रःकुंत्रःकुंत्रस्थाःकुंत्राव्यात्रःस्यःकुंत्रवर्देःस्यःकुंत्रःस्यःकुंत्रः

> दःर्याद्वीव अक्र्यायायात्र स्त्रीया। इस्यायास्य स्त्रायाया

### क्षेट हें अ पश्चेंट च अ.अत्। चश्चश्च प्रधेंट च अ.अत्।

वेश माशुस्य श्री।

पट्टी सार में या ताक्य जूर दें यह दें सह में श्री स्त्री स्त्री

#### 164 न्स् अर्केश न्द्रीतश्च नर्शेन धरी हुस नत्।

म्दिक्षेत्रः हेत्रः त्वुत्य स्वित्य स्वत्य स्य

म्यात्रिम् हेन् त्यम्य स्थित् विश्वा क्रिंश्व त्यादः स्थित् स्थितः स्याः स्थितः स्थित

लेसहेदःहरत्वेताचरत्वुराचाराणेद्रायतेक्सह्यसर्देवं वैदःग्रीसङ्गेः चारोदःहरत्वावायारोदायराव्यस्यावेदायतेक्सह्यसर्देवं वैदःग्रीसङ्गेः

प्रमुत्त्र-प्रस्थायतेः स्त्रीया स्यायदे तान्त्र्राह्म प्रस्थाय स्थायत् स्थाय स्थायत् स्थायत्यत् स्थायत् स्

यत् ने न्। न्यम् प्रत्ने त्राप्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्त्रम् स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्

है। देव मानस्य में क्रेंट य है दे पान प्रस्त मान में स्ट्रा स्थान स्थान

वेश ग्रह्म श्री

दिन विश्वर्था स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

न्यायते द्वा की यादेव यहेव यहा यहेव या विश्व स्था यहेव । यहेव यहेव । यहेव यहेव । यहे ।

म्हार्याय्येष्ट्रेष्ट्

यायायहैवाहेत् भी देवे स्टायमेवायायायायायहैवायाये वहेवा हेदायदेश्वाद्वायदेदायदेदायादेश्वायादेवाय

### 166 न्स् अर्केश न्वीदश मर्श्नेन परि इस मन्।

अर्बेर्य ग्राम भेत यस है। दे ने दे द्वा कित य गुन हैं य हु यदेन य केत् भेन यस गुन हें य की यदेन य बेस मुद्री।

विश्व ग्रह्मात्री विश्व प्राप्ति हो। श्रुप्त श्री अर्ध्य हिन ग्रिश श्रु पर्हिन त्या देश्यक्ष क्षेत्र श्रिश श्रुप्त हो श्री विश्व श्रुप्त श्रूप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रूप्त श्रूप श्रूप श्रूप्त

> है:सुर ब्रूट च वर्दे:विंत्र॥ गुत्र:क्टेंच वाब्रुव:वें व्युच:वेंबा:बेंबा:बेंबा

वेशयक्ष्रव हैं॥

बःक्षुन् ग्रीः सस्दन्तेन बःक्षुन् ग्रान्यन्नन् वा देवः नसः यनः बः न्नः सुः

बेशयम्

यदी क्षेत्र रूपि निष्णान्य विषय निष्णा निष्ण क्षेत्र निष्

खर्चर य: न्द्रकी सु: द्रवः यन्द्रशा वर्षेरः य: न्द्रकी सु: द्रवः यन्द्रशा

वेबानुःच वे व्यटबाह्यमुनायबाहे देव द्यायदे॥

> र्देव:द्र केंच दर:श्रुव यशकी। र्देव द्रश्च क्ष्य च मुख्य दु:चर्हेद्रा। व्युक्त:येद द्वेव:डे:य व्यंग:च।। व्यक्त:श्रुश्चव:य क्ष्य य:मुठेश।

म्बिम् मिश्रायहिम् हेत्र म्याम्यायः हो। म्बुअः ग्रीयः देवायः यदेः म्याय्यः यदे।। इयः द्वाः श्रीदः स्थाः स्थाः महित्रः हो। मुद्धेम् स्थाः स्था

ग्रीश्वरश्ची । वर्त्तः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थाः स्थान्यः स्थाः स्थाः

यहेगाहेब'य'द्र'देशक्षायते ग्वामश्रायकी गुद्राहें य'यदेब'यते हें. यगाहे। यदे त्य'द्रमें द्रश्राद्रश

> ब्रूटरतु:यद:र्वेन:वेन:नगा बुबायदे:ध्वेट:नट:र्वेन:वेन:नगा

170 रहा अर्केश रही दश्च पर्केर परि हम प्रमा । प्रमा प्रमा स्मित परि हम प्रमा स्मित परि हम प्रमा स्मित परि हम स्मित स्मि

लेश यरेव य गर्छश्च माश्रुस परि में रिंग चेत्र स्य य चित्र य स्था य स्था

त्यक्षायी त्यक्षायुः विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य विद्वास्य दे विषय प्रत्य विद्वासीय विद्वास्य विद्यास्य विद्वास्य विद्यास्य विद्यास्य

वेशयाशुस्यार्थे॥

नेश ग्री क्ष्मीय प्राप्त के ब्रिंग विश्व क्ष्मी विश्व क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मिय क्ष्मिय

ह्युव ८८ द्ध्य विश्वस्य वर्से ५ वश्वस्य ही। र्से न्या भेव ने स्य स्य भे वे स्य ही। या सुरा दें वा ब्यूव वे विश्व ही। भुक्त स्य स्व वे से स्व स्व स्था ही।

वेशनन्त्री।

यदीः स्रम्यस्य स्वात्त्रस्य स्

दे.क्षेत्र वार्ष्व-त्यकाम् वाकाने। क्षेत्र प्रवादित्यकाम् वाकाने। क्षेत्र प्रवादित्यकाम् वाकाने। क्षेत्र प्रवादित्यकाम् विकान्यकाम् वाकान्यकाम् विकान्यकाम् विकानियाः विकानियः वि

> तसूर.ध्यम्यसूर्यम्यःजस्यचिरःतःक्षे॥ सरमःभित्रःभ्यमःभुःवचिर्यसःभ्रःउर्दृ॥

### 172 न्त् अर्केश न्तुरश वर्केन् परि इस वन्त्।

स्यान्त्रस्य केत्र के क्षेत्र यदे मु॥ दे स्व तस व स्वास यदे पालेखा। मुल दें जि.से के संस्वास यदे पालेखा। स्व ग्री सु व सर्दे पालेखा।

त. द्शाश्ची विद्नु द्वीस शवद त्यस क्षेट्रा स्वास प्रमाण्डी विद्नु द्वीस शवद प्रमाण्डी क्षेट्र प्रमाण्डी प्रमाण्डी स्वास प्रमा

> याड्याच्याक्ष्यः श्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः स्त्रीत स्रिक्षः स्त्राच्याः स्त्रीत्रः स्त्रीत्रः

गर्नेश्रयाने प्रमाश्चित्या उत्रा

के'चरःर्श्वेद्दर्भक्तिक्षक्तिक्

ट्रे.लु.पह्या.वुट्.श्रयश्चायश्चिटः॥

वेशमाश्चरशःश्वा।

बीच चाक्रिटाबन क्रिटाश्चन प्रदेश में स्वाक्षाया है वा स्वाक्षाया क्ष्री वा स्वाक्ष्य वा स्वाक्य

द्वेतः व्यविक्यः स्वीतः व्यक्तः स्वीतः व्यक्तः स्वातः स्वीतः स्वातः स्वातः स्वीतः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स स्वातः स

ब्रेबायप्तरा चिरस्याक्षेत्रकारचेतात्वराम्या

त्तुत्र यह म्बर्ग ५८६ वे म्बद्ध ५८८५ ६ ।। ब्रॅट्स स्मृत्य या यदि के दिवास ब्री। ब्रॅट्स सम्बद्ध स्मृत्य या विद्यास ब्री। ट्रॅट्स से सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध ।

द्रवःलूटकाश्चीयःताहुःकेत्रःश्रेत्रकाकाकात्वाहूर्टे.शुःवी

### 174 न्तु अर्केश न्तु दश वर्षेन् वरि इस वन्।

केंब य यदग कि अनुस य कि दा। बेसब के गर्दे द बब स श्रेब है।। बदब कुब ग्रैब के सर्दे य सूब ग्राह्म

### वेश य न्द।

शुःचियःतरः यक्ष्ट्रीं प्रतः त्यक्षः योटः। इट बुःच स्थरकः येक्षः योः त्यः वेक्षः बुक्षः यः यः यह्न दः त्रः स्थरः व्यक्षः योः त्यक्षः योक्षः दटः स्थर्भकः त्यकः योदः प्रतः त्यक्षः विद्यः योः द्वयः यादः ह्र्याः यः वस्य स्थरः दिन्। बुक्षः द्वयः त्यक्षं प्रतः त्यक्षः योदः त्यक्षं व्यवः यादः विद्यते योदः विद्यते योदः विद्यते योदः विद्यते योदः

> देशवाहेबाडेटायम्या देशवाहेबाडेटायम्या

द्य पर केंब्र ग्रुट ने हु हा।

दे चलेत मने मुब्ब ग्रुट ने हु हा।
केंब्र न्द्रीटबर ने ते देंब्र न्य न्दा।

दे चलेत लेन्-दिर हेब्र खु चलेना।

दे चलेत लेन्-दिर हेब्र खु चलेना।

दे ते-प्यट-द्वा श्री चहु वा।

दे हेंब्र ब्रा प्यट केंब्र ग्रुव चहेंना।

ब्रैसःचर्ह्नेदःचःवदेःवगवायःचःभेदःद्गी। ब्रेसःचर्ह्नेदःचःवदेःवगवायःचःभेदःद्गी।

द्वी श्रांश्चर भ्रुं त्या भेश्च भ्री भ्रम स्थान मानव द्वी माय स्थान स्यान स्थान स्य

व्यायास्य विकासियास्य स्थायस्य स्थायस्य विकासियस्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स

> है 'क्षुर'र्दे 'स'न्द्र'रद्देश'यश्व। सर'ग्रे 'श्रेद'र्दे 'से 'श्रूद'य। दे 'यदिव'र्वेद'र्से द्र्य न्द्र'रदेश'यश्व।। केंश'ग्रे 'नुद्वेदश'ग्रद'र्से'सर्वेद'र्दे ।।

बेश श्रेयशके देव श्रेयश्य प्रति हिन्दि स्थाय केत्र त्यश्य केत्र त्यश्य विश्व स्थाय स्था हिन्दि स्थाय स्था हिन्द्र स्थाय स्था हिन्दि स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

ब्रेशक्र्रंट्यासुराद्रराष्ट्रम् क्रियाक्रियाच्या

देवे धेरा

वैदःच श्रामुब्राच्ची। यट्याद्राच्चीयायात्र्याच्चीयायायात्र्याः विद्याप्त्राच्यायात्र्याः विद्याप्त्राच्यायात्र स्राच्याय्याच्यायात्र्याच्चायात्रे मुद्रेव त्यस्य विद्याप्तायस्य यस्य स्राच्यात्र्याः स्राच्याः स्राचः स्राच्याः स्राचः स्राचः

यक्त्राचन्द्राचिक्षायाय्याव्याव्याची स्वर्धः स्वर्धः विकास्याव्याव्याः स्वर्धः विकास्य विकास वि

है'क्षेत्र'स्रत्र'स्य स्थावहात्व॥ इटाविषाः स्वटायनार्थे । त्युत्रायन॥

बेशनु यन्त्री न्यो यहूँ न पर्देश

दे'चलेव'र्वेव'र्बेदश'सुम'वद'व॥ र्केश'ग्री'द्वीदश'ग्रद'र्बेशमर्वेद'र्दे॥

वेशर्नेव यह्नव है।

### 178 द्व अ केंश द्वीदश वर्शेंद्र यदे हुअ चन्द्र

यर् याय डेन केंब न्दीरब मी श्रु यर्ब हेंर य मुर तु हेंनाब यर श्रेन वा ने स्वयमें वही यर्देर है स्वन्द हि होन्य ये में बन नहेंब ग्राय केंब मी न्दीरब सुन्नेंदब की विदेव देव यदी

सर्दे व बग्धे द्विद्य य वै॥
देव की स्य ह द्वे य यवि॥
क्य की भ्रु य स्वाय य य दि॥
क्य की कि के देव देव दि॥
देव ये देव विष्य की देव देव दि॥
यह्न से द यश्च ये देव देव दि॥
यह्न से द यश्च ये देव देव देव दि॥
यह्न से द यश्च ये देव देव देव देव विषय देव से विषय से विषय से विषय देव से विषय से व

बुँग्राचित्रः विद्यान्तः त्युम्। द्यान्यः त्यान्यः विद्यान्यः त्याः विद्यान्यः त्याः विद्यान्यः वि

पायबिन ही।

बर्बा मुबा ग्री यात्र व श्रूपवा दी।

यारकें हिरादिव हैं हे थे था। द्याय दे है दायह या शुराया। दे कें दे दे द्या या यद थे था। यह राष्ट्रिया या या दायह थे था। यह राष्ट्रिया या या दायह थे था।

द्युत्तप्रदेशस्त्रित्रप्रस्तरम् वादर्शस्य प्रस्ति स्वर्ध्वरम् स्वर्धवरम् स्वरम् स्वर्धवरम् स्वर्धम् स्वरम् स्वर्धम् स्वर्धम्यस्य

180 रहा अ केंश न्दी दश वर्शेन यदे इस वन्।

न्द व्या वर्ष के मेश पहुंच जश की पूर्व पहुं व वेश श्वित शवर

इं हे हे सुते हिर हे रावहिता। हेंग यश्र श्रे मेंग वेंच वश्र हो। महत्त्व मालद शुराय श्रव हता। महत्त्व मालद श्रीय श्रव हता। महत्त्व मालद श्रव हता। महत्त्व मालद श्रव हता।

ब्रेशसर्ने में मुद्रायशयान्य महत्व या धिदार्दे॥

र्गे. यत्तर यु. व. शेर् यः व्या

योश्चर-दिश्ची-त्यर-त्यीर-रश्च-श्चेश्चर-त्यः श्चेश्चर-त्यः श्चेश्चर-त्यः श्चेश्चर-त्यः श्चेश्चर-त्यः श्चेश्चर-त्यः श्चेश्वर-त्यः श्वेश्वर-त्यः श्वेश्वर-त्यः श्चेश्वर-त्यः श्वेश्वर-त्यः श्वेश्वर-त्यः श्चेश्वर-त्यः श्वेश्वर-त्यः श्वयः श्वेश्वर-त्यः श्वेश्य

क्रॅबरग्री:८व्ही८बर्खर्,श्चें.स.लुक्षा व्रस:सम्बद्धरात्वावा:पर-एक्टीर-प्रास्त्री।। ट्रबर्:सम्बद्धरात्वाव:फ्रिक्ट्रिंस्स्यस्त्री।। क्रिवा:स.चर-सवद:ट्रिंस्स्येट्री। में के महिराय न्याय के निष्ठ यह क्षेत्र क्

(अ) श्राचनेत्राचकार्यं प्रमुक्त स्त्राची स्वया स्त्राचित प्रक्षेत्राच स्वया स्त्राचित प्रक्षेत्राच स्वया स्त्राचित प्रक्षेत्राच स्वया स्त्राचित स्त्राच स

182 न्स् अर्केश न्वीदश वर्श्नेन परि इस वन्।

ग्डर यन्य यने न्टःह्याः केन् ग्री। र्षेत्र प्रत्य व र्रेया द्वीत यदि यद्यशा।

बेश य रूर।

है:सुर:सूर वर्षेत्र धुेस ने वर्षेत्र॥ एशुर व सेन् वर्षेट्स केन् न्ही।

बुद्राक्चिर.ध अर विश्वरक्षार्ज्ञा

दे के बार्-निवास मुद्याय प्रमुद्य प्रति ही प्रति निवास प्रमुद्य प्रति हो। क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त प्रमुद्य प्रति हो। विद्यास स्वाप्त प्रमुद्य प्रति हो। क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त प्रमुद्य प्रति हो। क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त प्रमुद्य प्रति हो।

हे.क्षेत्र.प्रेव.क्षेव.प्रे.हिड्या ट्रिश्चरत्रकाशीव.धे.प्रेट्र.पाट्यत्य.लट्या हे.लु.चट्ट्य.पावट्य.श्चित्य ट्रे.लु.च्ट्र.चे.पाट्यत्य.लुच्या ट्रे.लु.च्ट्र.चे.पाट्यत्य.लुच्या

दे प्रतिव क्षेत्र क्षेत्र का श्रीय श्रीय प्रति।। क्षेत्र प्रति का दे त्रा क्षेत्र प्रत्य प्रति।। वर्षि र प्रत्य र विद्या के श्रीय प्रति।।

ब्रैटशताश्रवम ब्रैव त जब ब्रैट ब्रैट जेशल पड़ में या स्था जिट क्षेत्र ज्या होता व्याप्त क्षेत्र जिट क्षेत्र ज्या क्षेत्र क्षेत्र ज्या क्षेत्र क्

## श्च.एच.पर्या.पूर्य.यूर्याया.पर्वीमा

द्यायम्य स्त्रीम् स्वाप्त स्त्रायम् स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्

यम की निस्त्र श्राम्य व यदे हैं र स्ते र निस्त्र स्त्र श्री स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् यहंत्र स्त्र स्त्र

गुःश्वेटाहे क्षेत्रा पश्चन्य प्रति स्वर्गा विकास स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्

### 184 न्तु अर्केश न्वीत्स वर्सेन् यदे इस वन्ता

य पायम नेदे रें वें बार्य मी नवें प्रमान परी

प्रेथःशूरमःप्टायः वृगःश्चैः प्रमः चर्॥ विश्वश्चार्यः प्रमः वृः प्यशः प्रमः ग्वीमः॥ सः प्रः श्वैभः द्वाः सर्वेः प्यशः प्रशः ग्वीमः॥ विश्वशः प्रदेशः प्रशः वृशः प्रशः वृशः प्रशः॥

त्री | ट्रेंब.ता.सर्ट्.तम्.यीट | १९व.स्ट्रांत.तम्बत्.यीट ट्रेंब.स्ट्रांत तम् क्षेट तम प्रश्चेत त्र खुन सरमा मेश्ना तम्म म ज में मार्ट्य प्रत्य प्रत्

> द्देग'हेद'य दे'दे'यदिद्यानिवाशा स्त्रास्त्रस्त्रस्य दे'ये अर्वेद्या। स्त्रास्त्रस्त्रस्त्राद्याः स्त्रास्त्रस्त्रस्त्राचेत्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्

वेशमञ्जूदशःश्री।

चुन्यः विद्यसः सुदः श्रीः द्येशः र्हेशः श्रीः श्रुः श्रूदः यये स्तृतः द्वी क्षेत्राशः श्रु चुन्यः विद्याने विद्याने स्त्रीः द्वीः स्त्रीः श्रुः श्रूदः यये स्तृतः द्वी क्षेत्राशः श्रु इ.सेर.स्थे अ.प.स.चील्याकाकी स्तरा। इ.सेर.स्थित तथा चील्याकाकी स्तरा।

विश्व श्रुव प्याप्त व्यवस्था विश्व श्रिव व

दे.चलुब.कुंब.झ्यस्य.ग्रीयःम्प्यम्यस्यस्। दे.वे.सम्यामुक्षःवेक्षःश्चेःचम्प्यम्यस्य

बुबायर्र्धावास्त्रं । विटानी क्री र्ह्माय तमाप्तिवाबाग्रीटायाम्याम्बाद्येयात्रेयात्रे हो। अध्ययास्त्रं श्रीप्यया बुबाय्येयायास्त्रं श्रीप्यायं कृष्यं सूर्यायदे श्रीप्यायः सूत्रं ग्री श्रीप्रायः स्

> हैं क्षेत्र श्रुव या त्यश्चित्य या श्वा द्यक्ष के दे श्वेद या त्यश्चित्र या क्षेत्र ॥ के स्वीत्र के विद्या त्यश्चित्र या क्षेत्र ॥ के श्वेत्र श्वेद या त्यश्चित्र या स्वा

दे.क्षेत्र.लट.बुशबा.गीव.वबा.ध्र्व.शूटबा.ततु.बुीय.बुशबा.क्व.ईशबा.ध्र्य. तायधु.टटा। शारट्रेबातपु.श्रूबा.यु.स्वी लूच.ध्य.श्रूयबायश्च.टटा। शु.रह्याबा तबार्वा.तपु.रचंबा.यु.श्रूबा.यु.श्री लूच.ध्य.श्रूयबायश्च.टटा। शु.रह्याबा खुबाबाबरबा.धे। ब्रूच.शूरबात.रटा.चेबा.यु.श्रीवा.तपु.श्रीवा.तपु.श्रीवा.तपु. 186 ५ तु अ केंश ५ वुँ दश वर्श्ने ५ यदे हु स चन्।

र्याय वर्षेट मी अर्देर मासुरस मिट । दिस अवव यस गुट । विस

वित है हैं व क्रांस है स श्रुमा वित्र हे व वसस हि में व तम द्युमा वित्र है के दिया है स श्रुमा वित्र है के वसस है से श्रुमा

हूं बाब तर विद्।। कूब ग्री देवेट बाबे श्राया के श्राया के या श्राया के या व्याया के बाव के श्रीय तर की श्रीय हैं दे हैं। से या या व्राया के श्राया के श्राया के श्राया के श्राया के श्राया के श्रीय के श

सु-पड्-प्र-मिन्येस हु अध्य प रयः हु अय परे केंसा है। केंग्स पर्व पर्व से स्वाप्त केंग्स हिंग्स हु अध्य पर्व है।

> हु:विरःश्वेदःचां येदःदां विश्वा। यहेषाःहेवःवःवेद्येदःचेदःग्रुदः॥ देःधिःयवश्वयःश्वेदःचां वेदा। दरःचेदःवःवदःश्वेदःयःवेदा।

बेश पश्च वशा र्वेव वी

क्षेदःर्चे सेद्रायदे त्वेद्रायः यथा। क्षेत्र सेद्रायाचेयः द्रायः यथा।

# 

प्रमा

प्रम

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रम

प्रमा

प्रम

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रमा

प्रम

स रेगा मुंत श्रीका यहेग हेत वेका। यह द्वी के प्रति कर के मुक्त महित विकास दे क्षी के प्रति के स्वास मुक्त महित ।। इस यह के स्वास के स

ड्रेस.प्रमुक्तःस्। चयानवानुःनःशुन्यतिःयदेशयाय्वेसःशुन्यः। वयानवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुःशुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यतिःयदेशयाय्वेसःगुः। व्राण्यवानुःनःगुन्यत्वेसःगुन्यः। व्राण्यवानुःनःगुन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यान्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्यवानुःन्यः। व्राण्

दे.क्षेत्रामश्रद्धात्रस्य स्वीत्राचीक्षत्रभावत्रः त्वाचात्रस्य स्वीत्रस्य स्वीत्रस्य स्वीत्रस्य स्वीत्रस्य स्व त्र प्रमानश्रस्य स्वात्रस्य स्वीत्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात स्वित्त्वसास्तित्व हो।
स्वित्त्वसास्तित्व हो।
स्वित्त्वसास्तित्व हो।
स्वित्त्वसास्तित्व हो।
स्वित्त्वसास्तित्व हो।
स्वित्त्व हो। निव्यान्ति हो निव्यान्ति हो।
स्वित्त्व हो। निव्यान्ति हो निव्यान्ति हो।
स्वित्त्व हो। निव्यान्ति हो निव्यान्ति हो।
स्वित्ति हो। निव्यान्ति हो।
स्वित्ति हो।
स्वित्ति

यर् प्राप्ता वर्षेत्राचर्ष्राक्चित्राचरण्यात्रेत्राक्चित्राचरण्यात्रेत्राक्चित्राचरण्यात्रेत्राच्चित्राचरण्यात्रेत्राच्चित्राचरण्यात्रेत्राचर्याः वर्षेत्राचरण्याः वर्षेत्राचर्याः वर्षेत्रचर्याः वर्षेत्रचयः वर्षेत्रचयः वर्षेत्रचयः वर्याः वर्याः वर्याः वर्षेत्रचयः वर्षेत्रचयः वर्षेत्रचयः वर्याः वर्य

पत्रस्तर प्रभव प्रति मुक्त प्रति मुक्त प्रति स्त्रस्त प्रमुक्त प्रति स्त्रस्त प्रमुक्त प्रति स्त्रस्त प्रमुक्त प्रति स्त्रस्त स्

दे.चलेव.बार्चव.वश्वासःस्ट्रायबा। ब्राच्ट्रायदे.यच्यास्यत्व्यूटा। ब्राच्व.योद्रायमःयव्यवार्षेद्रयम्। वेश.क्ष्व.वाट.वीश्रयञ्जूपःयमःव्युवा।

वेशमञ्जून हैं॥

वर्षेः ताक्षाच्यं वसकाक्ष्या विद्यात् क्षाक्षाच्या विद्यात् क्षाक्षाच्यात् क्षाक्षाच्यात् क्षाक्षाच्यात् क्षाक्षाच्यात् क्षाच्यात् कष्णात् क्षाच्यात् क्षाच्यात् कष्णात् कष्णात्

रि.क्रीन्य ताल प्रेस्ता के प्राप्त के प्रिस्त के प्राप्त के प्राप

सर्वित्तपुर्व् सात्तुत्त्वम् स्वम् सार्य् त्यात्म स्वम् स्वम् सार्य् त्यात्म स्वम् स्वम् सार्य् त्यात्म स्वम् सार्यः त्यात्म स्वम् सार्यः सार्यः स्वम् सार्यः सार्यः

देवै:मानेन:चॅत:चॅन प्रेंश्य प्रवे:प्यम् क्यांश्वःश्वःश्वः प्यम् प्रवेतः चित्रः चित्रः

म् स्मित्रम् वित्रम् वित्रम् क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्रम् वित्रम् वित्रम

देश्व-प्रदेश हेव-प्याय तीय श्री श्री-प्रमुख पर प्यत्य प्रदेश निक्त स्थान मुंद्री विक्र मुंद्रिय स्थान मुंद्रिय मुंद्रिय स्थान मुंद्रिय स्थान मुंद्रिय स्थान मुंद्रिय मु

### 192 द्व् अर्केश द्वीदश वर्शेद् यदि हुस वन्।

येत् यम गुम्य प्रा इस य वस्य उत् तृ श्चम्य य धित हीं विश महाम्य सी।

नेश व केंश शै न्विदश ने केन या क्यु न्द मीव शि व श्रून यश्रुव यदे धुना

केशमाश्चरमाहि। स्वाप्तासेन यदे व्यव ह्वास्त्रस्थ कर् की हिन्ना स्वाप्तास्थ कर ही स्वाप्तास्थ कर है स्वाप्तास्थ कर ही स्वाप्तास्थ कर ही स्वाप्तास्थ कर है स्

ने दिन त्री विश्व यान्य। वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष क्षेत्र क

ह्यायास्यायायपुर्कुल्वेय स्मा। म्यंच्यायास्यह्यायापुर्वे स्मा। म्यंच्यायास्यह्यायापुर्वे स्मा।

ने:चिवेत:श्रु:मार्केशःश्चेच येन घटे।। श्चें र:च:चम्रुव:घटे:न्चर:न्व:व्या। ब्रग:य:येन:घटे:पॅव:फ्व:न्या। श्चे:च थे:वे:श्चु:बेव:वें॥ वेश मशुस्य श्री

क्रेय में क्रिया में ब्रिय क्षेय प्रश्नेय प्रते क्षेय क्षेय प्रते क्षेय क्षेय

श्रद्धाः भीत्रः व्याप्तः व्याप्तः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्य

वश्व की हुंब तबिता की त्यां का बहुव की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की सुंच विदाय प्राप्त की सुंच विदाय प्राप्त की सुंच विदाय की सुंच विद्या की सुंच की सुंच विद्या की सुंच की सुंच विद्या की सुंच की सुंच विद्या की सुंच की सुंच विद्या की सुंच विद्या की सुंच विद्या की सुंच की

यदीःयायसय वुःदे यद सेद्।। यदाद्वाःकेदायःस्ट्रां स्वाः यदाद्वाःकेदायःस्ट्रां स्वाः यदाद्वाःसेदायःस्ट्रां यदाद्वाःस्व।।

बेबाम्बुद्द्यायाधेवार्वे॥ दे केदायाब्रुद्वायाधेवार्वे॥

#### 194 रस् अर्केश र्वेट्टिस वर्क्ट्रेर परि इस वस्त्।

क्षेयाबाब्ध यस्त्र यदि यदिवाही हो यद्य ग्राम्स्य सम्प्राप्त हो। त्या यदि बोसबार्देन सक्षेत्र यदि द्वीम।

## है भेर के या त्राचायर॥

ब्रिश्य म के ज्ञ के सह प्रतिष्ठ श्रीक्ष केंद्र मान्नाय बिहा। अत या व्यक्ष व्यक्षेत्र प्रति व्यक्षित्र प्रति व्य श्चीय य दह सूत्र मान्डिम हिं से मान्य या धीन श्रीहरा। सेन प्रति न हिं स्वाह प्रति विवाह स्वाह प्रति स्वाह प्रति स्वीहरूप के ज्ञीत स्वाह प्रति स्वीहरूप केंद्र मान्य विहा। सेन या विवाह स्वाह प्रति स्वाह प्रति स्वाह स्वाह स्व

> श्चेत्र-दर-तु-चासुना-श्च-द्रद्रा श्च-नाठव-नोर्देद-दद-सुन्य-त्य-र्सन्या। श्चेत-य-सु-धिका-श्च-द्रा

## वेशयह्रव डेट्। र्वे वी

दे'चलैव'र्देद'ग्रम्थय'च'धे'श्रेसम्। दर्देद'द्र'ग्वेद्देद'श्रेस्य'ये'र्ये'द्रद्रा। र्मेद्र'च'द्रद्र'वेश्चेर्संस'हे। श्चेव'च'स्थेश्चश्चेव'चर्रद्युर्ग।

 पश्चित त श्रेश्च धूर तर श्रेत याला व तश्च तर्न श्रेत श्रेत श्रेत तर श्रेत्र त्य श्रेत तथ श्रेत वश्च व प्रति वश्च व प्रति वश्च श्वेत व प्रति वश्च व प्रति व प्रति वश्च व प्रति व प्र

दे वस बाश्चित तहाँ | निर्मात के से प्रक्रित प्राप्त के से प्रम्य प्रम्य प्राप्त के से प्रम्य प्रम्य प्राप्त के से प्रम्य प्रम्य

वशक्तंत्रात्वेत्रात्तेत्रात्ते अध्यात्रात्त्रात्त्र्यात्रात्त्र्यात्रात्त्र्यात्रात्त्र्यात्रात्त्र्यात्रात्त्र वशक्तंत्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त् विश्वात्तात्त्रत्त्त्राव्यात्राव्यात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात् 196 न्स् अर्देश न्दीत्श वर्सेन् परि इस वन्।

दे प्रविवर्रिक्ते वी

दे:चिवैद्रःदेंद्रःग्रम्थयःचःधैःसेसस्। दर्देद्रःक्ष्यसःयसःक्षेक्षःद्वेःसःस्व॥ धे:वेस्रःसे:धैसःद्वेःसःचर्धेग्। देःवेद्रःदेंद्रःग्रम्थःसःधैदःदें॥

म्बद्धाल्यात्रः स्त्राच्यात्रः स्त्राच्यात्यः स्त्राच्यात्यः स्त्राच्यात्रः स्त्राच्यात्रः स्त्

य्यान्य म्यान्य विश्व व

मिलेश्वर्याक्षेंद्राय लेट्रामिलेश्व व्यव्यास्त्रम् व्यव्यास्त्रम् मिलेश्वर्याक्षेत्रम् मिलेशेश्वर्याक्षेत्रम् मिलेशेश्वर्याक्षेत्रम् मिलेशेशे

क्रॅंटःयं केट्र वे क्रॅंवःयदे अर्दे॥ कुत्यः यश्चः दे क्रेंट्र ग्रह्म श्रद्धःयः दे॥ दे : द्वाः गुवः ग्रीकः क्रॅंवः क्रॅंट्सः क्रॅंव॥ वस्रकाटे क्रस्यः यस् ग्रीट्र संस्थित॥

क्रसाकायन्त्रात्रहेत्,त्तर्जीरात्र, वीष्ट्रात्तर्जीरा क्रसाक्षश्चन्यः स्थात्र्यः विश्वात्तर्जात्रः विश्वात्तर् श्चित्रः त्रम्भा विश्वयः त्रम्भात्तर्जीरः त्रम्भात्तर्णात्तरः स्थात्तरः स्यात्तरः स्थात्तरः स

#### 198 न्सु अर्केश न्दीनशामार्शेन यदि हु स यन्।

हिन् अन् यर प्रमुद्ध यश्चरम्य अन् यहिश हेंग्य यर द्युर यश न्वेंशः यहिने धेवर्वे॥

> यन्नान्दयन्नाः अन्यन्तः अवः हि॥ संस्ति क्रुं विस्यम् न्याः स्वा। यने न्दः स्वायस्य स्वायः स्वा। र्वे संस्थानस्य स्वायः स्वा।

*बुबाचबिदबात.र्टा*। ह्याबात.र्टेग.श्र.त.जब क्या.

र्षेत् यश्वस्त्रयःयम्ब्रीः मुँत्यः है।। योदःयश्चीदःयः यदिः त्यः योदा। दर्देश्चः दृदः दृदेश्यः योदः यदिशः विश्वःयश। यद्गः हैदः स्त्रेत्र यें स्त्रयःयमः मुँत्य।।

मुख्यात ज्ञानुनागुन्य क्षान्त्रात्त्र्यात्त्र्यात्त्रम्यात्त्र्यात्त्रम्यात्त्र्यात्त्रम्यात्त्र्यात्त्रम्यात्त

श्रःथः न्युत्यः वः व्यदः स्वा। देः यः येदः यमः यवशःयः सुम। र्वेव:र्येदशवदाव:यो:वेव:गुदः॥ दे:पवेव:दे:या:येद:पर गवशा

> हे.के.च्य्रे.क्यं.क्यं.व्याच्यात्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य टे.क्यं.व्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्

वेशमञ्जूदशःश्री।

चल्चित्रास्त्रम् वित्रक्षेत्रम् वित्रक्षेत्रम्

र्केशन्द्रीह्याम्हिरायन्त्राध्याधित्र। यत्राधेन्याधितःश्चेशाययहःश्चेत्र॥ यत्राधेन्याधितःश्चेश्चयायहःश्चेत्र॥ केरक्षरायन्त्राकेश्चयम्बायरान्॥

है। विरायमानुमान सम्बायाय विष्यमान स्वायमान सम्बायमान स्वायमान स्वायमान स्वायमान स्वयम् स्वयम् स्वयम् स्वयम् स स्वयम् यदि स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यम्यस्यम् स्वयम् स्वयम्यस्यम्यस्यम् स्वयम्यस्यस्यस्य

> क्ष्यायाः सेन् यदिः क्षेत्राशुक्या। सन् सेन् स्क्रीकायान् सेम्बाकास्मिन्।।

 क्षेत्रः त्रि क्ष्यः या क्ष्यं व्या प्रत्यः क्ष्यं व्या या विष्यं या विषयं या

# तर्ने नः क्षेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्रा। स्त्राचेत्राचा क्षेत्राचा क्षेत्रा।

वी स्वायद्र्याने स्वायद्वात्राय्ये स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रायं स्वायद्वात्रयं स्वायद्वात्यं स्वायं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्यं स्वायद्वात्यं स्वयं

ची.य.चीश्रम.त्र्यास्य अश्रम.स्याचेत्रा। श्राप्ताम्ब्रम.त्र्यास्य अश्रम्यास्य स्था

## अर्केष्ठिन्सेअस्त्वे क्ष्यूर्ये द्वीत्र्यते॥ र्केस्रके स्टायबेव सेत्र्य भीव॥

चतुन्यन् । विश्व चनाये हुन्यत्वे प्रस्ति । श्रुप्त विश्व स्तर्भ स्त्र स

दर। क्र्यम्भन्यत्रित्रम्भन्ति। क्र्यान्तेन्त्रम्। सार्चेन्यपर

वेशमाश्चरकार्स्या

त्युन्यः द्वान्तः क्षेत्रः क्षेत्रः च्यान्यः व्यान्तः । व्यान्यः व्यायः व्याय

त्वुराव दर। व्यास श्र श्रुवायाय हुंयादरा दे इसम श्रुवें व वस् वर्षे।

हे'ॡर'ब्रुक्षअयदे'र्क्नु'व'द्या। ऍन्'गुट'अर्वेट'टा'अ'धेव'ट्या।

बेश च य वे द्येश यश्रुव याधिव या दे यविव दुःर्देव वे। दे यविवार्वे वार्ये वार्ये या दे यविव दुःर्देव वे। रे यविवार्वे वार्ये वार्ये या ये यविव दुःर्देव वे। रे यविवार्ये वार्ये वार्ये वार्ये या ये यविव दुःर्देव वे।

विश्व महित्याही हिता पर्ने हैं ने प्रविद्या मिने महा परि है न सिंदी अर्ने प्रवा

हे क्षेत्र प्रश्चाय श्रीत श्री प्रति हैं व र्यो स्थाय श्रीत श्रीत

बेशम्ब्रुदशयःषेत्रत्त्।। देखाङ्गीयःयरःग्रेदःयःयङ्गदःयःदी

> यन्यान्द्रयन्यायीः क्रिअः हेँयाः न्द्रा। क्षेत्रयीः यतुः लेखाः क्रुः यळ्वः ग्रीका।

#### 204 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्शेन् परि इस वन्त्र

दविर्द्धत यथुं से दविर्यः सम्बद्धाः स्था

स्वार्यात्वर्षात्वर्ष्यात्वर्ष्यात्वर्ष्याः स्वार्यात्वर्ष्याः स्वार्याः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्

षे ने बाहूँ ग्राचाये सुवा है। क्रेंग्बास पाउर पार्च गार्हेग

য়৴য়৽য়ৣয়৽য়য়য়৽য়ৣ৽য়ৣ৾য়ৢ৽৻য়য়৽ড়৴৽॥ য়৴৽য়ঀ৾ঀ৽য়য়য়য়৽ঢ়ৢঀ৽য়য়৽ড়৴৽॥

द्रा देखादह्यायाक्काकाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्याया

सद्य मुक्ष ग्रीस वयस नद् क्षेत्र यस यद् तर् सुम् र तह मुक्ष स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व स्वास्य स्वास्य प्रता वाल्य ग्रीस न्यार स्वास स्वास्य स्वास्

> र्बः र्बेरः स्टर्भिषः र्बेरः स्वः क्षेत्।। बद्धाः सुकाः हुषाः यदेः र्केवः क्षेत्रः उद्या

> श्चुःमञ्ज्यः द्यायी स्टब्य कुर्या है।। श्चुःमञ्ज्यः दयः दीः देशः द्याः है।। र्भुःमञ्ज्यः दयः योगः स्टब्य देशः है।। र्भुःमञ्ज्यः द्यायी स्टब्य कुर्या है।।

दे.क्ष्र-अ.रम्। तर्रम् मृत्वे मृत्वे श्रे श्रे श्रे म्यून्य यह मृत्ये स्त्रे म्यून्य प्रम् मृत्ये प्रम् प्रम् यह मृत्ये स्त्रे म्यून्य प्रम् प्रम्

ख़ॱॸय़ॱॾॖॣॖॖऒॹॖऀॱॸॕॱक़ॕॱॺऀॾऻऻ य़ऻॖॸॱॺॊॱॸॖॱॺॸॱॺॕॸॖॱय़ॱख़ऀॿऻऻ

क्षे विरायार्श्वमान्नार्यात् स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्राच्यात् स्त्राच स्त्

गुन त्यक्षत्तिक्षत्तात्वक्ष ग्रम्। श्र प न्या व्यक्षिम्। स्या व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्षय व्यवक्ष्य व्यवक्षय व्यवक्य व्यवक्षय व्यवक्य

> ড়ঀয়ৼয়ৢঀৣ৾ৼॱয়৾য়ৢ৽৻য়য়৽৻ঽ॥ ড়৽য়য়ৼয়ৢয়ৼয়য়য়য়ঀ৽য়ৢয়ঀ॥ ড়৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়ঀ ড়৽য়য়ড়ৢ৾য়ৼ৽য়য়য়য়ঀ৽য়৽য়ঀ॥

षेत्राचु प्राया संग्रामा स्याप्त स्तु मास्य स्वा

द्ध्यानेश्वत् गुत्रायह्रम्श्वति द्वित् । व्यक्ति वित्यक्ति वित्यक्त

हे स्ट्रिम् क्रॅव प्रतिव स्ट्रिक में प्रतिव।। ने स्वर्के लेगायहगायम ह्या

बेबार्झेव'रा क्षेत्राच री क्षे त्या क्षेत्राच दे क्षेत्राचेव'यदे हिरारी क्षेत्रा है। दे

अन्ति स्वापानि स्वाप

दे न ब हे न केट त्र्ये या प्रमाय त्यु हाय मान्य के के मान हाय तुन है। वें माय महेन केट त्र्ये या प्रये महामान विकास के के मान हाय तुन है।

> हेवःवश्वःतवीवाःतरःतवीरःचश्वःत।। हेवःवश्वःतवीरःचरःतवीरःचश्वः।।

ट्रेश्राच.कॅर.वोश्रीरश्राताःकेर.टी

> व्यक्षत्रम्थः । विश्वस्यक्षः स्टेस्ट्रिक्यः स्ट्रिक्यः स्ट्रिक्यः

त्यः मुद्देश्व स्त्रः त्र स्त्रः स्त्र स्त्रः स्त्र स्त्रः त्र स्त्रः स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रः स्त्र स्त्रः स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रः स्त्र स्त

देविंद्रायः मुद्दाद्यः भीत्रे विक्या देव्ह्यः यदेदः यन्त्रे याक्ष्यः केवा द्यः अक्षेत्रः दुः यञ्च्याः यदः युद्धाः

त्रम्यास्त्रम् विश्वास्त्रस्य विश्व

क्रम् निकास स्थान स्थान

ब:८८:८:८:५८:पश्चिम:अवय:८८:।। स्र क्षेम्बर:७व:र्वेश:मानेश:मा:८८:।। म्ह:बम:र्केश:य:र्बेश:यर्नेमश:८८:।। स्रु:२:यरेवश्व अवय:वेशमिनेश:पिकामिनेश:८८ ॥

त्रस्तिन्द्रस्य प्रत्यात्र क्रिंत्र स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स् स्रम्य स्त्रम् स्त्रम्य स्

न्द्रसर्थेन्'न्द्रस्ययेन्'वि'चु'न्द्र'॥ वे'चेन्'ञ्चम्'चु'ने'य्यय्द्रम्॥ चञ्चस्पनस्यद्वेत्र'नस्यस्पनम्ययेत॥ येम्'य्येन्द्र'न्द्रस्चेन्'य्ययेत॥ 212 न्तु अर्केश न्दी दश नक्षेन् परि हुअ नम्ना

बेशमाश्चरश्रायाधिव र्वे॥

> मुड्याः व्यव्यायः चर्त्त्रेष्ठः चुद्दः द्याः वै।। ने: द्याः त्यायायः ग्रहः द्वः द्याः वै।। मुड्याः व्यव्यायः चर्त्त्रेषः चुद्दः द्याः वै।।

वेशयाश्चरका स्त्री।

पन्न र्वे स्प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य

म्बन्धानक्ष्यः स्ट्रास्त्रम् । पुरुषः प्रतिः स्ट्रास्त्रम् । मुस्यान्यक्षेत्रः स्ट्रीस्त्रम् ।

बेशनु:यादी इदाय:यदायवेदायेदाय:ह्यूदाय:वेदानी द्योःयवरायासूदा यादेदायहूदावशा

अर्द्धव केर् प्रमूर्ति प्रत्य हो निर्मा विकास

बुंश्यसूत्रहो रमनी में वेंश्रात्त्रवा सेंग्रामित सेंग्र

वशसःस्ट के. अ के धर बाजुबासःतस्त्री।

खेबाताय ब्र्याबात में कुर बांबीटक ब्र्रा दिवाबात देवा दि त जबाजीट ।

बुर्ना बुना बु बुर्ना त्या हो।। बुर्ने के अर्वेट प्रमाण

क्षे.चब्र.बील्ब्बब्र.बी.उत्त्वीय।शु.उवीय। क्र्य.बी.भघउ.लु दी.भग्रु.भघय।।

म्दःत्वायीश्वत्रेःत्तृश्च श्वस्यश्चा श्चेःत्दःत्यायाः सम्दर्भाः चेतः स्या त्रेःत्वाः हेवः त्युदः त्यव्यः स्या दर्भेः सः क्षेत्रः हुः श्चेशः स्या त्युः सः क्षेत्रः हुः श्चेशः स्या

### 214 त्तु अर्केश न्वित्स वर्क्षेत् यदे हुस वन्।

बद् बेश अर्देव यम यहें द्राय है।। महःयवेदः ग्रीश दे ग्रम सहा। दे वे बद् देश हैं स्थम यहें द्रा। दे सम्बद्धा प्रमान स्थान स्था

बुःसह्यन्य दे क्रिंक् क्रिंक क्रिक क्रिंक क्रिक क्रि

र्वेग्'अ'यर'न्द्रअधर'न्गे'य।। यशुःय'अन्'छेट'ह्ग'य'थे।। ग्रन्त्रेग'ने'छुर'यन्ग'अेन्'य।। ने'स्ट्रर'यन्ग'न्द्रयन्ग'गेर'यहग्।

त्युः ट्रान्यार्श्वे, यो नेयोश्वार्था श्री द्वान्यात्य विकास्त्री विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास्त्र विकास वितास विकास वितास विकास व

मिन्यः क्षेत्र माध्येत् केषा वित्र स्त्रीत् क्षेत्र के सार्थेषा मित्र स्त्र स

दे दिन दे दे प्रकार के प्र

म्राम्बर्धसम्बर्धः सुन्तः सुन्त

स्यामुसावेशक्षायाम्याम्यान्। देन्द्वेन्द्

त्तरः मेर्स् । ट्रिंब त्दर्भी अप्ताम् स्टाल स्थान्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व त्याप्त प्रत्याप्त प्राप्त स्वाप्त स्व स्वाप्त प्रत्य प्रत्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप

> इस-न्द्रियः यस्यायिः सस्त्रः किन् स्ट्रा। र्त्तुः स्य-न्यायी। यसम्बद्धः स्ट्रियः यीमा।

#### 216 न्तु अर्केश न्तु दश वर्क्षेन् परि इस वन्त्र

ક્ષમ નહેમ સેન વિશ્વ સેના ક્ષ સેન્ ક્ષ્મ શેષ્ટ્ર સેના

या अक्षात्म मा विद्या पा ते वा विष्य प्राप्त मा विद्या के विष्य के विषय विद्या के विषय के विषय विद्या के विषय के विषय विद्या के विषय के विषय विद्या के विषय विद्या के विषय विद्या के विषय विद्या के विद्

र्नेत्र-त्यायः क्रेंद्र या केट्-यो खो से सा ये क्षेत्र या केट्-या केट-या केट

ने प्रवित्र मित्रेष्य प्रति हैं स्टार्य के से क्षेत्र हैं में प्रवित्र मित्र के स्वाप्त हैं से प्रति हैं से से प्रति हैं से प्रति हैं से प्रति हैं से प्रति हैं से प्रति हैं

श्रुवान्द्रम् स्वान्त्रम् या प्रदेश्व वस्त्रम् स्वान्य स्वान्य प्रस्तान्य विष्टा प्रस्तान्य स्वान्य स

भ्रेम:८८:मञ्जूमश्राय:यहेव:वश्राद्वी। ट्री:स्रामेट:यदे:श्रूट:यःद्वुट:॥ श्रे:सेट:दम्माय:यंत्र:हेट:यश्रा र्क्रेश:ग्री:८व्हेटस:वे:स्याहु:वेश्रा

यश्चें अःयम वुर्दे। वश्च हेशःक्री वेश्व यदे तुंश दी। यहगाः क्षेत्र त्युत् त्युत्र यश्च यञ्च हेशःक्री वेश्व यदे तुंश्व यशः

व्यानश्चित्त्वर्यः वित्ति अदि श्वर्यः श्वर्यः

दे.क्षेत्रःश्च लटःचक्षेत्रःचरुःख्चेत्र।

हेव.र्ट.चश्च.ता.संचेच.वश्वा स्थ्र.त्र.ट्व.ता.ता.हेव.वश्वा स्थ्र.त्र.ट्व.ता.ता.हेब.वश्वा स्थ्र.टट.चश्चर.ता.ह्या.ता.वश्च्या स्थ्र.टट.चश्चर.ता.ह्या.ता.वश्च्या

द्रभायम् वेश्वायम् हृंगायम् ह्रायाम् द्रम् यात्रावेश्वायश्चेश्व हे। दे यद्यायम् वेद्यायम् विद्यायम् वेद्यायम् वेद्यायम् वेद्यायम् वेद्यायम् वेद्यायम् वेद्यायम् विद्यायम् विद्यायम्यम्यम्यम्यम्यम्यम् विद्यायम् विद्यायम् विद्याय

ने सुराद्वे यायहेव यायद।

য়्र'न्द्रि'यायहेव'वयार्श्वेया। दे'वे'मञ्ज्यवयश्चेत्र'येदे'न्ये॥ दे'यवेव'स्थंये'स्य'वेष'ग्रेया। र्क्रेय'ग्रे'न्वेद्र्यस्यंहेंग्यरंचेन्॥

या अन्य स्थानित स्थान

ने'मबैव'तु'र्ने'यम्यम्ब'मबी

# कॅबःग्री:५न्दीदबःग्री:रॅ:वॅ:बेबा। इय:यर:वेब:य:वादबःये५:यर्दे॥

त्र्री। क्ष्मानम्भेषानाः भ्रीत्यावाः वाष्ट्रमा व्यक्षान्यम् व्यक्षान्यम् व्यक्षान्यम् व्यक्षान्यम् व्यक्षान्यम् ने स्वरः स्वत्यक्षित्र विश्व क्ष्रीं स्वत्याः प्रत्याः प्रत्यः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्यः प्रत्याः प्रत्यः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्याः प्रत्यः प

रे.केर.म्बा.चे लट.चक्षेत्र तपु.ब्रिम

द्यांचित्रःस्याः विद्याः विद्य क्षेत्रः त्याः त्यायाः विद्याः विद्याः

त्रिक्ष्यः प्रस्तित्रः मित्रः मित्यः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः मित्रः

र्वात्तर्विर्यात् क्षेत्रः वश्वश्वर्यः व्याद्वरः क्षेत्रः क्षेत्रः वश्वर्यः वश्वरं वश्वर्यः वश्वरं वश्वर्यः वश्वरं वश्वर्यः वश्वरं वश्वर्यः वश्वरं वश्

୵ଵୖ୵୕ୣ୳য়য়য়ড়ঢ়৻ঢ়ৼ৻ড়ঀৣ৾য়৻য়ৼ৻ঀৣ৾ঢ়৻য়ড়৻ড়ঢ়ৼড়য়৻য়৻য়ঢ়ৢ৾য়৻য়৻য়ঢ়য়ৢয়৻য়৻য়ঢ়য়ৢয়ৢয়য়য় য়য়ৣ৾য়৻য়৻য়ড়ৢয়৻য়৻ঀৢ৾৻

रियर पर्ये प्राप्त के स्वार्श्व विकास के विकास के स्वार में स्वार

> खेर्-ग्रिक्स-वेश्वत्युर-घ-दे॥ हग्-हु-वर्-वेश्वयेर-घ-र-॥

#### 224 न्तु अर्केश न्विनश नर्शेन परि इस नन्।

क्रेंअस यर एह्ना य इस मुदेस ८८ ॥ सेससस्येन मुदेन ८८ यकुत्य स मुह्नेमसा।

वेशमञ्जूदशःश्री।

नेशव चुन यथित मुने माश्रमायश श्रुवि । वाद मीश्र वर्षि या व्याप स्थित स्था वाद स्था

द्वम वें स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त इस केंस वार स्वेत्र स्वाप्त स्वाप

तक्षियायत्वीयः द्वीयायवायाय्वीयः याद्वीयः विद्वायः विद्व

मुःसस्व तद्वाभिन्तास्य प्रास्त्रा है। दे सदे संक्रिं भीन भीका प्रास्त्रीन

द्रिय वर्षा प्रत्ये। इस वेश वस्त्र कर हुं। प्रति प्रति प्रति स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप प्रति । स्वाप्त स्वाप्त

स्याः क्षित्राचार्या । निः क्षेत्राचाराः । स्याः क्षित्राचार्याः विकार्याः विकार्यः विकार्याः विकार्यः विकार्याः विकार्यः विकार्याः विकार्यः विकार्याः विकार्यः व

विश्व-श्रृत्याः विश्व-श्राः विश्वः विश्व विश्वन्त्रः स्त्री।

#### 226 त्स् अर्केश त्वीदश वर्श्नेत् यदि इस यन्त्।

यदी प्राचित्र प्राचित्र विष्या प्रमुखात्य । क्रिया प्रमुखात्य ।

स्टर्माय अधि वर्षे॥ स्टर्माय अधि वर्षे॥ स्टर्माय अधि स्टर्मे स्टर्मे

ले.चेशकार्यात्रह्मात्मात्रेषे त्री विश्वायसम्बन्धात्मात्रेश्वास्याम्बन्धाः स्थि। विश्वादे क्षेत्राचार्यक्षेत्राचे वर्षः विद्यात्रेश्वयात्रेश्वयात्राच्यात्रेश्वयात्रात्रेश्वयात्रेश्वयात्रेश्वय

म्दान्यक्ताः हुँदारु हुँग्यायदि हुंता दी। हिंग्य हु पठन पानिका है।

सेब्रान्द्रस्थान्द्रयास्यान्द्रभा स्रान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रम्यान्द्रभा स्रान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रम्यान्द्रम्यान्द्रभा स्रान्द्रस्थान्द्रस्थान्द्रम्यान्द्रस्थान्

सक्त हैन हूं बाद्यात स्वार्त विद्या स्वार्त स

भ्रेमान्दरङ्गानाञ्च नमान्दा। भ्रेमान्दर्भन्दरने नम्बिनाधिन।। भ्रेमान्दर्भनार्थि इस्रान्नाम। वित्रेनेन्द्रिमार्थि इस्रान्नाम।

वेश्वाम्बर्ग्य है। वरामी श्चे अकेन हुना गुरायर केन हैन विश्वास्था विद्यासी अकेन हुना गुरायर के वरामी श्चे अकेन हुना गुरायर केन हिना है। विदि श्चिम निवासी अकेन हिना के हिना है। विदि श्चिम निवासी अकेन हिना के किना है।

यत्तर्न क्वर्नर स्थ्विन्य पद्धः स्था यदः द्वारा स्थित्यः स्था

वेशमञ्जूदशःश्री।

देन्द्रशायिक्तात्वे प्रति । देन्द्रशायिक्तात्वे प्रति । देन्द्रशायिक्तात्वे प्रति ।

> क्षेत्रकात्त्रकात्त्रम्थिक क्षुत्रक्षेत्रम् । के सुन्द्रत्यस्यात्त्रेत्र स्वत्यात्त्रेत्र स्वत्या

देशस्त्राच्यात्र्वात्रात्र्वे। स्ट्रिस्य प्रत्यात्र्वे। स्ट्रिस्य प्रत्ये। स्ट्रिस्य प्रत्ये।

यन्ग्राहुःदद्देव्यस्याद्यें स्याः ह्रे॥ संस्थितः सेग्वादाने केन्ते॥

ॡॸॕ॔ॖ॔ॱक़ॺऻॺॱॿॸॖॱय़ॺॱॷॱॸढ़ॱढ़ॸॺऻ। ढ़॓ॱॸॣॸॱॺऻॸॖऀॱॶॺऻॱॿॸॖॱय़ॱॸॖॸॱ॥ ॸ॓ॱॸॺऻॱढ़ॺऻॺऻॱय़ॺॱॺॸॺॱक़ॗॺॱऄऀॸॖऻ। ॡॺॱॖॖॖॺॱॴॖढ़ॱॹॖऀॱॷॖय़ॺॱऄॖॸॱॸॕ॔॥

वीयः तम्भेटः तमार्ज्यः तत्त्रः त्यूयः त्यूयः क्ष्यः त्यः त्यूयः म्यूयः वाः श्वित्राचित्रः त्यूयः ताः तद्वीयः त्यूयः त्यूयः त्यूयः त्यूयः त्यूयः त्यूयः वाः त्यूयः त्यूय

यम् त्युम् विदि स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्

बेसबावि मानिबाक्षः सूदः यावानि॥ कषावात्पः वेषावायः सूदः यादः दः॥ ५५: त्पः वेषावायः यादः सूदः यादः तदेदः॥ वेदः वेदः व्यादेशः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः विवाधिकार्यः सेश्रस है से कैंग्स स्टूर यात्र ॥ इस य स्टूर में प्राप्त न्द्र से न्या ने या स्टूर ने में न न्द्र सेन्॥ ने मुक्त से में से सम्बद्ध यात्र में॥ ने मुक्त से में से सम्बद्ध से में

वेश ग्रम्हरू मार्ग

म्बन्धारी भुदे र्व यस्राया दे।

नेशन्दर्धःनेशन्दान्याः यशा यश्चर्दने केत्रं वेश्वर्धाः उत्तर्भा यश्चर्यने क्रियः यश्चर्यकेत्र्या। यद्वारकेत्रं वेश्वर्थः व्यक्ष्यं व्यक्ष्यः विश्वर्थः विश्वर्यः विश्वर्थः विश्वर्यः विश्वय्ये विश्वयः विश्वय्ये विश्वय्ययः विश्वय्ये विश्वय्ये विश्वय्ये विश्वय्ये विश्वये विश्वय्ये विश्वये

## 230 न्स् अर्केश न्वीदश वर्श्नेन यदि इस वन्।

यीर्र्स । विदे वे मुक्यम वेषायम्बायमा वीर्वे त्याप्त वेषायम्बायमा

> खेट इस्रायम न्याय स्वाय स् त्री स्वर स्वाय स्वय स्वाय स्वाय

वेश गशुरशःश्री।

नुम्स्य ग्री र्वे यन्द्राय दी।

व्रम्ह्याने सेव स्टायासेव॥ द्या सेव दिन्यासेव विन्॥ वृत्र संस्थाय वेया सुरादि ने प्या। सर्वे स्याप्त के साम सेवा स्थान

लुक् नहीं विस्कृतः देश्या प्रस्ता प्रकृतः विकानिक विकानिक वित्रा हो। सुकानिक विकानिक विकानिक

नेशन विन्यम् कृत श्रीम्यायते न्या कृत्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

वस्रक कर नर चल चर्त्। निःसर ह्रॅंट हिन चतुन द्वा यह ग्राह्म सः

सर्द्ध्य पासेन्या उत् म्य प्रम्या। हेन त्युत्तात्ते प्रमान्त्रे त्य प्रम्या सेंद्रायायेन प्रमान्त्रे प्रमानेग्या। सर्द्ध्यायं सम्मान्त्रे प्रमानेग्या।

ष्रायाश्चरत्राःश्र्रा।

अर्देवैर्देव पश्व पानी

सर्म् कृतिः स्वान्य स

वश्रवान्तर्भात्तर्भाताः विवादी । विदेः क्षेत्रः वश्रात्तरः शुः हुं वा त्रितः वश्रात्रः शुः हुं वा त्रितः व्यात्रः विवादिः विव

क्षेत्र पर चुेर पक्ष दे पहेंद्र पर चुकें। य ग्रवश्व क्षा चेश्व चु श्रूर प क्कि केर श्रे बेर सर्व हुत

मुंत न्त्रिंत्र अर्डेन्दि स्टून्य स्टून क्रिय त्रिन्य से प्राप्त है। अर्देन्य प्रस्ति न्त्रिंत्र से प्रस्ति स्टून क्रिय क्रय क्रिय क्रिय

वाव दे प्रतिव गिर्नेग्र परि ग्राह्मण्य पह्नव वे हुस पर । दे सुर पर ।

ष्याचित्रयात्तर्भवतार्भ्य व्याचित्रवार्भ्य

यद्या मुत्रा से अर्थे द्वा त्या से अर्थे स्था से अर्थे स्था से अर्थे से अर

है'स्रेर'षे'द्रग्रथाह्मस्ययाग्रीयादी।। कु'सर्वे'श्रुरायर'सर्वेद'य'स्र्री।

विश्वानु न्याया स्वान्त्र स्वान्त्र

द्र'चलेव'श्चे'चेश'यश्चच्य्चेचश'यश्व।

वेगान है। य सहर या हेर रि. सर्हर शाही विशासह वे वा सर्हर या है

२सव:८८:पर्झेट्:वसव:८सव:प्राया पर्झेस:स्व:५८व:ग्रीक:डे:पश्चीर:सक्केशा डे:स्रेर:८सुक:र्येट:प्यम:प्राया रेव:क्रेव:सर्केम:वें:प्यम:प्राया

दाक्षेत्री कुल्तरःशुःखवःश्चरत्वरः त्रीरायरः त्रीरः स्थितः स्वार्थः वर्षः वर्षः स्थान्तः वर्षः स्थान्तः वर्षः स्थान्तः वर्षः स्थान्तः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्यानः स्थानः स्थ

अवस्त्रियान्तर्भित्रः श्रेतः निर्मा अद्रान्तरः मुस्ति । प्रान्तरः स्त्रियान्तरः स्त्रियान्तर्भे । प्रान्तरः स्त्रियः स्त्

श्रेश्वर्त्तः विश्वर्तः विश्वर्त्तः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्व श्रेश्वरत्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः व श्रेष्ठर्तिः विश्वर्त्तः विश्वर्त्तः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्ताः विश्वर्

जासक्यान्ते। विभागक्षित्यान्ते क्षी सक्यान्त्यम् स्वायान्त्रम् जामा द्र्ये न्यान्त्रम् । निः क्षान्तान्त्रम् क्षित्राचक्षेत्रम् अध्ययान्त्रम् क्ष्यायान्त्रम् ज्ञान्त्रम् विभागक्षित्यान्ते। विभागक्षित्यान्ते। जातान्त्रम् अध्ययान्त्रम् क्ष्यायान्त्रम् क्ष्यायान्त्रम्

> दर्भाः भुः दे : यर्व द्वाः अर्ध्वः प्रदः मुख्या व्यवाश धुनाः दे : व्यव्यायक्षः यह्यः व्यव्यायः प्रदः ॥ धुनाः व्यव्यायक्षः यह्यः व्यव्यायः प्रदः ॥ धुनाः व्यव्यायक्षः यह्यः व्यव्यायः प्रदः ॥

स्राम्भः स्राप्तः स्रुप्तका स्रुप्तः स्रितः स्रुप्ता स्रित्यः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्र विवादा स्रितः स्राप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप्तः स्रुप् स्रित्यः स्रित्यः स्रुप्तः स्

श्री.यु.रु.प्रथायोक्षयाम्याच्यायाच्यात्तर्थाः स्टा|| सिवाद्यातायाच्यारस्यात्वात्तर्थात्तर्थात्तर्थात्तर्थाः

## 236 न्स् अ कॅंस न्विन्स वर्सेन् परि इस वन्।

स्तर्यः तर्ने : न्याः खुर्यः स्व युष्यः सस्त्रा। सुन्यः ने : सर्वे : सुनः हो : स्व : स्व : स्व : स्व : स्व : स स्व : स्व : स्व : सुनः हो : स्व : स्व : स्व : स्व स्व : स्व :

देश्वरायश्चित्रायायश्चाश्चरश्चार्ते क्षेत्रस्य स्त्रम्य स्त्रम्य

यर्ग्व-ग्रॅ-दे-खे-वाञ्चनश्राभुःश्रुश्व।। मृत्य-च-स्रद्यं-र्-त्वृत्यश्रवःश्रुः।। भूत्य-च-स्रद्यं-र्-त्वृत्यश्रवःश्रुः।। प्रदे-स्रवे-च-द्र-श्रु-र-स्रव्यवश्रीः

पर्वीर्यान्, क्षेत्रः यथिवासायसायितायसः स्रेटाः क्षेत्रः स्रितः स्रायस्य प्रायस्य विद्यास्य स्रितः स्रितः स्रीयः स्र

यदिः खे में स्था तु श्रू दाया विश्वास्य विश्य

देवि: धुरा देव गार भेव प्रमुव य वी

श्रेश्वरात्तीःस्त्यात्तेःदेशःहेंग्वराद्वशा देरादीःदेशायश्वरह्णायरादशुरा। श्वर्श्वरार्श्वरादशाद्वाःयरादशुरा। श्वर्श्वरार्श्वराद्वाःदेशःववशा

क्रायाक्ष्मायम् न्यायाय्वयाक्षायात्वस्याय्याक्ष्मायाः क्रियाक्ष्मायाय्याः क्रियाक्ष्माय्याः व्यायाः व्यायाय्याः व्यायाः व्यायः व्यायाः व्यायाः व्यायः व्यः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः वयः व्य

भवर विवी तरु क्षित ही।

न्यनः खुषा केव विते गावसः अर्केषा न्यः।। वित्रा केव किन्ने स्वा अर्केषा न्यः।।

## निश्रायाम्बुसार्याम्डिम्'क्रेन्'हु।। वर्रे प्रसारम्बुस्यायाम्बुर्वे।

प्राञ्चित्त्वत्त्रभे विद्यान्त्रभाविद्यः निश्चे स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वरः स्वर्यः स्वर्वः स्वर्वरः स्वर्वः स्वर्वरः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्

क्ष्मश्चायतः श्रीश्चरः ह्रा | दियाः या सामाश्चराः ता ग्रीवः या विद्याः या सामाश्चराः विद्याः या सामाश्वराः विद्याः या सामाश्चराः विद्याः या सामाश्चराः विद्याः या सामाश्चराः विद्याः या सामाश्चराः विद्याः या सामाश्चरः विद्याः या सामाश्वरः विद्याः या सामाश्चरः विद्याः या सामाश्चरः विद्याः या सामाश्चरः विद्याः या सामाश्वरः विद्याः या सामाश्व

> दक्षवायान्द्रक्षेत्रस्य स्ट्रियाक्ष्यः स्ट्रिया न्द्राक्षेत्रस्य स्ट्रियाक्ष्यः स्ट्रियाक्ष्यः स्ट्रिया स्ट्रियाक्षयः स्ट्रियाक्ष्यः स्ट्रियाक्षाः स्ट्रिया। स्ट्रियाक्षयः स्ट्रियाक्षयः स्ट्रियाक्षयः स्ट्रिया।

> त्रवृत्त्रश्चात्रस्य विश्वास्य स्तर्भा क्षेत्राचित्रः क्षेत्रस्य स्तरम्य स्तरम्य स्तरम्य स्तरम्य स्तरम्य स्तरम्य स्वरम्बद्धास्य स्तरम्य स्तरम्य

दे.अर्झ्ट्यं संग्रेट्यं स्थात्रा अभव्यक्ष्यं स्थात्राची व्याप्त्यं स्थात्रा अर्झ्ट्र्यं व्याप्त्रं स्थात्रे स्थात्रं स्था क्ष्यं संग्रेट्यं स्थात्रं स्थात्रं स्थात्रं स्था

#### 240 न्तु अर्केश न्दीरश वर्शेन् वर्ते इस वन्।

वेग्-यः तदीः यः ग्वस्यः स्म्यस्य इतः नीः द्राः केंस्यः स्मुः दी। यः नेसः श्रेगः गीसः शर्वेतः यत्रः त्युः द्या

बेशमाश्चरश्रयः न्दः र्नेव सश्वन्यः धिवः वेँ॥

पश्चमञ्जीश्वाभ्रान्त्रम्थ्यस्य स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम् यश्चमञ्जीश्चान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थान्त्रम्थः स्थ तलवासायपुरव्याल्यसम्बद्धित्यः विद्या

अर्थि । नावन पर्। अर्थन वाला। अर्थन नामान्य विकास कर्ने क्षेत्र क्

न्नत्यः चर्तः के स्वा क्षेत्रः वित्रा के त्या के त

वश्यान्त्री र्वण्येत्र-प्रान्ध्याक्ष्यां क्ष्यां प्राप्त व्याप्त विद्यान्त्र व्याप्त विद्यान विद्यान

क्षे.स्याश्रमश्चिश्च वश्चित्रयात्री व्यव्यात्र्य स्त्री। न्यमात्रुः स्रोन्यत्ये स्वश्चित्रयात्री व्यव्यात्र्यः स्त्री।

#### 242 त्स् अर्केश न्दीत्स वर्क्षेत् यदे इस वन्त्।

য়ৢ॔ज़ॱक़ॺॴड़य़ॺॱॻॖऀॱॺॖॕॺॱॺऻॺॺॱय़ढ़ऻ। ॹॖॱज़ॸॱय़॓ॱॿॸ॔ॱय़ॱॸ॓ॱढ़ऀॸऻ।

द्रश्चाब्रुद्धः स्वाद्धः त्याव्यः त्यावः त्यः त्यावः त्यावः त्यः त्यावः त्यावः त्यः त्यावः त्यावः त्यावः त्यः

देवे बुरा

म्परम्बाद्धस्य स्थान्य स्थान्य

स्व.त.क्ष्रश्च.पहेंचे.त.र.वेंद्र्। विदे.क्षेर.अश्चश्च.वी.विश्वश्च.प्य. श्व.त.क्ष्रेच.तपु.चेब.तथ.पंत्र.तपु.चे.त्य.वी.श्व.श्च.तपु.चे.त्य.वी.श्व. श्व.त्य.वश्च.तपु.चेब.तथ.पंत्र.तपु.चेब.त्य.वी.श्व.श्च.श्च.तपु.चे.त्व.वी.वी.श्व. स्व.त्य.क्ष्रेच.तपु.चेब.तथ.पंत्र.तपु.चे.त्य.वी.श्व.श्च.श्च.तपु.चे.त्व.वी.वी.श्व. स्व.त्य.क्ष्रेच.तपु.चेब.तपु.चेव.तपु.चेब.तपु.चेव.तपु.चे.त्व.वी.विश्व.तपु.चे मुर्घाबातारीयो श्वीतात्मबाग्रीटा।

श्चित्रयामारामिश्वानेश्वायाः दे॥ श्चान्द्रयाद्वात्वेश्वायाः देशा श्चीत्रयाद्वातेश्चायाः द्वारा श्चीत्रयाद्वातेश्चायाः स्वीर्मा श्चित्रयास्यात्वेशाः स्वीर्मा

वेशःवश्चित्रशः स्त्री।

दे.क्षेत्रःक्ष्र्याचनाचिरःक्ष्यःक्षेत्रःक्ष्रेरःश्चरःवर्षः

ष्ट्रियः रेट्यायः श्रेष्यः श्रेष्ट्रा के य्यम्प्याद्वे य्यवस्य श्रेष्ट्रा ष्ट्रियः दुवाः श्रूट्या सेट्या स्ट्रियः विद्या स्ट्रियः है य्यविद्यः सेवाः श्रुट्या स्ट्रियः

बेन्नम्बर्धित्रात्ते। विद्वायते स्थायत् वित्रस्य वित्रम्य वित्र हिन्न वित्र हिन्न वित्र हिन्न वित्र स्थायत् वित्र हिन्द्र वित्र स्थायत् वित्र हिन्द्र वित्र वित्र स्थायत् वित्र हिन्द्र वित्र वित्र स्थायत् स्थायत् वित्र स्थायत् स्

नेशन्त्रिःस्त्र-विदःश्ग्रसःसंन्यश्चेषाःपतेःस्रा विदेवेःस्त्यानीश्चम्वयःह्मस्यस्क्रेशःश्चःस्री देन्क्षःश्चेःपास्यदःस्वर्णाः देन्क्षःश्चेःपास्यदःस्वर्णाःस्त्राःस्त्रीः स्रोधसःस्वर्णा वादेःश्चित्स्यस्त्रःस्त्रस्त्रस्त्रस्त्राःस्त्राः

# डेबानु:प:५८। यर्ने:ब्रे:क्नुव:यबःगुरः।

बेश्रबःत्पबःगव्दःशेन्दः स्ट्राः हेत्वः देवाः द्वा। ने दबः बेश्यबःग्रन्दः शेन्दः हेत् हेत्ववा। ह्यः नृत्तः द्ववः प्रवादेशः विद्याः स्वाद्या। ने स्ट्रीः स्वादः केंब्रः ग्रीः न्द्रीन्बः त्यः ग्वववा।

क्ष्यान्त्रव्यक्षायायम् क्षेत्रक्ष्याय्यम् क्ष्याय्यक्षयाय्यक्षययः

#### 246 न्युः स केंब न्दीन्ब नक्ष्न परि इस नन्।

हे त्युर्यः त्रं सान्द्रस्त्र्वेश्वः । क्वॅन् महिमात्यावे मान्द्रस्य त्यायः त्यक्षा। द्राचे साम्येव प्रेन् प्रत्वेद मान्द्रस्य । क्वं साम्येव प्रेन् प्रत्वेद मान्द्रस्य । क्वं साम्येव प्रत्येत्व मान्द्रस्य । क्वं साम्येव प्रत्येत्व मान्द्रस्य । क्वं साम्येव प्रत्येत्व । क्वं साम्येव । क

ग्रेशयायिं म्यति म्रेव्यं प्रमुद्राय है।

यत्वात्त्रःयत्वाची वेशः यद्देवः यश्रा हे:श्चेत् खुः कॅत्यः इसः यह्वाः यश्रा यत्वाः सेत् इसः यः विवेशः सर्वेदः दश्रा श्चेत् यये सः चेंवः यवावाः यक्षः स्वा

प्रसाम ह्र्माना स्वास्त्र महास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

त्रस्तिः। वेश्वत्त्रत्रत्त्रस्तिः क्षेत्रस्यस्य क्षित्रस्यस्य क्षित्रस्यस्य विश्वत्त्रस्तिः विश्वत्त्रस्तिः विश्वत्त्रस्तिः विश्वत्त्रस्तिः विश्वत्यः विश्वतः विश्व

#### 248 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्सेन् वरि हु अ वन्त्।

बेब्रन्सन्तःक्षेत्रःब्र्न्ट्रिन्द्वरःचत्रःचुर्द्।। विद्यानःक्षेत्रःब्र्न्ट्रिन्द्वरःचत्रःचुर्द्।। वेब्रुम्सन्यःक्षेत्रःब्र्न्ट्रिन्द्वरःचत्रःचुर्द्।।

देवे देव हैं। क्रेंश में देवे देव स्था में स्था मे स्था में स्था

देःव्याग्रस्यायःविःचदेःग्वेवःर्यःचम्रव यःवै।

यार ख्री र स्वर्थ क्रुश्च स्वर्थ प्रदेश । यार ख्री र या हे बाद्य र देश स्वर्थ स्वर्थ । यार ख्री र या हे बाद्य र देश स्वर्थ स्वर्थ । दे स्वर्थ या हो श्रास्त्र स्वर्थ । दे स्वर्थ या हो स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ ।

नश्चरकायकार्क्ककारीः भुति र्विति विकास विकास क्ष्या विकास क्षया विकास क्ष्या विकास क्षया विकास क्ष्या विकास

ने'यदम्पदम्भे'द्वीरक्षेत्र। वर्षेर्यस्य द्वार्यस्य वर्षस्य महिस

मटायबुच लुच त्वा हुं। स्य वर्त्ते म्यायवश्च याम् वेश्व स्थाय स्थित्व स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य

च्या विश्वान्त्रयात्र विश्वान्त्र विश्वान्त्य विश्वान्त्र विश्वान्त्य विश्वान्त्र विश्वान्त्य विश्वान्त्र विश्वान्त्र विश्वान्त्य विश्वान्त्र विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विष्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य विश्वान्त्य व

वीत्र विश्वास्त्रस्थान्तिः सस्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रिः विश्वास्त्रस्य स्त्रस्य स्त्य

दे क्ष्रमायम्बायायायहेव वसार्मे दाया हे दावित या अर्केण हिष्य हरा

#### 250 न्तु अर्केशन्विदश्यक्ष्रि धरे द्वायम्।

वस्। स्रास्तिः भ्रुः दी स्थानः हेत् केट त्ये वायर त्युट य वर्दे र व यम् वायः वि

द्रवास्त्रवस्य स्त्रवस्य यायविद्या। निस्तरम् स्त्रुद्धायः यात्रुद्धाः यायविद्या। स्वास्त्रवस्य स्त्रुद्धाः यायविद्या। स्वास्त्रवस्य स्त्रुद्धाः यायविद्या।

## बेबायान्या देवायानुवाद्धायायवागुरा।

इस्रायराद्येवार्देवासीय्येयाया। विकायादस्यायायहृषासुदादेदायी। वादाद्यायार्वेदावस्यायासीय क्रुक्षासायायाया

## डेबाग्रह्मकार्वे॥

चक्ष्यायतः द्वायायाय्ये व्यायः विष्यायः विष्यः विष्यायः विष्यायः विष्यायः विष्यायः विष्यायः विष्यायः विष्यः विष्यायः विष्यः विष्यायः विष्यः विष्यायः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्

बेबान्ब्रस्यायायार्वेन्ययायते र्नेवाक्कान्वेरार्वेन् ग्रीकार्ब्व्यायार्केनार्वे । सर्नेराम्ब्रुवाद्या केंबाग्री र्नेडेरबादी क्रेंट्यार्वेद क्रुसार् सेन्यार्वे

# न्गारःश्चन्युः स्वीत्राश्चीत्रः प्रा

तःश्रद्रास्त्रःश्चेतात्ता विरक्षियःश्चेश्वाद्यत्ते वेदाय्त्री विरक्षियः प्रत्यात्त्रः श्चित्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत् विषयः विषयः विषयः विरक्षियः श्चेत्रः श्चेतः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः श्चेत्रः

#### 252 न्तु अर्केश न्त्रीदश वर्क्षेन् यदि हु स वन्त्।

# कुंवाविस्रायास्य स्वारं वित्रसूर्या

यदे.य.प्र्यूच.म्ब्राच.म्ब्राच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्य.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्यच.म्ब्रच.म्ब्यच.म्ब्रच.म्ब्रच.म्ब्यच.म्ब्रच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्रच.म्ब्यच.म्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच.म्ब्यच

মাধ্যমান্ত্র দের ব্রিদ্ দের ক্রিমান্তর দের ব্রিদ্যা

स्। विश्वसायश्चित्त्वात्त्रं स्थित्र स्थित्य स्थित्य

द्रिश्वस्यसःगुत्रःश्चीः यक्क्ष्यः वित्रः वित्राः ह्रमःश्चित्रः स्वेस्यसःग्यः यह्रमः यः द्रिः।। यस्यः मृत्रदः स्वेस्यसःग्यः यह्रमः यः द्रिः।। वर्षः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्व

त्वीक्षाग्रीक्षाल्च थ्यागीय प्रतृथ प्यम् ग्री प्रत्या प्रथम प्रतृत्व प्रतृत्

स्वःत्री।

क्षत्र्री।

क्षत्र्री।

क्षत्र्री।

क्षत्र्री।

क्षत्रम्यः

विवः

> श्चेत-दर्भ्यः विस्वायर्क्षद्वस्य ग्वे॥ र्वेष्यः प्रत्याविस्यः द्वायः विश्वः ग्वे॥ वाश्वसः प्रत्याविद्यः विश्वः त्वायः श्वे॥ व्यः क्ष्यः प्रद्याविस्यः स्वयः विश्वः स्वयः ग्वे॥

षुश्रासर् में मुद्रायश्राम् स्त्रार्थे।

व्यवान्दायक्षायतः वेषाययः नृता। व्यवान्द्रयायमः व्यवान्द्रः॥

# विश्व स्त्राची क्षा स्त्र स्त

वेबाम्बर्द्यायात्री वयवास्रामकायात्रीयक्रियान्द्रा सेवायान्द्रा सीर्यः न्दा स्वायबानेबार्या गुंबाश्चरान्दा मुळेराचेन्यर्थ । ब्रूब्यायस वे वर् शे मे रायर से या पर दिया से से प्रति स्वर्थ सामस्य पाय से से रा दग्-दर्रद्वेयायद्। स्रिवंशक् स्रेर्स्स्रियंशय दर्यक्रिंशयदे स्रिवंश क्रीकात्रुयायरःक्रुकायरःव्वेदायर्थे। ।योःवेदाद्वेदिःक्षायःदरःहेःक्षेदायकारदः न्वत्रक्तीः र्नेद्राचर्ष्य्यायते ख्रीरादरीयवे देश्वस्य स्थायर र्नाया सुद्रायर ब्रेन्पर्दे । तर्ने इससर्स्य वायान्य हुँ मानदे त्यसानु ही। वीं सन्दर्दिया पर्यः पश्चितः प्रकार्द्धसाक्षाः अञ्चतः प्रमान्यः त्याः त्याः त्याः विष्यावायः विष्यावायः विष्यावायः विष्यावायः र्श्वेद्राचान्त्रेत्राद्यवाप्यते नायतुत्रात्याद्येगन्याया प्राप्त्रम्याया । वास्रुयाया त्यात्री दक्षिण्याया स्रोदाया हो। सदसा सुका ग्री सात्यात्री त्युता ग्री सा ग्री या या स चर्ह्-र्र्। विदेष्रमञ्जीतमात्री श्रीतःचन्त्रे संसम्बन्धः वसमान्द्रहेता शुरदेदन्ति । सिंदाविमनाग्रीमामिद्दिन्याधमनास्त्रीन्याधमना पर्चर-पश्चर्राचमश्चर-पार्चर-पा पर्क्ष्य-प्रशुक्ष-ग्रीकार्व्यद-प्रवादिक्यः चर-वेर-त्या चन्नस्यानुन्न-बीन्न-ह्यातस्यात्यान्न-विर्-র্নী বিশ্বস্থনগুশ্বস্থান্তর্নগুনী ক্রিন্র্ন্র্র্ন্র্র্ন্র্র্ন্নিন্দ্র্যা बर्तार वेर् करा क्रिंव त्या बीका करका बीका अपने का ता ता हवा हित्र हवा 

च तथा श्रमान्त्र स्थानुष्य प्रमानुन्य हो। नृत्यान्य प्रमानमायनेन्य

यश्रवे हेश्युः वहेत् चेत् प्तः प्तः ।।

गर्ते द्रायः चेत् प्तः प्तः प्तः प्तः प्तः ।।

स्रायः चेत् प्रयः प्रदेशः चेत् प्रयः प्रदेशः ।।

स्रायः चेत् प्रयः प्रदेशः प्रदेशः प्रदेशः।

स्रायः चेत् प्रयः प्रदेशः प्रदेशः प्रदेशः।

स्रायः प्रदेशः स्त्रवः प्रदेशः प्रदेशः ।।

स्रायः प्रदेशः स्त्रवः स्त्रवः स्त्रवः स्त्रवः ।।।

स्रायः प्रदेशः स्त्रवः स्त्रवः स्त्रवः स्त्रवः स्त्रवः ।।।

**উঝামাঝুমেরার্মা** 

तर्नेर्ट्स्न्नित्त्। विक्वाप्ति वर्ष्ट्रम् विक्वाप्ति वर्ष्ट्रम् वर्ट्यम्य

त्या नेट.त्याचु नेट किया ग्री अध्याक्ष्या ग्री अधि श्री प्राचित्र के त्या प्राचित्र किया ग्री अध्याक्ष्य भी अधि क्षेत्र के त्या प्राचित्र के त्या प्राचित्र

ब्रु:च:दव:बंशव:ब्रुग्नःश्रे॥ चुट:कुव:बेशव:ब्रुग्नःश्रेःचुन्न॥ क्र्याग्रीःश्चादीः त्युरः याध्याष्ट्री। विराह्मयाश्चेयश्चारायाः

ग्री:श्रेमकान्त्री यपुःश्चेत्र्यःव्यान्त्रःश्चेश्चेत्रःयः न्दः त्रह्ष्यः यद्यःश्चेतः त्र्यःश्चेतः श्चेतः श

> श्रेअश्वात्रश्चेद्रायान्त्रे मृत्यत्र देवा स्त्रीया। स्टार्मा स्वार्थिमा

यम्ब्रेन्यर्गि स्यम्बर्ग्यस्थित्यः स्वायम्बर्धः स्वायम्बर्धः स्वायम्बर्धः स्वयम्बर्धः स्वयम्यः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्यः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्यः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्धः स्वयम्बर्धः स्वयम्वयः स्वयम्यः स्वयम्बर्यः स्वयम्बर्यः स्वयम्बर्यः स्वयम्ययः स

> बेयबाने प्रतायित र्दिन ग्रम्थायायबान क्रियं क्रिया हिस्से हिस्से येन ग्रमे विषया

स्त्रीं अटलया। स्त्रीं अटलया।

स्थान्य स्थान्य विश्वास्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

ष्रेममञ्जूदशयदे:र्देव:वेशयम:गुर्दे॥

देशक्षक्ष्यायायदेशद्ये पञ्चितायार्श्वेकात्री

विस्कृत्यस्य विद्यास्य विद्यान्य । विस्कृत्यस्य विद्यान्य विद्यान्य । त्रःकारवृद्धः त्रः रश्चरः त्रः द्रा। द्रः स्वादः स्वादः स्वादः स्वा द्रः स्वादः स्वादः स्वादः स्वा। द्रः स्वादः स्वादः स्वादः स्व।। स्वादः स्वादः स्वादः स्व।। स्वादः स्वादः स्वादः स्व।। स्वादः स्वादः स्वादः स्व।।

ध्याम्भयायम् प्रमाण्डाम्य स्वात्त्र स्वात्त्र

दे.जबाब्रै.खेटावविरायमायविमा वे.यमावेशक्षेय्द्र्यक्षियायाजबा। वे.यमावेशक्ष्यक्षेयायाजबा। वेराक्ष्याब्रेशक्ष्यक्षेयायाज्ञ्या

र्त्त्वः श्चितः स्वान्त्रः श्चरः । स्रम्राः अत्रः श्चरः श्चरः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वा श्रुट्ड्र-ट्र-वु:वुट्ड्व्य-श्रेश्वात्वस्त्रवृद्धः॥ कुत्र-श्रुश्व स्थ्य-वु:वोद्धेश-श्रेट्ड-वेश-र्य-ट्ट्डा। श्रदश-भ्रीश-वेट-श्रिय-श्रुशश-ट्वर-त्यश-तविटश-वेटः॥ ४४-ज्ञुश-श्रदश-भ्रीश पत्ति-स्थ्य-श्रीय-ट्यट-श्रीशा।

बेबार्स्यायायह्वायरमाश्रुद्रवायाधेत्रत्र्वा।

लुक् श्रुकार् क्षेत्रकार् प्रमान क्षेत्र क्

ह्र्याबाश्चार्थः विटाक्ष्याह्र्याबार्यान्याव्या। ह्र्याबाश्चार्थः विटाक्ष्याह्र्याबार्यान्याव्या।

द्रा श्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य

देवे:विद्रायम्परम्भेयमःक्षाःची:देव:वेद्रायवे:देव:यायमः। यदें:यबा <u>ब्रिद्धिं गर्डदः वरिः दें दर्दुः सूदः वरिः द्वे दिः सुक्ष क्रिं से सुक्षिः सुक्षिः देः दिः स</u>्व **ळेग**ॱन्नु:'5ृगशःस्। |तु:ग्रेक्'दा:लेश:चु:दावी शेअश:उव:इअश:ग्री:ळेग: ह्रे। गुप्तःकुपान्रेसन्दियतः इसनान्ते सेसनान्द्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्रामन्त्र क्रमान्नेमन्यत्रिम् में । । अप्तर मृद्येत्र विश्व मुप्त विश्व मान्य मान्य विषय । र्म्या-पर्म्या-अर्म्य-विश्वास्य प्रति । स्वास्य प्रति । स्वास्य । स्वास्य । स्वास्य । स्वास्य । स्वास्य । स्वास दे त्यक्ष वर्दे व प्रवे क्रिंप प्रवेश विकास प्रवेश प्रवेश प्रवेश विकास प्रवेश व त्र इस अर की के वार्म विकास के स्वापन की स्वाप यद्भैसन्दर्भवायाय। द्भैससेन्यदेश्रेससन्दर्भवाय। दर्भस्यानुसः ग्रीकेंबासदेव ब्रुसर् केंबाया बेसवा उत्राचित्र क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त पश्रमायदेव,री.विश्वसाविश्वमायम्भक्षत्रसार्श्वेराचराग्रेराताग्रीरास्त्रयः अभन्नर्वादिःस्त्रेन् । विक्तिस्त्री विक्तिस्त्रीस्त्रिस्त्रस्याः विक्रा ठन् तका निवाह में ताया होन् या महीता या ति होने हो। हार स्वाहित स्वाहि

र्स्वरावर्ष | विकार्स् मुंबर्स सुम्मान्य प्रतिकारम् । विकार्स मुंबर्म क्षित्र प्रतिकारम् । विकार्म मुंबर्म मुं

द्रेव,त्र:स्युर:सःच्व,क्वंवस्य स्या दे.प्युव,स्या स्थ्रूट:पर:प्रेट्र:पःक्षेत्र॥ वृद्रप्य स्या स्थ्रूट:पर:प्रेट्र:पःक्षेत्र॥ स्ट्रेव,त्र:संप्युर:संप्यूच,क्वंवस्य स्थ्रूच्य

स्यामुक्षःभुःतेःदुरःवेषाःसर्वरः॥ त्राचःदुरःबद्ःसर्वरःयःस्याः देःचवेत्रःवेषाःसर्वेषाःस्याःस्याः देःचवेत्रःवेषाःसर्वेषाःस्याःस्याः स्याःस्यान्यस्याः

यायात्विन्नाय्वकाः क्रियायाद्वित्त्वे। यायाः श्रीयायाः श्रीयायाः श्रीयायाः स्त्रीयायाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः स्त्रीयः स्त्रीय

> देशक्षःग्रीःदेशकाग्रीकायवेषायमःश्रवेदः॥ भूतःवेषःकाषाःख्याकाम्भवःग्रदः॥ भूतःवेषःकाषाःख्याकाम्भवःग्रदः॥ देशकाग्रीःदेशकाग्रीकायवेषायमःश्रवेदः॥ देशकाग्रीःदेशकाग्रीकायवेषायमःश्रवेदः॥

 यम् । यम् । क्रिक्षा विश्व स्था । स्था विश्व । यम् । यम्यम । यम् । यम्यम । यम् । यम्यम । यम् । यम्य

तःलाई-धुरं-चोटश्रगुरं तःचक्ट्रंटिंगुरं-तःबैटःचरःचीश्वेटशःश्रा। चीटश्चरेटः। टेबी.त.जाई-धुरं-चोटश्रगुरं-तःचचिःश्वेटःची-चोटश्चरः। चश्चे चर्मैरःचारेटः। श्वाचिरःतःजाङ्गेटःचिश्चशःस्वाःचचिःश्वेटःचीःदेजःसःरचःग्रीः तःजाई-धुरं-श्वेटःटिं-चश्चैरःचारेटः। श्वाचिश्वःतःजास्वाःस्वाःचित्राःदश्चाः श्वाचुःतःजातस्यशःस्वाःचचिःदि। स्वायःजास्वाःस्वाःचचिःदः। दिवाः दे.चखुष्वःश्व बोधुश्वःतःजाःश्वेटःस्ववःचचिःदः। श्वावश्चिश्वाःजातस्यश्चाः

अवरःविग्।यदेःद्येःयक्षृत्यःवी

ह्रे.केंस्त्रस्य स्ट्रिय्य स्ट्रिय्य स्ट्रिय्य स्ट्रिय्य स्ट्रिय स्ट्रिय्य स्ट्रिय स्

सक्तात्तरत्वीरःह्या विरक्षितःक्ष्यः श्रद्धाः मित्रः विश्वात्वात्तरः त्रितः स्त्रात्तः क्ष्यः व्यात्तरः स्त्रात्तः स्त्रा द्वे कुष सर स्वत्यया स्व विषय द्वा के वा के विषय स्व कि विषय स्व विषय स्य स्व विषय स्व विषय स्व विषय स्व विषय स्व विषय स्व विषय स्व विषय

द्येत्रःश्चेत्रः व्याप्तः व्य स्वाप्तः स्वाप्तः व्याप्तः व्य

क्ष्रम्बर्ध्वयम् व्यक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्म्य व्यवक्ष्य व्यवक्य व्यवक्ष्य व्यवक्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्ष्य व्यवक्य

नेवससन्दर्धित्वपुन्गवत्वरावहण्यायस्व पत्री

वनायितःनिविद्वेः स्टब्स्यस्यः वस्या न्यानः स्तिः निविद्वेः स्टाः सञ्चरः स्वस्या ने स्तेः ने देः स्टाः स्वायः स्वस्य न्यादः स्वत्यः स्वायः स्वस्य न्यादः स्वत्यः विश्वते स्टाः स्वतः स्वस्य

बुश्र-विर्व | नि.क्यन्त्रम् स्वीत्र-त्राव् स्वीत् । व्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । व्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यस्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यस्वान्त्य

द्युः स्वाः त्यादे के नान्या। सेस्रसास्त्र के त्यात्य से स्वान्य स्वा

बेशम्ब्रुद्रश्चर्यदेर्द्वन्द्वे स्वाद्ग्यदेर्द्वन्थेवन्य। श्रुवाद्व्यंवन्द्रेत्न्त्रीक्षः वदिवेद्वन्तुक्षयम्यम्यत्वत्वन्त्वे श्रेट्द्वन्ताः स्वाद्याव्या

#### 266 त्तु अर्केश द्वीदश वर्शेन् परि इस वन्।

र्रेथः हुः द्वेदः यः नद्रः नेद्रायः स्वादः । न्यात्रः न्याः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः

वुद्रस्त्वःश्चेश्वश्चर्ययः द्वायः वेदः स्त्रेदः ।। गुत्रः कृञ्जें रः यः याश्चश्चश्चरश्चरः वेदः ।। देश्वत्वरः यानेयाश्चर्ययः रेवाशः श्केशः स्त्रेदः ।। देश्वत्वरः स्वयः स्त्रेत्वरः यो ।।

श्चेत'यदे'य'र्स्त्य'धेत'यर्क्त्वा'त्युर्म्। यहेवा'हेत्'व्यव्यव्यंते'यक्क्षुवांव्यं विटः॥ यह्यान्त्रीट'न्यट'धुवा'केत'र्येर'य्युर्म्॥

वेश्वम्ब्युदशर्खे[| देख्यसम्बद्धिसम्बद्धी

> दर्नेन्-क्रम्थायःश्चम्यञ्च-र्स्वम्यप्यदे॥ द्वे-स्रश्चन्द्वम्याद्वन्द्वि-स्रश्चन्याद्वम्य द्वे-स्रश्चेन्-प्यस्यम्यन्त्वम्यम्य द्वे-स्रश्चेन्-द्वेश्वन्द्वेन्-प्रस्थित्॥

विश्वसामुद्धियासे वित्रसाम्य स्त्रीय त्या स्त्रीय स्त्रम्था स्त्रीय स्त्रम्था स्त्रम्था स्त्रम्था स्त्रम्था स्

दक्रवार्क्षवार्क्ष्रवार्क्षद्भावहिंद्यवाचन्ना। इ.स.सेद्राचित्रवार्क्ष्यार्क्ष्या

### बेश यर्द्र

म्कृत्य देः सःस्रेन् स्त्रेसः स्त्री। त्यस्य द्रास्त्राः द्रास्त्रेस्य स्त्रेसः स्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रेस्य देश्वेस्त्रस्य देशस्य स्त्रेस्य स्त

दब्र्.तवं.र्ज्य्यःक्ष्यं स्वीत्रः स्वरः दब्रिम्। दत्तत्रः क्ष्यः द्वः क्षेत्रः स्वरः क्षेत्रः स्वरः दब्रिम्। क्ष्यः विश्वश्रायः क्ष्यः स्वीतः शक्ष्यः तब्धिम।

बेबादबुरार्द्रा। बाबाबुआयार्द्र्याचेन्यायम्न्रायात्री।

> कॅन्सॅन्सर्दे'स'स्य'त्यावान्त्रथा। दे'सेर्'ले'मेस'स्य'वास्य'यःसा। कॅन्सेर्'यं'ले'सुद्य'य'र्ट्'।। सेर्'सेर्'यं'ले'सुद्य'य'र्ट्'।।

 268 न्तु अर्केश न्वीदश वर्शेन् वरि इस वन्।

ग्रीश्वरायामु केव र्ये र त्युर वर्षे | दे बरा|

क्रॅबःग्रीःब्रूनःयःकेषःयःवि॥ व्येन्ययःब्रीनःषःवेन्यव्या

बेशय:५८।

द्वस्यायमञ्जून्यस्य । भ्रामी-प्रमासक्षेत्रस्य स्थाप्तम् हे॥ पर्वे द्वस्य स्थाप्तम् हे॥ पर्वे द्वस्य स्थाप्तम् स्थाप्तम् हे॥

वेशःश्र्री।

सम्बन्धित्रं दिस्यम्

दर्गःशःद्रम्यःयन्त्रः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्य

# थे:वेशर्देर्गीशस्यावर्भेरावश्। शरेर्देर्दिक्षंच्वर्र्दिगा

ब्रेशनाश्चरत्रायाः वे। नुस्तुयाः गुः ह्वान्यतः क्वान्यतः क्वान्यः व्यान्यः व

## बेबाय ५८।

विश्वस्यद्द्यस्ये द्वेर्यावस्य प्यवी । विश्वस्य द्वे स्वयः विश्वस्य स्वयः स्वयः विश्वस्य स्वयः स्य

270 न्तु अर्केश न्त्रीन्स वर्षेन् वर्षे क्रम चन्त्र। लेश नासुन्स स्था। सासुन्य सुन्न नगायावादी।

> देवाबान्दःश्चुः स्यायव्यं वावबान्दः।। विषयः वाववः स्वायः श्चुः स्वायः विद्याः। विषयः वाववः स्वायः श्चुः स्वायः विद्याः। स्यायः श्चुः स्यायव्यं वाववशः न्दः।।

स्थान्य स्थान स्य

बेशय ५५

युत्रः मेत्रः सुत्रः सुत्रः द्यायः या। युत्रः मेत्रः सुत्रः सुत्रः द्यायः सुत्रः। ब्रेश्चग्रह्मःस्यास्य । स्यानुस्य स्यास्य स्यानुस्य स्थानुस्य स्थानुस्य स्थानुस्य स्थानुस्य स्थानुस्य स्थानुस्

श्रद्धः दिश्चीरत्यश्री श्रीतान्द्रत्यावातार्त्वात्यः श्रीतान्तः स्वात्यः स्व

स्त्र-त्याद्धः स्त्र-त्याद्यः स्त्र-त्याद्यः स्त्र-त्याद्धः स्त्र-त्याद्धः स्त्य

272 द्व अर्केश द्वीदश वर्शे द्वारे इस वर्शि । बेशाय द्वार

त्यूचात्त्रस्यात्रस्य स्थात्रस्य स्थात्य स्थात्रस्य स्यात्यस्य स्यात्यस्य स्थात्यस्य स्थात्यस्य स्थात्यस्य स्यात्यस्य स्यात्यस्य स्यात्यस्य स्

श्चित्रयार्थे। विद्यामध्यसम्बद्धी।

देव्यः स्वर्धः त्याप्त्यः स्वर्धः स्वरं स्वरं

विश्वामश्चरत्रायश्च नारामेश्वादिःयाम् । स्वास्थान्त्रायःयाधान्यःयाः विष्यायादेःहण्याश्चाद्याराद्यादेःयाम् । स्वास्थान्त्रायःयाधान्यःयाः इत्यद्यायः । नारामेश्वाद्याः स्वास्थान्त्रायः स्वास्थान्यःयः स्वास्थान्यः । स्वास्थान्यः स्वास्थान्यः स्वास्थान यम प्रमुख प्राधिवार्त्रे । दिःषदः।

য়ঀৄ৾ৼৡ৸৻ঀয়৻ঽৼ৻ঀঀৢঀ৻য়৻ৼঀৢৼ৻৻ ঽৼ৻ঽ৽য়ৼ৻য়৻৻য়ৼ৻ঀৼৄ৾ঽ৻৻

वेशन्य।

चतुत्रयः देदःतुः र्श्वदःचः ददः॥ चद्यः वे देदःतुः र्श्वदः वे वे दः॥ चदः व्वदः स्त्रदः वे वा स्त्रदः वे वा व्या। देवे देवे वर्षे वा स्त्रदः वि वा व्या।

देवि:इयायमःश्चेव:यावे॥ द्यदावायवे:यदेव:ह्वावायेमःयख्या। त्यवावायवे:यदेव:ह्वावायेमःयख्या। श्चॅय:द्यंव:खुराक्रेव:यदेवाःवेव:य्युरा।

बेबायन्त्रायां वे स्वयं स्वायक्षयि स्वयं स्वयं क्षित्रया हे स्वयं क्षित्रया है।

ल.चेबाम्बिश्मिक्ट्रम् विग्रवास न्द्रा।

#### 274 न्तु अ कॅस न्द्वीरस प्रसून् परि हुस प्रमृत्।

ययर.शुर.खेंब.बीब.बीय.बीय.पश्री

> २५:वेशनविश्वनीश्वरीः नवितः स्त्रीम्। भ्रानवित्तः विश्वरेशन्यरः नहिन्।।

लेखयर् नेबन्निक्षत्र। मेबन्धाः याहेनायदे यर् नेबन्दिने याहेनायदे यह स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

ने प्रवित्र प्रकृत प्राप्त वित्र तुर्दे स्था। श्री ह्रमा स्थ्रम् स्योत्र श्री स्थ्र प्राप्त दे स्थ्री। श्री मार्वे ने प्रवित्र स्थ्रस्य प्रवित्र स्थ्री। प्रमुख्य स्थ्रम् स्थ्री मार्थित स्थ्रम् स्था स्थ्रम्

देखेद्वयायमञ्जीवायावी॥ ह्मिमीयद्यायेदेखंदशयमस्युम्॥ ষ্টামন্থকর বন্ধমান ব্রীধ্ব বর্ত্ত্রিশান মিন্যা নুশ্রবর্ত্তমার্ক্ষশক্ষাশ্রীধ্ব বর্ত্ত্রিশান মিন্যা

बेशग्रहामनहार्ने॥ अन्तुगुःयायेष्ययये त्र्रीं स्वायनहायात्री

> र्शे द्वें प्यटः द्वाः देवाः गुवः व्या क्रॅबः क्रॅवः यः प्षे : व्रद्वेवः यदेः वृत्र्या। क्रवः व्रद्वें रः यः दे : यद्यरः व्यवः यदा। षः दे : वेवावः यदे : त्वें : व्यवः व्यवः व्या।

क्रे। क्र्रेंचकाग्रीत्वार्यातिविधाताल्यक्षेत्राचाल्यक्षेत्राचा विकास क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा कष्टाची क्षेत्राचा कष्टाची कष

र्कें कें ज्यहर्त्तम् देन् क्षें चन्नहा। कर्ते त्येनका चर्वः क्षें क्षें कर्दे हा।

बेशनुप्य द्

स्यत्त्वात्यत्वे त्येन्यस्य स्था। स्यान्यस्य स्थानस्य स्था। 276 द्व्य केंब द्वीदब वर्सेंद्र यदे इस वन्त्र

न्दः धुरः क्षे क्षं व्यटः द्वाः देवा। वृदः धः यदे देवः व्यक्तिः वृक्षः व्यवद्या।

देवे इसप्यरःश्चेष्यायस्य।। र्ह्सेट गढ़िश्चायद्याचित्रेस्ट्रस्य यस्य स्यूर्य।

য়য়য়ৢয়ড়য়ৠৢ৾য়ৢৢয়য়ঀৢঀয়ঀ য়য়য়ৢয়ড়য়ৠৢ৾য়ৣয়য়ঀঀৢয়য়৾ঀ

क्र्याची स्त्रीय स्त्

الـ يخالك الم

वर्षे | दिवरा|

वर्षे | देवरा|

श्चेत'पतित'गित्रभाग्रीशत्यस्यास्यिकेंबा। विपायदेःब्रिमन्त्रेकेंबाग्रीश्चेत्र॥ बेबायान्या

च्छ-पःक्रॅबःग्रीःश्चेष्व-ध्येष-द्री। इट-क्र्य-बेशबःन्यतःबट्य क्रुबःग्री। द्र-क्र्य-बेशबःन्यतःबट्य क्रुबःग्री। व्यु:पःक्रॅबःग्रीःश्चेष्यःव्याःव्याः

देखे'क्स्यायम्भ्रीद्यायस्त्री॥ यद्यस्यायस्यो स्वेद्यायस्याचीःयद्या यद्यस्यायस्यो स्वेद्यायस्याचीःयद्या। द्यस्यायस्यो स्वेद्यायस्याचीःयद्या।

अन्यस्त्रम् हे। त्रिट्रम् अन्नस्त्रम् हेर्स्य ह्या स्त्रस्त्रम् हेर्स्य ह्या स्त्रस्त्रम् हेर्स्य ह्या स्त्रस्

अन्तर्भाति। क्ष्यामित्र्यान्त्रियाम् द्वान्त्र्यान्त्रियाम् विद्याः व

गुनःहःदर्शेर्देनःसर्केणाणेर्देन॥ कुःसहनर्देनःग्रीःसर्केणाणेर्देन॥

# 278 द्व अर्केश द्वीदश वर्शेद यदि इस वर्ता

ፙ፝ጙቚፙኇዼ፝ቒጜጜዿጚ፞፟ዿ፟ጚጚ ቔ ፞ቜ

र्वेवः ॲंदबः इसः न्याः सेवः र्नेवः न्दः।। वः न्दः सेदः यदेः र्नेवः वेदः न्दः।। द्वेः सेदः दवेत्यः यः सेदः र्नेवः न्दः।। न्यनः वेः इसः यः यवेतः सेवः यवस्।।

क्रॅबःग्री:न्द्रीटबःत्यः अ:देग्-या| क्रॅब:ब्रॅट्ब:क्र्यःक्रव:ब्रेब:ब्र्रीयःयः यञ्जा| बःयञ्ज्वदे:ब्रे:अह्यव:ब्र्रीयःयः यञ्जा| बाक्रेव:य्:न्यादी:बाध्येव:व्र्री|

लूर्याश्रिक्चें मान्यम्थान्ने त्वास्तान्त्वे ने वान्ति हो त्वाक्षेत्र त्वास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्त्र विद्यास्त विद्य विद्यास्त विद्य

७व: रटामी क्रुट्रा यर्झे अयस्य सेना यदे यना कन्सा ग्री सार्टा। अर्वेट्यसम्बद्धारण द्वा यर्झे अयस्य स्वराज द्वा अपना यदे साम्द्र त्रा न्यायिः श्रामश्चराष्ठीः श्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स स्वराद्यः प्राप्तः विश्वर् के प्राप्तः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स्वराद्यः यह वा स स्वराद्यः प्राप्तः यह वा स्वराद्यः यह स

दे.ज्यः इत्राचरः श्रेः ह्र्याः प्रदेशः विश्वः व्याः श्रेः विश्वः व्याः श्रेः विश्वः व्याः विश्वः वि

च्यूट्यत्यस्य म्यूच्या स्त्री स्त्रियः स्त्री स्त्रियः स्त्री स्त्रियः स्त

द्रा लट्टत्वच्च्याच्याद्रा न्याद्रक्ष्याद्रा द्र्याद्राच्याद्रा याव्यः क्ष्रभ्राच्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यवक्षः विष्यः विष्यः

दब्रुय नवर व्रेन् ग्री स्दे दाक्ष्यायतुव दशुर नदः। ने वस्यकारुन यतुनः ग्री:व्रु:बार्डवा:५८ अनुअ:य:५८ | दे:वस्रश्चर:श्चेर:सेर्ग्ग्री:सु:ब्रेट्रय: म्बेन'न्द्र। दे'म्बेन्स य सःकेन'र्याम्नेन न्द्रदे प्यञ्च न्यां वर्षे अप्याश्चित्रयः बःसःपःन्न। देःवमुःर्केन्वीयःस्टःस्यामुद्यायसे सुःक्षःव्यविषान्न। नुदःसुयः सेस्रसः द्यादः सर्वेदः यसः वेदाः दशायञ्जायः या मुः र्येदः या मर्रेगः या रदाबदशामुबावद्धते र्झेवबाददा देववेव तुवस्थाय र्झेदादा الطَّ حِدا مَوْمَا حِدا مِنسَ حِدا عَ عَجدا عَ عَن عَ عَلَى الْجَدَادِ الْجَدَادِ الْجَدَادِ الْجَدَادِ الْجَد ब्रि:न्द्रा व्रद्यअ:न्द्रा ज्ञद्यअन् य:न्द्रा अ:वक्कुन:य:न्द्रा न्स्यु:य: न्दा चंड्रायान्दा श्रेन्याश्रस्ता चड्डायते त्य्युरान्यमानुः सेन्याः माश्चरश्चा । दे.पालेव.पाज्चर.वश्चराग्चर.। यहमा.हेव.शासंश्चरगीव.पाज्चर. वश्रमा विह्वाहेव पत्रेव र्राप्त विराम् विष्य विद्या में तालुश्री विःश्रीतृःस्यायिक्षेयात्वीयःश्री विश्वान्तःयःस्याश्रायःम्बर्धायः म्बर्सिन् दर्रः भी में स्पर्धम्य स्वाधायते क्षेत्रः स्वाधायति हो । सामञ्जयक्षेत्रः ततुःश्रर्दे जाञ्चविद्यात्रस्य स्थान्यस्य स्थान

> श्चित्रः तत्त्वश्चात्तः व्याद्यः तद्वेतः ता। श्चित्रः तत्त्वेशः स्थान्यः त्याः तद्वेतः ता।

# यावश्वते स्प्रिंदश्वश्व सुन्तः स्त्री। र्क्षश्वी सुन्तेश्वर स्त्रिंद्र स्त्रा स्त्री।

ल्यास्यस्यस्य विश्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्यस्य स्वास्य स्वास

म्बर्शक्तियाः स्वान्त्र्या।

द्वार्यने स्वान्त्र्याः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्व

सद्द्रप्रत्वे रावते तुषा के अर्थ प्राप्त प्रवे प्रवे

क्षेत्रःस्। भीश्र वायश्वात्व, स्वता. कुम् त्येत्व, स्वता स्वास्त्र श्रास्त्रेत्वात्वरः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्व प्रत्यः स्वत्यः स्

सदसातुराग्रीः र्देश-तृत्वेषाचीर्यार्देश-ग्रीःश्चा तर्व्यायरः रेषाः यरः ग्रुः वे व। अर्र्रात्म्ब्रान्द्रस्यायात्रुवान्त्रीकात्म्ब्राह्म हे। बदवानुवानीः स्वाह्मस तर्रियात्वर्षे। श्रीवर्वादिरम्भायरमेश्वरायात्ववश्राश्चरत्वा क्रेंश्राश्चेरम् र्वेच'यदे:ब्रे-र्रो |क्रिअ'यरःश्चेव'यशदे'न्चरःवे'ग्|त्रुगशक्व'ग्|वशःशुरः वस्र। इस्रायमञ्जीव परिष्णे सेसर्चिय परिष्ठिम में। । गवस्य प्रसादी रहें ५ पा तार्श्वेद्रायात्मार्थ्यायायावयायुम्यवया योः विश्वास्त्रद्रायेद्रायवयायाः ब्र्याचपुः ब्रिन्नः म् । नियम् वर्षे म्यानान्त्रे वर्षे नियम् वर्षे म्यानान्त्रे वर्षे नियम् वर्षे वर्षे वर्षे वावकाश्चिरःवका यहेवाहेवाग्ची।वस्रवाश्चर्यकर्तर्निववायास्रेरायदेः सर्द्रव पर ने बायदे खे ने बाया न्वर तर्हे र या ह्रवायदे खेर रें। वि स्नुन् पश्चवीत्रार्वेद्रायान्या वेश्वयान्या वेशववान्वेन्यान्या इत्रायरानेश ন্ত্র-মুদ্-নেইন্-নেম-গ্রুম-বৃদ্ধা প্রমধ্য-কর-গ্রমধ্য-কর্ম-यर मुेर्-पर्यः प्रमुवः यः अभिवः यः त्यः र्वाटः र वर्षे र यः वर्षे व वर्षे र वर्षे । श्रेयाचरा वे मार्वे न प्राप्त देशाया वसाय उत् श्रेया प्रम्या वेसाय <del>ডব্'রমঝডেব্'গ্রী'বার্বিব্'</del>য'রমঝডেব্'ঝি'নামট্রিব্'বরি'ঐ'-প্রীঝ'নারীঝ' तपु.सुर.हे। अटशःमुक्षःगुःक्ष्यःयद्गेःदुषाःवीकाक्ष्यःगुःश्चःतस्यस्यःयरःदेगः तर वेट्री विश्वनाश्चरश्रायाचीव व्या

#### 284 द्व अकेंब द्वीदब वर्क्ष्ट्र यदि हुस वन्।

ययो.क्यं अ.जश.च्री ज्या अ.श्री विय।। विश्वाता प्रवाश अ.श्री विय व.श्री क्ष्यं अ.श्री विय।।

डेबानु:पादी। योर्वर:पदि:सु:प प्रमासम्बन्धिद:पत्रा दे:यकार्म्ययःपदि:

वेशमाश्चरशार्से[

नेश्रावामारामीशार्क्षेत्रवे नेश्रायमातुश्राहे। नेश्रावादस्नेश्रावेतः

यम् क्री हुँ सियामालु है। हूँ सावतु हुम में विदे हुम कुर हु माम स्थान स

य्र्वीयः व्यक्ष्यायिः स्वायः स्वयः स्

चैनःत्रस्ते क्ष्यं अस्तर्भः स्ट्रा

बेशचुरः चः धेवः र्वे॥

ने सुराव महिवान बाहें ग्राचा या भीवान या लेवा

धिर-ग्री-मेश्रायशर्हेग्रशनु:ग्रा

चल्वेन्त्र्।। ब्राम्ब्रह्मचान्त्रे। ब्रिन्तुःद्वेन्यन्यमः च्यान्त्रे। स्मादेन्त्र्यान्यः ब्राम्बर्मचान्त्रे। ब्रिन्तुःद्वेन्यन्यम्

देशक'महेंद्रियेद्रामायाम्मिश्रामुद्रमहेंद्राम्द्रम्मायाद्येद्र

286 र्स अ कैंस र्वीटस पर्सेर् परि इस पन्।

चम्रमान्यस्य व्यास्त्रम् । चम्रमान्यस्य व्यास्त्रम् ।

यर.तर.श्रेर.ज.तिय.उक्ष्य.चक्रूर्॥

वेशमञ्जरमयाधेन वी नियवेन ती

कु:सदःवञ्जवन्यवेषःयवेषःयक्षःयकःग्रहः॥ यक्षःयदःविसःवविषःयवविषःयकःग्रहः॥

बुबावु:च:न्दा न्यवाबार:ज्यबागुरा

चेत्-ग्री-दे-अ-त्वाव-कृत-केना-क्रीका-य-क्रे॥ दे-क्रंकी-अद्युव-सुंग्वन-ग्रीका-यह्न्या-य-क्रे॥

**डेबाग्रह्मसम्ब**्धा

# ন্দেই ঝ্যুষ্ণ বি ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত ক্ষান্

श्रद्धश्वाच्यास्त्री यवाचात्त्वास्त्रम्यस्यात्तीः वीत्वाव्यास्त्रीः वित्वाव्यास्त्रीः विवावात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्यस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्त्रस्य स्वाव्यात्य स्वाव्यात्यः स्वाव्यात्य स्वावयात्य स्वावयः स्वावयः स्वावयः स्वावयः स्वावयः स्वावयः स्वयः स्वयः

दे.क्षेत्र.श्रंश्वायतवीवी.त्वात्त्व.त्वेश.वी.लंबार्ड्स्वीवातपुर्यंत्री

# 288 न्स् अर्केश न्दीरश मर्श्ने परि इस मन्।

# মহ'ন্ট্ৰ'ন'র্ম'র্মান্ত্র্মুম। মহান্ট্র'ন'র্ম্মুম।

खुंबाचांबीरम है। चीराक्षेत्रांश्राचारवीची तथार्त्यूरात्तर वीच्चारावां व्या नरःशुराम दे वदायो नेदान्तु दे मत्वादा मद्दे वदा सर दि दे हो। बर्ब मुक्ष ग्री क्रूंब त्यम रहन मेन त्या त्य श्रीय य। विर स्वा ग्री क्रूंब रेव से र्वेर-तु-द्वे-अ-अद्-पदि-क्र्रेद-पें-ठव्। द्वर-वी-क्व्य-पें-द्दः। वस्रअ-दवेवः दरा वक्क विवर्षेषाश्रद्भा वैद्धि द्वादा विवास केवार्थे द्वा यक्क **५८। अर्थ्यान्या छ५८। अ५८। श्वा५८। देवेश्वेट्यें५८।** *ૡ*૬૱ૡૢ૽૽૾ૺૹૢ૽૽ૼ૽૽ૼૺૹ૽૽ૣૹ૽૱ઌૢૺ૾ૡૺૹ૽ૹ૽૽ૹ૽૽૱૱૽૽૱૱૱૽૽ૢ૽ૺૹ૽૱ૺૡૢ૱ या यहेगाऱ्द्रेव.चमबाक्ट.जबायरचा वमामावर.मचबायाचा. क्किंग्यर त्योदस्य परि दें र उत्र क्रिय क्किंग्य स्थान सर्देर चर्ष्र्वात्वादेते त्रम्यावाया प्रत्याप्ति । यह विश्वाति विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्य त्रभूत्यःयः मदः मृदेः युद्रः मी : द्वे: सः श्रेदः तुः याई दः ग्रुदः सबरः द्वमः यरः सेः तश्चर्यान्, के. विपुरत्य दें वे. य. री. अ. लु मी स्थाया शीय हैं क्यू र अ. व. सी. य. सी जान्विवाद्यात्रात्र्यु मुकायम् दे त्वार्ये हे त्यावाद्या हे त्यावाद्या हे त्यावाद्या हे त्यावाद्या हे त्यावाद्य धिवार्वे। दिते:श्रुति:वर्गेदायावे। श्रुयःवति:श्रश्रःगुवःहःवत्रद्रावी:युदः ह्याग्री:विरादुरानुःगाञ्चेगाश्रायदेःयर्गेन्।याक्षातुःह्या वर्नेरायहॅन्ग्रीश्राश्चेः 四下至川

न्वेन्द्रिः सुदिन्वा यदे व्यव प्रवायक्षव या वी

विश्व महित्य। विश्व महित्यां यत्ते विश्व स्था क्षेत्र स्

> क्र्यंस्यादी:यायोदायात्रम्यात्रम्याः त्रीयः त्र्योदी:यायादी:यायायात्रम्यः विश्वाः विश्वयः स्थ्ययः द्रान्दः विश्वयः याद्रम्यः ।। विश्वयः स्थ्ययः द्रान्ययः विश्वयः याद्रम्यः ।। विश्वयः स्थ्ययः विश्वयः योद्ययः योद्यय

म्बिक्यते हे श्राह्म प्रति स्वाप्त स्व

वेशः सूर्यश्रम्

क्रेंबागुब्र-ह्रॅम्बाय-य-युद्द-सुय-५८॥ वोग्नाबन्ने:वर्गेना-य-यह्द-य-५८॥

# 290 रहा अ केंश रवीरश पर्शेर परि इस प्रारी

त्यश्रः ह्रेव यः न्दः त्यों मार्झेव त्या। श्रे तहे मुक्षः य वे स्वसः यः यवि॥

बेशनु:चःवे श्रे:यहेगश्रःयःश्रे। यू:८८। चतुर:५८। ५गे:र्श्वेट:८८। न्र्यः वेशनु:चःवेश्वेश:यदे:अ:धेव:वेश:चक्तय:तु:श्रेट:यदे:ख्वेर:श्रे:यहेगश्रःयदें॥

> त्तु ने शक्ष केंग्रिय गुरुकी सद्य दिया में केंग्रिय विश्व स्वार्थ स्वया क्ष्य स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स् स्वय विश्व स्वयः स्वया क्ष्य स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्

यान्त्रवास्यान्त्रस्थितस्य श्रीयान्त्री। त्रुवायान्तर्देवात्व्युस्य व्यान्तियानी। स्रोत्यान्तर्देवात्व्यान्तियानी। स्रोत्यानिकायान्त्रस्थित्यानी।

त्यश्चस्यक्षात्रेशक्ष्यंत्रः त्वीं दित्। द्वात्यात्ये त्वेशक्ष्येयायः स्त्री। देशक्ष्यः यक्षें यम्बद्धाः तदीः दत्यान्व॥ क्ष्यं यदिस्यायदेशक्ष्यंत्रः हत्येव॥

प्रमृत्याये स्त्री । त्रीम्माया स्याप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्

व्यायदेख्यं निवासी

त्र्र-दुक्यायःगुत्रःग्रीक्षात्रःगुत्रःगुक्षा। त्र्रि-द्रम्यायःभिक्षःस्यःम्विषायदे॥ त्र्रि-द्रम्यायःगुत्रःगुक्षा। त्र्रि-दुक्यायःगुत्रःगुक्षा।

पश्चिम्पाद्ये।

शक्तं सद्गात्म् स्त्राम् स्त्राम्यम् स्त्राम् स्त्राम्यम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम् स्त्राम

चिरःक्ष्यःक्षेत्रक्षःयःस्व व्यव्यक्षःयः स्व व्यव्यक्षः विक्षः स्व व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व्यव्यक्षः व स्व विक्षः स्व विक्षः स्व व्यव्यक्षः विक्षः स्व व्यव्यक्षः विक्षः स्व व्यव्यक्षः विक्षः स्व विक्षः स्व विक्षः स स्व विक्षः स्व विक्यः स्व विक्षः स्व वि

# 292 न्स् अर्देश न्दीन्स नर्सेन् परी इस नन्।

ब्रुवि द्वारा है विकास के स्वार्य के ब्रिविया के स्वार्थ के स्वार् षव:र्र्द्रव:ग्रेंग्रेंग्रेंद्र्रपःषेश। रत्य केष सिवा सूर र य लुखा। वच्चेवायते खुमा देद उदा वशुरा। पञ्चर प'न्र दे पहुर पर्दे अर्केश रवाकुः अदः चें चुक् या धेक्या। न्ययास्व धुनान्य विषयास्व वेत्र उत्।। श्रु.के.पर्वे .लर.शर्त्व.पर.एश्वर॥ वर्क्के सेन् प्रमान्य प्रमान श्चु-अहेंब-५८-वेट-के-च-५८-॥ *ૹ૽ૼ*૱ૹૠ૾૽ૼઽૹૻૻ૱ૹૻ૽ૠ૾૽ૼઌઌૡઌ हेट.स.लटश.स.२म.६.५क्किमी **लट.रेबी.धैरश.त.क्र्अ.ग्री.<sup>प्र</sup>श्चा** श्चेलायबार्ययाय्व अर्देषायबदावेदा। विनशानी विनस्ति से सर्वे निम् य.श्री.ग्रेथ.री.स्रुवाशासस्य तश्चीमा र्रवाशन्दरवर्ञे तार्श्ववाशनदे तश्वा गुबायबायेव द्रामुबाक्षेव प्रमा

खे'द्र'ष धे'च्चेद'घ'द्रद्र'। धेर्द्वे नेद्य'रघ'क्वेद'घॅर'द्युर्ग।

श्रीयश्रश्चियःयदुः स्थायः वर्षीय॥ रत्याः स्थाः शर्त्रश्चाः श्चीः श्चाः वर्षे॥ स्याः स्थाः स्थाः स्थाः श्चीः श्चाः स्थाः स्थाः । स्याः स्थाः स्थाः

निर्म्यवस्त्रम्देश्यित्स्यः द्याः यदेः विद्यवस्यः द्याः चीः चीतः विद्यवस्यः विद्यः चीः चीतः विद्यवस्यः विद्यः विद

विवान्ते सर्ह् नृष्टुक्षः क्रुवायमः विश्वा मेवायः व्यवः स्वायत् स्वायः स्वायः स्वायः व्यवः स्वायः स्वयः स्ययः स्वयः स

## 294 द्वु अर्केश द्वुदश वर्शेद परि इस वन्।

श्रुवःविदःद्यायमञ्जूषान्दः॥ ज्याबारमञ्जूबाद्यास्य सुवारम्य नस्य अर्थे भेष हु हुअ नुषर् ना र्र.श्रूर.झट.चो.पर्य.घर.पश्चिर॥ वर्ष्य इस्रम्थत्य रेस्राम् र्रम् ग्रेंबरप्रयाद्याच्यार्योद क्रुबरपर्दरा। वन्याक्षेत्रक्षयानुःयव्यवस्यान्दा। र्र.च्रि.य.क्ष.शक्र्या.धे.पश्चिमा क्रूबर्ट्स्यध्यः यदे मुःच वा ब्र्च-टिट्यत्त्राच्यु-टिस्विविद्याः हूर्या ज्याबायावबाद्याम् जिल्लाम् क्र.ब्रेट.बाच.स.रबा.ध.पश्चीमा। क्षेगावी पदेव पर पर सहस्रास द्वा स्व.र्रट्यश्चार्यहूर्यायश्चा श्रेदे:न्दर:र्थे:खून्यस:यदस:न्दर।। क्रदश्रायालु वे नियम्बर्धिया यदेव यदे ऋग वे अधिव यग्रेशवशा अर.ग्रेद.प्रग्राथर् विचर्गर्गरत्वीरा ह क्षेत्र द्रवीबाटा हुबा यह वी त्वशी ज्याबारा श्रीबाद हा यह वी त्वशी

क्रॅंग्रन्थन्यः स्वत्यः स्वत्य स्वत्यः स्वत्य

चित्रयःत्रवः स्ट्रेययः द्वेत्रवः त्रव्यक्षः त्रव्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः स्वत्रः त्रव्यक्षः व्यक्षः व्य त्रव्यवः व्यक्षः स्वयं व्यक्षः व्यक्षः

श्चुब-दे-चगुन-उब-अर्थव-दवेद-त्या। हे-अ-च-धे-क्ष-स्य-द्युर्ग दे-क्ष-अर्दव-व-श्चु-चठ-ब-चदे॥ शुअ-इ-स-नेक्ष-दे-दन्-दे॥

श्चेत्रास्त्रस्य स्थान्य स्थान्य स्थितः स्थान्य स्थान्य

त्रमाश्चरकात्ते दिल्यायम् । वित्रम्यम् । वित्रमाण्ये । वित्रम्य । वित्रमाण्ये । वित्र

# 296 न्तुः अर्केश न्त्रीदश वर्केन् परि हुस वन्।

स्ट बटबाकुबागुव यस बुटान्टा। र्बेचान्द्रवास खुबाचर्बन्द्रवस्यागुव।। यहेवान्द्रवास खुबाचर्बन्द्रवस्य गुव।।

दे पञ्चरःपञ्चेश परःशुर पःश्वश्रा पःश्वेदःसःगःगडेगःदगुपःश्वे॥ पःश्वेदःसःगःगड्यश्वः पञ्चेदःसःगःगडेगःदगुपःश्वे॥ पञ्चःदश्वेरःपञ्चेश

र्वे :वुर्ग्युक्गः क्रिंत्रः चक्किरः चक्षा रे :युक्तः क्रिंतः ख्वाः चक्किरः चक्किरः चक्षा रे :युक्तः क्रिंतः ख्वाः चक्किरः चक्किरः चक्षा। अळ्ळके क्रिंतः ख्वाः चक्किरः चक्किरः चक्षा। क्रिंतः चक्किरः चक्किरः चक्किरः चक्किरः चक्षा।

> हे.केर.ब्रीय.श्रर्भय.श्रायर.जु.शहर.य.केरा। क्रियोवपुर्धिक्यां श्रीयर.जु.शहर.य.केयां

रे चलेत्र क्रियाश्वस्र क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य स्वाप्त्र विद्यास्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त स्वाप्त्र स्वरुष्ट स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स

बेशतबुद रें।।

शुन्तवायते हित्रे देवा क्षेत्र स्वा क्षेत्र यदे स्वा मुक्त है वा मुकायम वे वित्र मेवा क्षेत्र स्वा मुक्त है वा

तस्रेवः यश्यन्तिः त्यत्ते द्वयः यश्चे । तस्रेवः यश्च व्यवः यश्चे व्यवः यश्ये व्यवः यश्ये व्यवः यश्ये

र्यट्यभ्रम्यन्ते गुन्तः र्र्या। श्रमः श्रीः श्राच्यः र्यायः तश्रीयः व्रशा देश्येतः स्वाक्ष्यः त्यायः तश्रीयः व्रशा स्वाक्षः श्रीयः स्वाविष्णः स्वाविष्णः

लेशनश्चरश्चित्रः स्वायः स् स्वायः स्वाय स्वायः स्वाय

नेशन्त्रम् स्वान्त्रम् त्राम्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् त्राम्यम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्

# 298 न्स अर्क्षान्वीनस मह्नेन् परि इस मन्ना

> क्रुंग्यः सद्भः मात्रकाय्यः स्टान्तः ॥ भ्रुंग्यः सद्भः स्टान्यत्वेतः भ्रुः स्वान्यः ग्रीक्षा। द्वायः सद्भः स्वान्यः भ्रुः स्वान्यः ग्रीक्षा। द्वायः स्वान्यः स्वान्य

द्यातवृत्त्त्रावःचःश्चुत्रःचःत्तः॥ पर्वत्रःक्षेत्रःव्यक्तःवःवःचःचः। पञ्चतःव्यक्षःवःवःवःवःवःवःचःतः।। व्यक्षेत्रःक्षेत्रःवःवःवःवःवःवःवः।।

चित्रः श्रेप्तर्देशशत्रः हिंग्रश्यः वि। ध्रात्त्रः स्ट्रियः क्रेशः चीत्रः स्ट्रियः क्रियः स्ट्रियः स्ट्र बेश महीदश याधित हैं।। महीशायायों सामित सेश अशक्त मी देंव सहदायी हुंवा है।

> मृत्यायम् द्रम्य स्त्रीत्य स्त्री। मृत्यायम् द्रम्य स्त्रीय स

त्र्यीयः तः यक्षेत्रः त्रपुर सर्ट् , यक्षेत्रः प्रमुक्षः स्वरः स्वर्षा।

स्वरः त्रायः त्रक्षेत्रः त्रपुर सर्ट् , यक्ष्यः स्वरः स्वर

# 300 न्तु अर्केश न्त्री दश वर्शेन् यदे हुअ वन्त्र

मिश्रमःतः वे यः दम्भनः यश्चेतः यदे दस्वेनः तम् यश्चेनः यः वे।

क्षेत्रा.श्रुट्श.स्य.तट्श.स.स.स्ट्र्री। क्षेत्रा.सञ्ज्ञा.स्य.तट्श.स.स.स्यूरी।

डेश्चनश्चरश्चि। दिन्द्रः भ्रमः यास्य मा यास्य स्थान्य स्थान्य

ने प्यतः चुतः स्थान्य स्योवः वया

ब्रीत्-विदेश्यस्याः क्षुत्रः श्रीक्षः स्वायः व्यायः विद्यातः विद्

देव.ब्र्स.ट्रे.ट्यं.यंवसत्तम्यःवीरः।। १४.रह्म.व्रंत्रःश्चेसत्तम्यःविषःग्वीरःतः।।

सरसःभिनःविदःश्चितःस्यात्त्वीर। पश्चित्रभामः प्रमानःस्यानः श्चानः स्वानःस्यानः पश्चितः स्वानःस्यानः स्वानः पश्चितः स्वानःस्यान्यः स्वानः

मुव्यस्यम् मुव्यस्य क्षित्रः विश्वस्य क्षित्रः स्त्रः स्त

म्किंशःग्रीशःचम्। कम्शः स्ट्रिस्। चम्। कम्शःशः संविद्याः स्ट्रिस्। शः संविद्याः देशः स्ट्रिस्। श्रीद्याः स्ट्रिस् स्ट्रिस्य स्ट्रिस्। श्रीद्याः स्ट्रिस्

श्चीयत्र्यः स्वाप्त्रस्याय्यः स्वाप्त्रस्याः स्वाप्त्रस्याः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्त् स्वाप्त्रस्याः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्त्रस्यः स्वाप्तः स्वापतः स्व

विन्यदे त्यम् त्यान्य स्वाप्ति

# 302 दस् सर्केश द्वीदश वर्से द पारे इस वर्दा

बु-चरु-जम्म-चम्ब्रम् चर्द्या। बु-चरु-बु-द्य-क्ष-क्ष-चर्द्याः सर्द्या। बु-चरु-बु-द्य-क्ष-क्ष-चर्द्याः सर्द्या। ब्र-ह्य-क्ष्म-चर्द्याः सर्द्या।

क्ष्याची दे दे दे दे त्या क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्ष्याची क्षयाची क्ष्याची क्षयची क्ष्याची क्ष्याची क्षयची क्षयचित्रची क्षयची क्

च्चन्नर्दः वेश्वर्यः वेद्वर्यः विद्वर्यः विद्वय

क्तुं त्वा ग्रम्थाय विषय विषय । क्रुं केंद्रे यत्वा क्रिंत्र विषय ।

वेशम्बुद्धत्यम् दिवेश्यम् अद्ग्री। वेशम्बुद्धत्यम् दिवेश्यम् अद्ग्री। वेशम्बुद्धत्यम् दिवेश्यम् अद्ग्री।

# दे'अर्वेद:वुद:ह्यःश्रेअशद्यदःय्॥ विद:हु:दे'येद:र्वेशःग्री:श्रु॥

वृत्रकृतिः साम्रोत्यते सुर्वे वाया वृत्राच्या वित्रकृति । ति स्वत्राच्या स्वर्णा वित्रकृति । ति स्वत्राच्या स्वर्णा व्याप्त स्वर्णा व्याप्त स्वर्णा व्याप्त स्वर्णा व्याप्त स्वर्णा स

श्रम्भ में स्वायाय स्वायम् स्व

चुर्।। इस्माश्चरमाने। यदे ने दे स्थान्य स्थान

यन्यं यात्रेन्यते तस्ति त्यक्षानी देव नक्ष्र्वया दी।

त्रे.चंडा में अक्टूर वेडा में जहां। ट्रे.आजेर त्यंत्र क्रूब में जहां। 304 द्व अः केंस द्वीदस वर्क्षेद्र यदे हुस वस्त्र

র্ম'ঘ'রমঝ'ড','র্'র'ম'য়৾ঀ'ঘঝ'ঀ৾'য়৾ঀ'ঘম'য়ৢৢম'ঝ'ঝমঝ'রুঝ'ঐঝ' ভূর্বি||

तयर्यायेर्यदेश्वेत्रायम् ग्रीर्देव्यम्भवायाने।

दे'य'येद'यदे'र्क्ष्य'श्चु'यय्वा। षे'मेश्चामु'यर्क्षेत्र'य्ववश्चुत्र'व्या। श्व'र्क्षेय्वयर्वेत्र'स्'हे'य्ववेद'तु॥ दे'य्यय'येयय्वयंत्र'देव'स्यय्ययर्द्द्या।

सक्ताम् अर्चार्यात्राम्य स्थान्य स्था

क्रॅराच हैन है। यह स्वा क्रिया क्रिया क्रिया हैन हैं विश्वाय क्रिया है स्वा क्रिया है स्व क्रिया क्

देश्चस्यदेश्येदःग्दःद्वाःधेव॥ श्चेवःद्वःस्वयःविस्त्रयःवर्षेदःयःस्वाया ૹૡ૽૽ૡ૽૽૱ૡ૽ૼ૱ૡ૽ૼ૱૱ ૹ૽૽ૹૡ૾ૺઌૹ૽૾ૺઌૡૡ૽ૼ૱ૹ૾૽ઌ૱૱ૹૢ૽૱૱

देशव्यास्यामुस्यस्य विद्यास्य । सुन्द्रायद्य यास्रीयव्यव्यस्य हो। विद्याद्यास्य स्थाप्त । क्षेत्राच्यास्य स्थाप्त । क्षेत्राच्यास्य स्थाप्त ।

ग्रीकाके अद्ये द्वीतात्व्यम् इसायम् न्वायान् म्यूक्त्र अर्द्धम् अरद्धम् अर्द्धम् अरद्धम् अरद्यम् अरद्धम् अरद

मश्चारायदार्क्षश्चित्रश्चात्रभ्वः हो।

मश्चार्यादे द्वारायदार्क्षश्चात्रभ्वः हो।

क्ष्मश्चार्याद्वार्यायदार्थे व्यायद्वार्याद्वार्यायस्य स्वित्रभावः स्वायः स्वयः स्वय

चरःश्रद्दंत्त्वी चैर्द्धकःस्त्रम्यद्वान्यम् अक्त्वान् मुक्तःस्त्रम् स्वर् इत्तःश्रद्दंत्त्वी चैर्द्धकःस्त्रम्यद्वान्यम् अक्त्वानी मुक्तःसक्तिःस्त्र

# 306 न्स् अर्केश न्दीनशायकून यदे हुअरमन्।

र्हेग्बागुटाह्मअयारार्ग्वयायाधीरेग्बायाया। देंद् बेराश्चरवादवादीयाधी अर्वेटायदेप्दयेवायश्चरहें॥

<u>ૢ૽ૺૡૢૻૣૣૣૣૣૣૣૣૣઌ૽ૺૡ૽ૺ૱ૢૢૻૺ૱ૹૻૢૢૢૢઌ૽ૢૺઌૡ૽</u>ૢઌૺઌૣઌ૱ઌ र्क्रेल'सेन्'हेन्'सूत्र'मी सुतायम'यह्रमायात्र। सर्क्रेमामी ह्युत्याय'केदार्ये'र्स्र्द यर सर्दर या है। वै: हुरु ता भरावते वक्क विकामञ्जूषा मार्क्ष त्था सुरा है। म्बरम्बे स्टिन्स् के स्टिन्स् वित्राम् बित्रम् वस्य वस्य वित्रम् स्टिन्स् वित्रम् चर्वाष्ठियःयःश्चेद्राक्षःतःत्रात्। र्यादवार्श्वेतःह्वविषायतेःश्चरत्राश्चेतायतेःश्चर्श्वे र्वेश्वराक्षेत्रवरे न्ये न्दा विष्यार्हेष या श्री सदय यम सेस्या स्वा की में या *वैद*-तु-क्षे-सर्द्र-ग्रुट-कॅ-कॅक्टेन्ड्स-देव-दट-समुद्र-दा-स्वव-करे-दये-दट-। ऋ वस्रकारुट्-तु-द्विय-रेट-ह्रम्-त्य-र्वेग्रव-य-द्व-द्वत्य-वस्यस्य स्रावतः स्रु-स् न्दः। श्रेमश्रक्तःवस्रश्रक्तःग्रीः इस्रायमः नृगमः यायश्चेतः यदिः हेवः सर्दनः तश्रस्यक्षेत्रम् इयायान्त्रीयायानेयात्रम्यक्ष्यात्रम् विश्वर्ते स्व मिश्चरमायद्भूव पर्वसम् हो पर्वत्व वसायारा

> याद्यत्वेषात्रम् च्रित्रः स्ट्रिक् प्रवेषः द्रद्राः । स्ट्रिक् स्थितः प्रवेषः स्ट्रिक् प्रवेषः स्ट्रिक् प्रवेषः स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्थितः प्रवेषः स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक् स्ट्रिक्

क्टबायतेन् वाशेन्यान् व्याप्तायाः वर्षेन्याः विद्याप्ताः विद्यापत्ताः विद्यापत्

द्यायः गुत्रः श्रीः मिलेरः श्रुरः यादीः स्टब्सः श्रुवः स्थाः स्थितः द्या। स्थायतेष्ठः तर्शे प्रयोग्दे त्यानः यो गुत्रः श्रीः श्रुवः द्वस्यस्य स्थायः स्थितः यो श्री। स्थायतेष्ठः तर्शे प्रयोग्दे त्यानः यो स्थायः स्

बेश-विस्थानशनस्याने या श्रद्धा हो।

श्रेयश्वतवावात्त्रः ने श्रुव्धिः सर्देवः श्रुवाः सर्द्वा।

देखार:बेदा

त्ते श्रुप्तान्यस्य स्ट्रिस्य म्यास्य श्रुप्ताः स्त्रिस्य स्तिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त्रिस्य स्त

वेशक्र्याची श्रुप्तेत हिर्देश्या सेन्या याचा याचा निर्मा हमाया से हिंगाय

# 308 न्तु अर्केश न्दीनश वर्केन् विदेश वन्त्।

क्षाक्ष्यक्षात्त्रीः भ्रुः निवाहादीः भ्राय्याये । १८१ ह्रणायः १८१ श्रूरः याये विश्वायः स्वयः विश्वायः स्वयः यये । विश्वाक्षयः स्वयः याये । स्वयः याये । स्वयः याय्यः स्वयः याये । स्वयः याय्यः स्वयः याय्यः । स्वयः याय्यः । स्व

> याः त्याः ग्रीकात्र ग्राः स्वतः द्वाः क्ष्यः त्याः स्वतः व्याः व्याः स्वतः व्याः स्वतः व्याः स्वतः व्याः स्वतः स्वतः त्यावाः वाक्यः द्वाः स्वतः द्वाः त्याः स्वतः द्वाः स्वतः स्

# कुश्राचि.य.प्रश्रा

बेबानु चरी चरातु मुळेर चहुव हैं।

यर्ने स्व तर् द्वा स्व दे स्व तर् हु या यो स्व हि स्व तर् हु या यो स्व हि स्व तर है स्

सुस्रायेन व वे इस्रायम् वेशा विन्याचेव वेशाचेन्स्यार्हेग्स्यवशा ने वे से संस्मान्य प्रमानिका है एट् वेशावे पर्हेन्यम ग्रीशा

त्र्वाचीः मुल्याचित्र स्वान्य स्वान्य

यदशक्तुश्राचेश्वर्यश्रयः विद्या। देश्वर्यः त्यश्चर्त्रः यद्यस्य स्था। देश्वर्यः त्यश्चर्यः स्थाः त्याः स्था। यद्वर्यः स्थाः स्था

केंशक्षश्रयम्य विष्यत्रे विषयः विषय

न्मॅर्ड्स प्रन्ति से से स्वा इस हेन् यादी सम्बद्धाः प्रम्

## 310 न्तु अक्तिं न्तु देश वर्षेन् वर्षे हुस वन्।

क्रेंबर्द्वस्थस्यस्यात्रे तस्यस्य स्था स्थादे त्यायस्य यत् द्रायस्य या। द्रोत्स्य यस्य यत् द्रायस्य या। क्रेंव्स्थादस्य यत् द्रायस्य या।

द्देगान्त्रयान्यान्ते श्रेम्यान्।। क्रमान्त्रयान्यान्यम्। क्रमान्त्रयान्यम्।। व्यान्त्रयान्यम्।।

दशक्षेत्रार्देश्चानःचन्द्रन्द्रा इयकारुद्दाच्चान्द्रन्द्राच्चानुष्ट्रा इयकारुद्दाच्चित्र्यम्बद्धाः इयकारुद्दाच्चित्रयम्बद्धाः इयकारुद्दाच्चा

श्चेत्रायद्भैत्यस्य स्ट्राम् क्षेत्रायद्भैत्वर्श्वस्य स्ट्राम्

> दलवाबायात्राञ्चयात्रेत्रयात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र् इत्याचीत्रत्वात्र्यात्र्वेत्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्व्यात्र्यात्र्यात्र्व्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

शर्षःक्षःविरः हुं चेश्वः वृश्वः ग्रीशः हुशः च्यां ॥ ॥
दशः श्वः वृत्तः हुं चेशः ग्रीशः वृशः च्यां । ॥
दशः श्वः वृत्तः हुं चेशः चारशः च्यः ग्रीः श्वृतः च्याः च्याः

यह्मास्यक्षेत्रयः अवश्चात्र्यः स्वा व्यायित्रित्रः द्राय्याय्याः स्वा व्यायित्रित्रः द्राय्याय्याः स्वा स्वायित्रे स्वा स्वायित्रे स्वा

योव-मी-अर्क्स्यान्त्र-स्वान्त्य-स्वान्त्र-स्वान्त्य-स्वान्त्य-स्वान्त्य-स्वान्त्र-स्वान्त्र-स्वान्त्र-स्वान्त्र-स्व

### 312 त्तु अर्केशन्विदश्य वर्श्ने पारे हुअ वन्।

व्यास्तरिः विवाद्यास्य स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त्राच्याः स्त्रीयः स्त

गुव-मुःसर्केन्।हःमुव-घवःत्यस्यक्षवःय। दयम्बन्धःयःमु स्रुचःर्वम्बःस्रेन्ऽस्यःम्हेवःयदेःमहेव॥ सर्वे-द्वःर्वेक्षःसर्वेदःसर्वेगःचक्षवःयदेःमहेव॥ सर्वे-द्वःर्वेक्षःसर्वेदःद्वःयःयःवर्गेःयदेःद्वय॥

073408